प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

तांत्रोक्त नरकेशरी शक्ति दीक्षा

पौराणिक गाथाओं की कथात्मक शैली में क्या तथ्य छुपे होते हैं अथवा क्या वे केवल विशिष्ट घटनाओं का कथात्मक विस्तार भर होती हैं, यह तो पृथक विवेचना और चिंतन की बात हैं, किंतु जैसा कि प्रारम्भ में कहा, कि प्रत्येक अवतरण स्वयं में एक संदेश भी निहित रखता है, उसी क्रम में चिंतन करने पर स्वतः ही स्पष्ट हो जाता हैं, कि **भगवान श्री विष्णु** के इस विशिष्ट अवतरण **(नृसिंह अवतरण)** का भी एक गूढ़ संदेश है, और संदेश है- **'नृ'** अर्थात् **नर** या **मनुष्य**, **'सिंह'** अर्थात् **पराक्रमी** बनने का संदेश।

वास्तव में जीवन तो उसका कहा जा सकता है, जो अपने जीवन के **लक्ष्यों** को **सिंह** की भांति **झपट** कर प्राप्त करने की **क्षमता से युक्त हो**। **ऋषियों** ने भी **पुरूष** की इसी **'सिंहवत्'** रूप में कल्पना की थी। 'सिंहवत्' बनना केवल **शौर्य प्रदर्शन** की ही एक घटना नहीं होती वरन् सिंहवत् बनना इस कारण से भी आवश्यक हैं, कि केवल इसी प्रकार का स्वरूप ग्रहण करके ही **जीवन की गति** को सुनिर्धारित किया जा सकता हैं, अन्यथा एक-एक आवश्यकता के लिए वर्षों वर्ष घिसट कर उसे प्राप्त करने में जीवन का **सारा सौन्दर्य, सारा उत्साह समाप्त** हो जाता हैं।

भगवान विष्णु ने तो एक ही **हिरण्यकश्यप** को समाप्त करने के लिए **नृसिंह स्वरूप** में, पौराणिक गाथाओं के अनुसार **अवतरण** लिया था, किंतु **मनुष्य के जीवन** में तो प्रतिदिन **नूतन राक्षस** आते रहते हैं, जो **हिरण्यकश्यप की ही भांति** अस्पष्ट होते हैं, यह अस्पष्ट ही होता है कि उनका **समापन** कैसे संभव हो, उनसे मुक्ति पाने का क्या उपाय हो सकता है? और यह भी सत्य है, कि यदि जीवन में **अभाव, तनाव, पीड़ा (शारीरिक, मानसिक अथवा दोनों), दारिद्रय** जैसे **राक्षसों** से एक-एक करके निपटने का चिंतन किया जाये, तो मनुष्य की आधी से अधिक क्षमता तो इसी विचार-विमर्श में निकल जाती है, शेष जो आधी बचती है, वह किसी भी प्रयास को सफल नहीं होने देती। साथ ही जीवन के ऐसे **राक्षसों** से तो केवल सामान्य प्रयास से ही नहीं वरन् ऐसे क्षमता युक्त प्रयास से जूझना आवश्यक होता है, जो साक्षात् **नरकेशरी** की ही क्षमता हो। तभी जीवन में कुछ ऐसा घटित हो सकता है, जिस पर **गर्वित** हुआ जा सकता है।

सामान्यतः **साधना** का क्षेत्र अत्यन्त दुष्कर प्रतीत होता है, क्योंकि **साधना जीवन की वास्तविकताओं** को यथावत् प्रस्तुतिकरण व विवेचन कर देती है। उसमें भक्ति जगत की भांति **दिवास्वप्नों** की मधुर लहर नहीं होती, किंतु अन्तोगत्वा **व्यक्ति का हित** दीक्षा से ही साधित होता है, क्योंकि दीक्षा जीवन की **कटु वास्तविकताओं** का यथावत् वर्णन करने के साथ-साथ उससे मुक्त होने का उपाय भी वर्णित करती चलती है। वस्तु स्थितियों का विवेचन इस कारणवश आवश्यक होता है, जिससे साधक के मन में एक सुस्पष्ट धारणा बन सके, कि अन्ततोगत्वा उसकी समस्या क्या हैं किस प्रकार से **मुक्ति प्राप्त** की जा सकती हैं? यहां **नृसिंहावतार** की संक्षिप्त व्याख्या केवल वर्णन-विवेचन ही नहीं, वरन् वह उपाय भी प्रस्तुत किया गया हैं, जिसके माध्यम से कोई भी **साधक** अपने जीवन को संवारता हुआ, अपने जीवन की उन **समस्याओं** पर झपट्टा मार सकता है, जो नित्य नये स्वरूप में आती रहती है। यह भी जीवन का एक **कटु सत्य** हैं, कि जब तक जीवन रहेगा तब तक ये **समस्याये** आती रहेगी। जिनके मन में सर्वोच्च बनने का भाव हिलोरे ले रहा होता है, वे अवश्य ऐसी **दीक्षा** प्राप्त कर अपने जीवन को एक **नया ओज** व **क्षमता** दे सकते है।

दीक्षा ही वह **उपाय** है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन की **विषम स्थितियों** और **समस्याओं** से निजात पा सकता है।

तांत्रोक्त नरकेशरी दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौछावर राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर राज. 9950809666 भेजें

न्यौछावर राशि Vineet Shrimali State Bank Of India UIT Branch Jodhpur

A/c No.: 40310531623 IFSC Code:SBIN0006490

नई दिल्ली E-1077 सरस्वती विहार,पीतमपुरा Mob. +91-90138-59760 / +91-87507-57042

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।

PMYV

अपनो से अपनी बात...!

सूर्य ब्रह्माण्ड की रचना से साक्षात देवता है क्योंकि हम इनके प्रत्यक्ष दर्शन करते है, सूर्य के समक्ष कई युग बीते-साथ ही सूर्य को नवग्रहों में प्रथम ग्रह माना गया है, सूर्योदय से हम अपने दिन कर्म प्रकाश का आरम्भ करते है। सूर्य की उपासना व आराधना समस्त ऋषि, मुनि ने तो बतलाई है साथ ही सूर्य का वैद्यक-चिकित्सक मे भी महत्त्व है, सूर्य के **अभाव** में हमारा जीवन मृत्यु तुल्य हो जायेगा। हमे नित्य कई **विषमताओं, रोगों** को भोगना होगा, सूर्य के बिना हमारा शारीरिक व मानसिक विकास संभव नहीं है। पोष माह इस वर्ष 20 दिसम्बर से प्रारम्भ होकर 17 जनवरी तक है, जिसमें कई साधनात्मक शिविर व दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

इन साधनात्मक कार्यक्रमों में साधकों को दस महाविद्याओं में से भुवनेश्वरी साधना, शुभ-लाभ कुबेर शक्ति साधना, विनायक चतुर्थी रिद्धि-सिद्धि शुभ लाभ साधना साथ ही विशिष्ट सूर्य तेजस्विता शक्ति साधना का आयोजन होगा, जिसे साधक गुरूदेव द्वारा निर्देशित साधना मंत्र जप, हवन सामग्री, गुटिका, जीवट व माला के माध्यम से सम्पन्न कर सकेंगे। गुरूदेव शिविर में साधकों को अपने समक्ष मंत्र जप करवाने के उपरान्त शक्तिपात की क्रिया से आत्मसात करेंगे।

इस संसार में प्रत्येक मानव की जीवन में कोई न कोई इच्छा-आवश्यकता है- चाहे वह भोजन की हो, धन की हो, प्रसिद्धि की हो, ज्ञान की हो, रूतबे की हो- इस संसार में हर समय हर व्यक्ति की कोई न कोई चाह-आवश्यकता होती है, लेकिन सभी की कामनाओं की पूर्ति नहीं होती-पूर्ण सिर्फ उन्हीं की होती है जो सद्भाव से-सद्मार्ग पर गुरू आज्ञा व गुरू द्वारा बतलाए मार्ग पर चले है। इस सूर्य के पौष माह में आप भी अपनी इच्छाओं को इन साधनाओं के द्वारा पूर्ण कर सकते है-अपने व अपने प्रियजनों की मनोकामनाओं की पूर्णता कर सकते है जिससे अपने जीवन से नकारात्मक परिस्थितियों को दूर कर जीवन को हर्षमय बना सकेंगे।

आपका अपना
विनीत श्रीमाली

उपनिषाद वाणी

विद्यातत्त्वं शैवतत्त्वं पायाछ्रीभगमालिनी।
सायुज्ये नियतां प्रज्ञां श्रीपीठं श्रीकरं मम्॥

साधक शांत भी हो सकते हैं, लेकिन शांत होना उसका ऊपरी मन होता है। अन्तर मन में अशांति छिपी रहती है। संसार को छोड़ कर भागता हुआ आदमी आपसे नहीं भाग रहा है, अपने भीतर छिपी हुई अशांति से भाग रहा है। आपसे तो इसलिये भाग रहा है कि आपसे डर लगता है कि आप कहीं भीतर की पर्त को उखाड़ न दें।

वास्तव में जिंदगी को दो हिस्सों में बांट दिया। एक को हमने चुन लिया और दूसरे को हमने चुना नहीं और वे दोनों संयुक्त हैं। जिसको हमने नहीं चुना वह जायेगा कहां? वह हमारे साथ रहेगा। फिर हमें डर लगेगा। चाहे हम लोगों के साथ हो, परिवार के साथ हो, दुकान पर हो, बाजार में हो। आपकी **भाव-दशा** में निर्भर करता है। **दु:ख-दु:ख** है, क्योंकि आप दु:ख को नहीं चाहते और सुख को चाहते हैं- इसलिये दु:ख है। दु:ख इसलिये है कि उसके विपरीत को चाहते हैं। नहीं तो क्या दु:ख है? विपरीत में ही छिपा है दु:ख। अशांति क्या है? क्योंकि आप शांति को चाहते हैं, इसलिये **अशांति** है। हमारे चुनाव में हमारा संसार है।

जो चुनाव रहित और निर्विकल्प हो जाता है, उसे **आत्मा** का दर्शन होता है। क्योंकि जो सुख-दु:ख, प्रेम, घृणा, संसार, परमात्मा को बाहर चुनाव नहीं करता, जो बाहर चुनता ही नहीं, जिसके सब चुनाव क्षीण हो जाते हैं, वह तत्काल ही अन्दर पहुँचने की क्रिया प्राप्त कर लेता है।

अपने अन्दर **सद्गुण** जो **अच्छाइयाँ** और **सद्प्रवृत्तियाँ** दिखाई दें, उन्हें निरन्तर विकसित करते रहे। जो मिले उन पर प्रसन्न होना चाहिये और उन्हें बढ़ाने के प्रयास करने चाहिये। गुणों को विकास करने में प्रयत्नशील हों तो निसंदेह ही आप **सम्मान** प्राप्त करेंगे। **गुण, कर्म, स्वभाव** में आवश्यक सुधार किये बिना प्रगति नहीं हो सकती है। **दुर्व्यवहार** का कुफल **दु:ख** और **बैचेनी** है, फिर वह चाहे अपने साथ हो या दूसरे के साथ।

जब शरीर की व्यर्थता दिखाई पड़े, शरीर का असर न होना दिखाई पड़े और शरीर केवल एक गंदगी का ढ़ेर मालूम होने लगे और जब

PMYV

शरीर से दूरी बढ़ने लगे- तभी **परमात्मा से निकटता** होनी शुरू होती है। प्रत्येक इंद्रियों का अलग-अलग काम है और अलग-अलग आयाम है। आंख देखती है, कान सुनते हैं परन्तु कान देख नहीं सकते और आंख सुन नहीं सकती है। हाथ छूते है और नाक गंध-सुगंध देती है। नाक छू नहीं सकता, हाथ गंध नहीं दे सकते। हर **इंद्रिय स्पेशलाइज्ड** है, उसका एक विशेष काम है। उसे इन सभी इंद्रियों को एकाग्र करना सीखने की क्रिया ही ध्यान में गहरे जाना है। हम शरीर के जितने निकट होते हैं परमात्मा से उतने ही दूर होते हैं। लेकिन यदि व्यक्ति शरीर से दूर होने की क्रिया प्रारम्भ करता है तो परमात्मा के उतने ही निकट होने लगता है। शरीर से जितने जोर से हम बंधे हैं, उतने ही उस **चैतन्यता** से हमारी दूरी है।

जब कोई व्यक्ति अपने **शरीर** से **विमुख** होता है तो उसे **आत्मा का अनुभव** होता है। इस शब्द को ठीक से समझ लें। जब कोई व्यक्ति अपने शरीर से विमुख होता है तो उसके आंखों में पहली दफे जो झलक आती है, वह अपनी **ज्योति** की है, आत्मा की है और जब कोई व्यक्ति सारे जगत के **ब्रह्माण्ड** शरीर से भी विमुक्त हो जाता है, तब उसे जो अनुभव होता है, वह **ब्रह्म-ज्योति** का है। आत्मा और परमात्मा में इतना ही फर्क है। **आत्मा का मतलब है, आपको छोटी सी ज्योति का अनुभव हुआ। परमात्मा का अर्थ है, जब आप महा सूर्य के समक्ष खड़े हो गये। अपने शरीर से छूट कर आत्मा का अनुभव होता है और ब्रह्माण्ड से छूट कर परमात्मा का अनुभव होता है।** पर दोनों में मात्रा का ही फर्क है। इसलिये जो आत्मा तक पहुंच गया, उसे कोई अड़चन नहीं है, उसे कोई बाधा नहीं है, वह दूसरी छलांग भी आसानी से ले सकता है।

व्यक्ति इस तरह जीता है, जैसे शरीर ही उसका सब कुछ हो! देह के साथ रहने का जो व्यक्ति का मन है, वह शरीर के संबंध में हमारी **अज्ञानता** के कारण ही है। व्यक्ति को पता ही नहीं कि शरीर क्या है। यदि शरीर को अन्दर से देखे तो चमड़ी के अन्दर जो हड्डी, मांस, मज्जा, मल, मूत्र छिपा है, यदि पूरा का पूरा दिख जाये, जिससे हमें इतना गहरा **राग (प्रेम)** बना हुआ है वह समाप्त हो जायेगा और देह की प्राप्ति का मूल मंत्र ज्ञात हो जायेगा। व्यक्ति शरीर को केवल दर्पण में देखकर जानता हैं लेकिन दर्पण में जो दिखाई देता है, वह हमारे शरीर का बाह्य आवरण है। व्यक्ति को अपने शरीर की पूरी स्थिति पता चल जायेगी तो व्यक्ति और शरीर के बीच में फासला हो जायेगा, जो जुड़ाव, लगाव बना हआ है वो खत्म हो जायेगा। तब देह की ठीक-ठीक स्थिति **मस्तिष्क** में आने लगेगी तो देह से दूरी स्वत: ही प्रारम्भ होनी शुरू हो जायेगी। जैसे किसी महल की बाहरी दीवारों को देख ले और समझे की यही महल है, उसी प्रकार व्यक्ति अपने शरीर को भी बाहर से देखता है। बाहर से जो दिखाई देता है, वह ढ़का हुआ, **आवृत रूप** है शरीर नहीं।

संसार में कोई किसी को उतना परेशान नहीं करता, जितना कि मनुष्य के अपने **दुर्गुण** और **दुर्भावनायें**। दुगुर्ण रूपी शत्रु मनुष्य के पीछे लगे रहते हैं, वे हर समय उसे बेचैन रखते हैं। सुखी जीवन की आकांक्षा सभी को होती है, पर सुखी जीवन तभी संभव हो पाता है जब हमारा दृष्टिकोण व विचारों, भावों की **त्रुटियों** को समझें और उन्हें सुधारने का प्रयत्न करें। अल्प साधन और परिस्थितियों में भी **शांति** और **संतोष** को कायम रख सकता है। **सद्गुणों के विकास** का उचित मार्ग है कि विशेष रूप से विचार किया जाये, **आध्यात्मिक ग्रंथ पढ़े, प्रवचन सुनें, अच्छे शब्दों का प्रयोग करें और अच्छा ही सोंचे** साथ ही क्रियान्वित करने की निरन्तरता रखें, जो सद्गुणों को बढ़ाने में **सहायक** हों।

अशांति हमारा स्वभाव बन गई है और **स्वाभाविक** है कि शांत होने का एक ही अर्थ है जब गंगा सागर में गिरती है, उन दोनों के बीच जो घटना घटती है, उसका नाम है शांति। जब आपकी सरिता भी सागर में गिरती है, तब जो घटना घटती है उस मिलन के क्षण में उसका नाम है **शांति**। हमारी आत्मा में कोई चीज प्रवेश नहीं करती है मन में सब चीजें प्रवेश करती हैं और जब तक हम मन को हटाने की क्रिया सिख नहीं लेते, तब तक ज्ञात नहीं होगा कि सब कुछ **आरोपित** है। मैं ही **ब्रह्म** हूं, चैतन्य हूं ये शरीर नहीं। लेकिन वातावरण के **अभावों** से ज्ञात यही रहता है कि मैं शरीर हूं, क्योंकि मन में चित्र बना हुआ है कि मैं शरीर हूं। वही चित्र आत्मा में झलकता है। मन में **काम, क्रोध, मोह, लोभ** सब है और सारे चित्र भीतर झलकते है और इतने अनंत काल से झलकते आ रहे थे, कि स्वाभाविक है यह भ्रांति हो जाने कि वह झलक नहीं है, मेरा स्वभाव है।

ध्यान रहे, शरीर तो आपका हर जन्म में मिट जाता है। लेकिन मन? मन नहीं मिटता, मन आपका एक जन्म से दूसरे जन्म में चला जाता है। जब आप मरते हैं तो शरीर छूटता है, मन नहीं छूटता। मन तो तब छूटता है, जब आप मुक्त होते हैं। केवल **समाधि** में ही **सामर्थ्य** है मन को भी मिटा देने का। इसलिये जो जानते हैं, उन्होंने समाधि को **महामृत्यु** कहा है। क्योंकि मृत्यु में केवल शरीर मरता है और समाधि में शरीर और मन दोनों मर जाते हैं और शेष रह जाता है केवल वही जो मर ही नहीं सकता, जो **अमृत** है, जिसकी कोई मृत्यु नहीं हो सकती।

आशीर्वाद के साथ
कैलाश श्रीमाली

माताजी जन्मोत्सव

**शिव प्रिये शिव प्रदे कैलाश प्रिय वल्लभे।
शिवेन्द्रादि स्तुते देवी शिवानी त्वां नमाम्यहम्।।
वन्दनीय माता जी**

HAPPY BIRTHDAY MATA JI

प्रेम, करूणा, वात्सल्य और ममता को यदि कोई स्वरूप दिया जाये, तो वह मातृत्त्व शक्तिमयी वंदनीय माता जी हैं। जो माता के रूप में जगदात्री, जगतजननी की ही प्रत्यक्ष अवतार हैं। भारतीय शास्त्रों में संसार में माँ को साक्षात् आद्या शक्ति का स्वरूप माना गया है। क्योंकि आद्या शक्ति गौरी से ही मातृत्व शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ है। वंदनीय माता जी तो साक्षात भगवती गौरी के स्वरूप में शिव रूपी परमपूज्य सद्गुरूदेव के साथ अपने शिष्य पुत्रों पर वात्सल्यमय ममता की वर्षा करती रहती हैं। जो समरूप से सभी शिष्यों के लिये प्रवाहित होता रहता है।

हे करूणेश्वरी! आपका किस रूप में वर्णन करूं, जिस मातृ शक्ति का वर्णन स्वयं त्रिदेव न कर सके, ऐसे वात्सल्यपूर्ण प्रेम के वर्णन की मुझमें सामर्थ्य कहां?

हे जगत् जननी! संसार की ज्वाला को अपने आंचल से ढ़ककर अपने पुत्रों की हर स्वरूप में रक्षा करने वाली, ममता का पाठ पढ़ाकर सेवाभाव प्रफुल्लित कर देने वाली एकमात्र मातृत्व शक्ति आप ही में समाहित है। हे माँ! प्रकृति की आदि शक्ति को समेटे हुये जिस प्रकार आप सामान्य सी गृहिणी के स्वरूप को देखकर भ्रमित होना स्वाभाविक है, पर जो शिष्य निर्मल,

श्रेष्ठ भाव से अबोध शिशु की तरह आपके पास आते हैं, वे आपके **गौरीमय** स्वरूप का दर्शन कर **धन्य** हो जाते हैं, क्योंकि आपने इसी स्वरूप में अपने सम्पूर्ण जीवन को अपने प्राणप्रिय **शिष्य, पुत्रों,** अपने **बेटों** के जीवन निर्माण के लिये जीवन का अत्यधिक क्षण **परम पूज्य सद्गुरूदेव** के विरह में व्यतीत कर दिया। हम सभी शिष्यों के जीवन की सभी **बाधाओं, दु:खों** का समाधान हो सके इसके लिये आप हमेशा शक्ति स्वरूप में **सद्गुरूदेव कैलाश जी** की सहयोगी के रूप में सदैव उपस्थित रहीं। सद्गुरूदेव जी के साहचर्य, प्रेम को त्याग कर सभी शिष्यों को उनके सानिध्य और साहचर्य प्राप्त करने का अवसर आपके **करूणामय वात्सल्य** का परिचय है।

हे सिद्धाश्रमवासिनी! आप सिद्धाश्रम के पावनतम पवित्र, निश्छल प्रेम, वहां के **सुशोभित वातावरण** को त्याग कर हम सभी शिष्य-शिष्याओं के कल्याण हेतु इस धरा पर अवतरित हुईं, यह हम सभी का सौभाग्य है कि आपका **स्नेह, प्रेम** एक बार पुन: इस जीवन में प्राप्त हुआ और हम सबकी यह इच्छा है कि आप सदैव हम पर ऐसे ही **वात्सल्यमय ममता** की वर्षा करती रहें, जिससे हमारा जीवन आपके ममतामयी प्रकाश से हमेशा के लिये **दैदीप्यमान** हो सके।

माँ! आपका **जन्मोत्सव** हम सब **शिष्यों** के लिये पूर्ण रूप में **ममत्व चेतना** से सराबोर होने का दिवस है, यही वह दिवस है, जब हम आपके चरणों में बैठकर उद्भूत रूप से अमृत करूणा का **रसपान** कर सकेगें।

हे माँ! हमारी यह अभिलाषा है कि आपके समक्ष बैठकर मातृत्व गरिमा से भरे मुखमण्डल से निर्झरित स्नेह से परिलुप्त होकर **आत्मलीन** हो जाऊं। मैं तो अब स्वयं को तुम्हें ही सौंप देना चाहता हूं, मुझे यह ज्ञात है कि मैं अत्यन्त ही **दोष युक्त, असत्य, छल, कपट,** प्रेम के मूल स्वरूप से अनभिज्ञ, आपके प्रेम के योग्य नहीं हूं, मुझ में अनेक **दोष** हैं, लेकिन यदि आप ही मुझे ठुकरा दोगी, तो इस जग में तेरे लाल को कौन सम्भालेगा? वर्तमान के वातावरण में, कई जन्मों के **पाप-दोष** के कारण और श्रेष्ठ संस्कारों के **अभाव, ईर्ष्या, द्वेष, असत्य, कपट** से मेरा **चित्त विद्ग्ध, दूषित** हो गया है, लेकिन इसके बावजूद भी आपके प्रेम, स्नेह में कोई कमी नहीं है, मैं अब इन सब विकारों से विमुक्त होना चाहता हूं। कब ऐसा होगा जब हम उस मनोदशा में पहुंच सकेंगे जो एक **नवजात शिशु** की होती है।

हे शक्ति स्वरूपा! आपके आडम्बर को देखकर मेरा मन कौतुक से भर जाता है, आपके अनेक रूप हैं, और आप प्रत्येक बार अलग ही रूप में दृश्यमान होती हैं, आपके माया से मैं भ्रमित हो जाता हूं, होना भी स्वभाविक है, मुझमे इतना सामर्थ्य भी कहां है, कि माया के आवरण को भेद सकूं। आपका वह रूप जब आप जीवन के अत्यन्त कठिन समय में **परमपूज्य सद्गुरूदेव** के साथ **शक्ति स्वरूप** में विद्यमान थीं, चारों ओर बिखराव, भटकाव का दौर चल रहा था, उस समय आपके चहरे पर तनाव साफ झलक रहा था, आपके शिष्यों को इस प्रकार भ्रमित देखकर आपकी व्याकुलता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही थी, आपकी भाव विह्वलता स्पष्ट रूप से प्रतीत हो रही थी। विधाता की इस **अग्नि परीक्षा** को आपने भली-भांति पूर्ण किया। आपने इतने विकट प्रतिकूल परिस्थिति में **संघर्ष** और **सहनशीलता** की नयी उपमा दी। आपने परमपूज्य **सद्गुरूदेव कैलाश जी** के साथ गृहस्थ जीवन और सभी कर्तव्यों का पूर्णत: से निर्वाह करते हुये निरन्तर शिविर कार्यक्रम में सभी **शिष्यों** को अपनी **सानिध्यता, प्रेम, करूणा, ममता का प्रसाद** प्रदान किया। जिसके लिये आपको अनेक दुर्गम स्थानों की यात्रा भी करनी पड़ी और अथक परिश्रम द्वारा **परमपूज्य सद्गुरूदेव** के साथ प्रत्येक शिष्य को **दृढ़ विचार, निश्चिंता** का भाव दिया। साधना सफलता के लिये आपका **मार्गदर्शन** प्राप्त कर हम सिद्धियों के अत्यन्त निकट पहुंच गये हैं, यद्यपि आपके चरणों में बैठकर अब हमें साधना सिद्धि की इच्छा ना रही। अब हमारी यह याचना है कि जीवन के शेष दिन **ममतामयी प्रेम** को आत्मसात करते हुये आपकी सेवा और सानिध्यता में ही व्यतीत करूं, आपके विशाल नेत्रों में जो अपार **करूणा का सागर** है, उसका **अंश मात्र** हमें भी प्रदान करो।

हे माँ! हम सब शिष्यों के जीवन की आप अमूल्य सम्पति हो, माँ शब्द में ही अतुल आनन्द है। आप **मातृत्व शक्ति** की स्रोत हो, जो सदा अक्षुण्ण रूप में प्रवाहित होकर रहता है, वात्सल्य की आप अत्यन्त सागर हो, प्रेम की अनन्त भण्डार हो, आपका मातृ प्रेम तो **नि:स्वार्थ,** प्रतिदिन की इच्छा से परे गंगा धारा से भी अधिक पवित्र है, हमारी **जड़ता, स्वार्थ, विकार, कुसंस्कार, कुविचार, छल, कपट, पाप-दोष,** से भी आप अपने **वात्सल्यमय करूणा, दया, स्नेह, कर्त्तव्य** पालन से विमुख नहीं होती हैं। सुख-**दु:ख, कष्ट-पीड़ा** में भी आपके हृदय का स्रोत सदैव अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित होता रहता है। अनन्य सेवा भाप पूर्ण वात्सल्य का अनन्त झरना आपके मातृ हृदय में ही है। अपने मानस पुत्र-पुत्रियों को वात्सल्यमय चेतना से ओत-प्रोत कर देने में ही आपको अनन्त संतोष, अटूट सुख मिलता है। माता रूप में आपने अनेक अत्यन्त **पीड़ादायक कष्टों** को सहन किया, कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अडिग अविचल रूप में अपने **शिष्यों के कल्याण** के लिये सदैव तत्पर रहीं है।

हे वन्दनीय माँ! यथा शक्ति आपके मातृत्व प्रेम को आपके जन्मदिवस पर व्यक्त करने का प्रयास किया है। हे माँ! आपको अर्पित करने के लिये मेरे पास सिर्फ **श्रद्धा** और **भाव** ही हैं, वो भी इस संसार जाल में **पाप-दोषों** से अशुद्ध हो गये हैं, फिर भी आखिर मैं भी आप ही के आँखों का तारा हूँ, मुझ अकिंचन के अपूर्ण भावों को स्वीकार करो जगत् जननी।

माता सीता

भगवान श्रीराम तथा **माता सीता** ने जगत को यह **ज्ञान** दिया कि किस प्रकार **पूर्ण देवत्व** को प्राप्त किया जा सकता है। उनके इस उपकार का चिंतन कर मन अत्यन्त विस्मित और कृतज्ञता से परिपूर्ण हो जाता है। वास्तव में **भगवती सीता सर्ववेदमयी, सर्वलोकमयी, मूल प्रकृति स्वरूपिणी** हैं, **इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति, साक्षात् शक्ति स्वरूपा** माता सीता ही लक्ष्मी, सर्वाश्रयमयी **'श्री शक्ति'** हैं। मानव जीवन में जिस श्री की अत्यधिक आवश्यकता होती है, जिस पर सम्पूर्ण संसार का आश्रय निर्भर है, उन्हीं जगत्माया कमला का एक अवतार **माता सीता** के रूप में हुआ। **स्कन्द पुराण** में वर्णित है कि- हे विष्णो! आप जब-जब जो-जो अवतार स्वीकार करते हैं, तब-तब भगवती कमला आपकी संगिनी के रूप में अवतरित होती हैं।

मिथिला प्रदेश में **लंकाधिपति रावण** के आश्रित निशाचरों **(राक्षसी प्रवृत्ति के लोग)** ने **यज्ञ, हवन, पूजन, तपस्या** इत्यादि में अनेक प्रकार से उत्पात मचा रखा था। ऋषि-मुनि उनके अत्याचारों से **त्रस्त** और **भयभीत** थे, वह राज्य कर के रूप में **ऋषि-मुनियों** का शोणित लेकर अपना **विनाशकारी घट** भरने लगा। इस **रक्तपूर्ण घट** के प्रभाव से लंका में घोर **दुर्भिक्ष** पड़ा, चारों ओर **त्राहि-त्राहि** मच गयी। जब रावण को इस बात का आभास हुआ, तो उसने स्वयं उस घट को सदानारी से पूर्व लाकर मिट्टी के नीचे गाड़ दिया। सहस्त्रों वर्ष बाद उसी घट के दुष्परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण **तीरभुक्ति क्षेत्र** में भी **दुर्भिक्ष** के प्रभाव से अकाल पड़ गया। इसी अकाल के निवारण के लिये **मिथिलेश महाराज जनक** ने हल चलाया और उसी हल के फाल से घट फूट गया, जिससे जगजन्नी सीता प्रकट हुई।

सीता के चरित्र के विषय में कुछ कहना समुद्र को ओस चढ़ाना मात्र है, फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है, कि ये सम्पूर्ण नारी जाति की **श्रृंगार** हैं, इनके जैसा **त्यागी, सहनशील, धैर्य, पतिव्रता धर्म** का पालन किसी ने नहीं किया। जिस प्रकार शिव की शक्ति **अन्नपूर्णा** हैं और **श्रीकृष्ण** की **शक्ति राधा,** उसी प्रकार **सीता श्रीराम** की परात्परा शक्ति हैं। सीता शक्ति हैं और **श्रीराम शक्तिमय, श्री चण्डी** में जो **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती** रूप में **असुरनाशिनी** हैं, वही रामायण में **असुरनाशिनी कालरात्रि** हैं, रावण की सभा में **हनुमान** ने कहा था-

यां सीतेत्यभिजानासि येयं तिष्टति ते गृहे।
कालरात्रिति तां विद्धि सर्वलंकाविनाशिनीम्॥

रावण! जिन्हें तुम सीता समझते हो, जो आज तुम्हारे घर में अवस्थित हैं, उनके स्वरूप से तुम परिचित नहीं हो, वे **कालरात्रि** ही सर्व लंका विनाशिनी हैं।

इस जगत् में सीता एक ही थी, हैं और रहेगी उनके जैसा रूप, गुण और लीला में दूसरा कोई नहीं हो सकता। उनका रूप **अतुलनीय** है। **शुर्पणखा रावण** को कहती है-

राम की धर्मपत्नी विशाल नेत्रों वाली, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली तथा अपने पति को अत्यन्त प्रिय है और सदा उनके अनुकूल आचरण एवं सेवा में तत्पर रहती है। उसके सुन्दर केश हैं, सुन्दर नासिका, सौन्दर्य के सभी गुणों से पूर्ण है, वह **अप्रितम सुन्दरी** है और उसका बड़ा यश है। वह इस संसार की दूसरी **लक्ष्मी** है, उसका तपाये हुये सोने के समान **वर्ण** है, सीता उसका नाम है, विदेह की वह **पुत्री** है, मैंने वैसी सुन्दर नारी पृथ्वी पर कभी नहीं देखी। **देव कन्याओं, गन्धर्विनियों, यक्ष पत्नियों** तथा **अप्सराओं** में भी कोई वैसी सुन्दरी नहीं है। उसका हृदय एक क्षण के लिये भी राम से **रिक्त** नहीं होता।

लंका वापसी के बाद जब **माता सीता** के चरित्र की अग्नि परीक्षा हुई, तो वे व्यथित होकर लक्ष्मण से कहती हैं, हे सुमित्रानन्दन! मेरे लिये चिता तैयार करो। इस **झूठे कलंक** का टीका सिर पर लगाये मैं जीवित नहीं रह सकती। वे **पति, देवताओं** और **ब्राह्मणों** को प्रणाम कर अग्नि से कहती हैं-

यदि मेरा हृदय **रघुकुल नन्दन श्रीराम** के चरणों से क्षण भर के लिये भी दूर नहीं हुआ है तो अखिल विश्व के साक्षी **अग्नि देव** आप मेरी रक्षा करें।

झूठी और **मिथ्या** अपवाद के कारण जब राम ने लक्ष्मण के द्वारा सीता का त्याग किया, तब भी सीता ने कोई कठोर शब्द का प्रयोग नहीं किया। वे रोते-रोते कहती हैं-

पतिर्हि देवता नार्याः पतिर्बन्धुः पतिर्गुरूः ।
प्राणैरपि प्रियं तस्माभ्दर्तुः कार्यं विशेषतः ॥

पत्नी के लिये उसका पति ही देवता है, पति ही बन्धु है और पति ही गुरू है। इसलिये स्वामी का कार्य पत्नी के लिये प्राणों से भी प्यारा है।

इसी प्रकार पाताल प्रवेश भूमि समाधि के समय **भगवती सीता** कहती हैं-

यदि मैंने रघुनन्दन को छोड़कर किसी परपुरूष का जीवन प्रयत्न मन से भी चिन्तन नहीं किया तो पृथ्वी देवी मुझे अपने अन्दर स्थान दें।

यदि मैं मन, वाणी और कर्म से श्रीराम का अर्चन करती हूँ तो पृथ्वी देवी मुझे अपने अन्दर अवकाश दें।

यदि मेरा यह कथन सत्य है कि मैं राम को छोड़कार किसी दूसरे को नहीं जानती तो देवी भू-धात्री मुझे अपने गर्भ में समाहित करें।

इन तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि भगवती सीता जैसी **उच्च गुणों** से युक्त, सुशील, सौन्दर्य के सभी **अलंकारों** से पूर्ण श्रेष्ठ चरित्र वाली स्त्री इस संसार में दूसरी कोई नहीं है, यह अलग तथ्य है कि राम को **सामाजिक अपवाद** के कारण लक्ष्मण के द्वारा सीता का त्याग करना पड़ा। लेकिन यह भी सत्य है कि जितना सीता राम के वियोग में दुःखी, संतप्त थी राम भी उतने ही **दुःखी** और **संतप्त** थे, फिर भी उन्हें **परिवारिक, सामाजिक** दवाब में सीता का त्याग करना पड़ा। सीता के वियोग में राम का हृदय हर क्षण तड़फता रहा। यही कारण था कि सीता के वाल्मिकी आश्रम जाने के बाद राम के चेहरे पर कभी भी प्रसन्नता का भाव ना आ पाया।

सीता सतीत्व तेज के साथ उच्चतम् चरित्र **भूर्भवः स्वः सर्वव्यापिनी चैतन्य** रूप में सभी **स्त्रियों** में व्याप्त हैं, वहीं राम सभी पुरूष में **पुरूषोत्तम चेतना, मर्यादा, आदर्श, कर्तव्य पालन, धर्म, संस्कृति, मानवीय मूल्यों** की **रक्षत्व** चेतना के रूप में विद्यमान हैं। आज मानव को **महाविनाश** की गर्त से बचने के लिये आवश्यक है, कि वे **सीता और राम** के **आदर्श** और **चरित्र** को अपना **अभिन्न अंग** बनायें, जिससे समाज में फैली पाश्चात्य **कुरीतियों** और **भ्रांतियों** का शमन हो सके। **भगवान श्रीराम** और **माता सीता** के **आदर्श, चरित्र, गुण, मर्यादा** को अपनाकर ही समाज में परिवर्तन और प्रत्येक परिवार में **सुख-समृद्धि-शांति** का प्रादुर्भाव हो सकता है। साथ ही इस समाज को एक नई दिशा दी जा सकेगी।

भगवान राम और **माता सीता** के समान जीवन निर्माण के लिये प्रत्येक **साधक-साधिका** को प्रयास करना चाहिये। क्योंकि इस जगत् माया से पार होने और साधना सिद्धि के लिये जिन गुणों की अत्यन्त आवश्यकता होती है, वे गुण इन दोनों **महाशक्तियों** में पूर्ण रूप से समाहित है, जिनके आदर्शों पर **गतिशील** होकर व्यक्ति **भौतिक** और **आध्यात्मिक पूर्णता** प्राप्त कर सकता है।

वीर वैताल सिद्धि साधना

वीर-वैताल को बाँध कर यहीं इसी **शमशान भूमि** में खड़ा करने के लिए **मंत्रों** के घोष से और चढ़ी हुई त्योरियों से, आँखों से निकलती लपटों से तो **हवन कुंड** की अग्नि भी फीकी पड़ गई... हवा में हाथ **लहराता** और **आहुति** को लेकर जिस प्रकार से अग्नि में झोंक रहा था, उससे सारी प्रकृति ही स्तब्ध हो गयी थी... कोई गिड़गिड़ाहट नहीं और ना कोई याचना का स्वर.. दमखम से भरा **पौरूष** का स्वर कि बस आज अभी और इसी क्षण **वीर वेताल** को मेरे सामने प्रत्येक्ष होना ही है, सिद्ध होना ही है और जीवन भर मेरा **गुलाम** बनकर तो रहना है ही। चौबीसों घंटे, प्रतिपल-प्रतिक्षण एक सेवक की तरह हाथ बांध कर, दृष्टि को झुकाये, भय से कांपता हुआ... बहुत हो गया मंत्र जप, बहुत कर ली तेरी याचना यदि तू वीर-वैताल है तो मैं भी एक **सिद्ध साधक** हूँ और उससे भी अधिक एक **सक्षम गुरू** का समर्थ **शिष्य** हूँ।

एक माह हो गया था मंत्र जप करते-करते, नित्य इसी श्मशान की भूमि में हड्डी के टुकड़ों और मांस के लोथड़ों के बीच में जीवन व्यतीत करते, चिता पर भोजन पकाकर खाते और नित्य रात्रि में एक घंटे किसी धधकती चिता के पास त्राटक करते हुए। मंत्र जप करने के उपरान्त अपनी उसी **साधना भूमि** पर जाकर आगे का क्रम अपनाते... झुंझला उठा **जयपाल...** या तो अब मैं नहीं या तो वीर वैताल नहीं... देखूं कितना सामर्थ्य है उसमें, क्या होगा? अधिक से अधिक यह देह ही तो नष्ट हो जायेगी, कोई बात नहीं। नई देह से फिर **साधना** करूंगा, लेकिन यूं गिड़गिडा कर ओर रो-झींक कर साधना करने का कोई अर्थ नहीं और वह भी वीर वैताल जैसी साधना जो अपने आप में पूर्ण **पौरूष साधना** है... पूर्ण पौरूष प्राप्त कर लेने की...नहीं प्राप्त करना मुझे छोटे-मोटे बिम्ब और नहीं प्राप्त करनी मुझे मामूली सी अनुभूतियां न लेनी है कोई टुच्ची सिद्धियां। साधना करनी है तो पूर्णता से करनी है। चाहे वीर वैताल की हो या भैरव की। यदि मैंने कहा और बावन **भैरव नृत्य** करने लगे तो मेरे साधक होने का अर्थ ही क्या? धिक्कार है मेरे जीवन पर और अपमान है मेरे गुरू निखिलेश्वरानंद जी का... यही सोचते हुये तीन दिन पूर्व जाकर मिला था। पूज्य **गुरूदेव** से... पूज्य गुरूदेव का वह **तेजस्वी** और **संन्यस्त स्वरूप,** जब ऐसी **साधनायें** उनके आस-पास ही उनके चरणों में बैठी रहती थीं... अब तो इस गृहस्थ जीवन में ऐसे दम-खम से भरे साधक रहे ही कहां? जो वीर-वैताल जैसे **प्रचंड़ शक्ति पुंज** को अपने वशीभूत कर सके, साधक उसको अपनी देह में उतार सके और इसी से गोपनीय हो गई यह साधना।

'व्यर्थ नहीं जाती है कोई भी **साधना...** एक-एक क्षण की साधना का हिसाब है मेरे पास। विश्वास न हो तो पूछ कर देख लें मुझसें, मैं ही तैयार कर रहा था तुझे इस साधना का अद्वितीय और सिद्ध साधक बना देने के लिए और कोई भी मंत्र जप व्यर्थ नहीं गया है। एक-एक **अणु** को चैतन्य करने की, उसे **शक्तिमान** बनाने की जब वीर वैताल की **साक्षात् सिद्धि** प्राप्त होगी तुझे, एक युग के बाद पुनः घटना घटेगी इस धरा पर। **आद्या शंकराचार्य** के बाद कोई भी **सिद्ध साधक** नहीं हो सका है भारत में इसका...। पूज्य गुरूदेव की वाणी से जयपाल के दु:खी मन में कुछ तो राहत पहुँची लेकिन अभी तीन दिन दूर थे पूर्णता प्राप्त होने में। तीन दिन अर्थात 72 घंटे और साधना में निमग्न साधक को, सिद्धि को झपट लेने के लिए आतुर साधक को तो एक-एक पल भारी होता हैं... पिंजरे में बंद सिंह जैसी दशा होती है। उसकी कि पिंजरा खुले और वह झपट ले अपने लक्ष्य को वीर वैताल हो या ब्रह्मराक्षस... साधक की **दुर्दान्त गति** के आगे ये सब भयभीत हिरण जैसे ही तो छोटे-मोटे **भक्ष्य** है।

यौवन का उन्माद और **विजय की आकांक्षा** से एक सुरूर तैर गया जयपाल की मस्ती भरी आंखों में कुछ और विद्युत सी दौड़ गई उसके **सुदृढ** और **विशाल हस्ति** के समान **भीमकाय शरीर** में... कोई बात नहीं बस तीन ही दिन और एक **अदभुत सिद्धि** मेरे हाथ होगी। शक्ति का साकार पुंज वीर वैताल मेरी मुट्ठी में बंद होगा...

राई, सरसों और पता नहीं किन-किन जड़ी-बूटियों का ढेर चारों तरफ लगा हुआ था जयपाल के, एक विचित्र सी गंध व्याप्त हो गई थी सारे वातावरण में, गंध श्मशान की या जलती हुई लाशों की या फिर **अद्‌भुत वन औषधियों की...** आज आसमान भी काला न होकर रक्तवार्णी हो गया था... यद्यपि कहने को रात का तीसरा प्रहार था, बस कुछ पल ही और कुछ आहुतियां ही शेष... दान नहीं, भिक्षा नहीं, तंत्र की एक क्रिया पूर्ण होने की घड़ी और कोई याचना नहीं, कोई प्रार्थना नहीं, वीर वैताल का प्रकट होना दासत्व स्वीकार करना ही था... मंद चलती हवा एक क्षण के लिए रूकी, ज्यों प्रकृति की ही श्वांस थम गई हो, अचानक एक ओर से आंधी का प्रचण्ड झोंका आया, एक बुगला बनकर उड़ता हुआ, अपने साथ आकाश में उड़ा ले जाने के लिए... अन्तिम पांच आहुतियां शेष, घबरा गया जयपाल!

लेकिन आत्म संयम नहीं खोया और उस विशिष्ट **रक्षामंत्र** का उच्चारण कर उछाल दिये सरसों के दाने उसी दिशा में... थम गई एक प्रचण्डता, लेकिन जाते-जाते भी उस विशाल और बूढ़े वट वृक्ष को जमीन में मटियामेट करते हुए कोलाहल सा मच गया चारों ओर सैकडों पक्षियों के साथ-साथ, वही तो आश्रय स्थली पता नहीं किन-किन भटकती आत्माओं की।

आक्रोश प्रकट हो रहा था, भले ही सूक्ष्म रूप में कि कशमशा उठा है **वीर वैताल** भी एक अनहोनी को घटित होते हुये देखकर... एक अदना सा **साधक** आज मुझे अपने वश में करने जा रहा है, लेकिन वह अदना भी कहां, जो उसे बांध लेने को उद्धत हो गया हो वह अदना भी कहां? दूर बहती नदी में छपछपाहट कुछ और तेज हो गई थी पता नहीं हवा के प्रभाव से या अघटित रही एक घटना को देखने के लिए...

अन्तिम आहुति... सारा वातावरण एक दम से कोलाहल पूर्ण हो उठा सैकड़ों प्रकार की चीखें हलचल और भगदड़, ज्यों कोई बहुत दुर्घटना हो गई हो और तेज धमाका... ऐसा कि पृथ्वी फट ही जायेगी... मन ही मन मुस्कराया जयपाल। अब इन सबसें क्या होना हैं... जो कुछ सम्पन्न करना था मुझे वह तो मैंनें कर ही दिया, अब तो बाजी मेरे हाथ में हैं। लाख भयभीत कर ले कोई भी मुझे लेकिन इन सबके स्वामी वीर वैताल को तो आज मैंने अपने वश में कर ही लिया है। भला असफल कैसे हो सकती थी मेरे गुरू की दी **अनुपम दीक्षा** और उनके द्वारा बतायी गयी यह **साधना...** और सचमुच यही क्षण था, ऐसा ही तो था, न कोई लम्बी चौड़ी आकृति, न कोई बहुत विशालकाय शरीर, एक सामान्य सा मानव देखने में प्रायः कृशकाय ताम्र वर्णी लेकिन चेहरे पर बिखरी हुई ऐसी वीभत्सता जो कि देखते ही न बने।

अत्यन्त **घृणित** और **भयास्पद** चेहरा आँखे मानों गड्ढों में धंसी जा रही हो और उस **क्रूरता** से भरी आँखों में **अग्नि** की **ज्वाला** प्रकट हो रही थी, लेकिन दोनों हाथ **अभ्यर्थना** में जुड़े हुए... एक प्रकार से अपनी **पराजय** स्वीकार करते हुये, एक ओर रखी मदिरा की बोतल उछाल दी जयपाल ने उसकी ओर साधना की **पूर्णता** और उसकी अभ्यर्थना को स्वीकार करने के लिये... तंत्र की एक ऐसी क्रिया जिसका रहस्य तो केवल **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** के पास ही सुरक्षित बचा था और जिसे उन्होंने प्राप्त किया था अपने साधक-जीवन में आद्य शंकराचार्य की आत्मा को अपने योग बल से प्रत्यक्ष कर... रोम-रोम हर्षित हो रहा था, आज मैनें एक अप्रतिम **साधना** प्रत्यक्ष कर स्वयं तो एक सिद्धि प्राप्त की ही है, एक दुर्लभ शक्ति को हस्तगत किया ही है, साथ ही आज मैंनें अपने गुरू के गौरव को भी प्रवर्द्धित किया है।

वैताल साधना मूलतः **तांत्रोक्त साधना** होने के उपरांत भी यदि इस ढंग से की जाये तो **सौम्य साधना** है। किसी भी शनिवार को यह साधना सम्पन्न कर व्यक्ति अदृश्य रूप में एक **रक्षक** प्राप्त कर लेता है कि फिर उसे जीवन में किसी प्रकार का भय रह ही नहीं जाता। **पूर्ण वैताल सिद्धि** के उपरांत **साधक** ऐसे कार्य सम्पन्न कर सकता है, जो कि उसके लिये पूर्व में **अंसभव** थे साथ ही अचरज भरे होते है, वैताल के **कंधों** पर बैठ कर हजारों मील की दूरी पलक झपकते ही पार कर लेना, भविष्य के बारे में कोई भी ज्ञान प्राप्त कर लेना या धन या भोजन की निरन्तर प्राप्ति बायें हाथ का खेल होता है। वास्तव में प्रत्येक गुरू अपने शिष्य को आंशिक रूप में ही सही, **वैताल सिद्धि** अवश्य प्रदान करते है

वैताल साधना के लिए आवश्यक है कि साधक हर हाल में वैताल दीक्षा प्राप्त कर ले क्योंकि बिना इस दीक्षा को प्राप्त किये साधक के अंदर वह **साहस** और **बल** आ ही नहीं सकता। **वैताल सौम्य** स्वरूप में ही उपस्थित होता है लेकिन उसका स्वरूप **विकराल** और **भयानक** है। इसे कमजोर दिल वाले **साधकों** और **अशक्त व्यक्तियों** को **वैताल साधना** करने से पूर्व पूज्य **गुरूदेव** की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक है।

इस प्रयोग में न तो कोई पूजा और न कोई विशेष सामग्री की आवश्यकता होती है, **तांत्रिक ग्रथों** के अनुसार इस प्रयोग के लिए तीन उपकरणों की जरूरत होती है। **1 सिद्धि प्रदायक वैताल यंत्र, 2 सिद्धिदायक वैताल माला, 3 भगवान शिव अथवा महाकाली जीवट।**

इसके अलावा **साधक** को अन्य किसी प्रकार की **सामग्री** की जरूरत नहीं होती। यह **साधना रात्रि** को सम्पन्न की जाती हैं परन्तु साधक भयभीत न हो और न विचलित हों, वे निश्चित रूप इस साधना को सम्पन्न कर सकते है।

साधक रात्रि को **10:00 बजे** के बाद स्नान कर लें और स्नान करने के बाद अन्य किसी पात्र या वस्त्र को छुये नहीं, पहले से ही धोकर सुखाई हुई **काली धोती** को पहिन कर काले आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर घर के किसी कोने में या एकांत स्थान में बैठ जाये।

फिर सामने एक **लोहे के पात्र** या **स्टील** की थाली में **वैताल यंत्र** को स्थापित कर दें जो की **मंत्र सिद्ध** एवं **प्राणश्चेतना युक्त** हो। इसके पीछे **भगवान शिव** अथवा **महाकाली जीवट** को स्थापित कर दें, फिर **साधक** हाथ जोड़ कर वैताल का ध्यान करें-

ध्यान

धूम्र-वर्णमहा कालं जटा-भारान्वितं यजेत्
त्रि-नेत्रं शिव-रूपं नीलां छन-चय-प्रभम् ।
दिगम्बरं घोर-रूपं नीलांछन-चय-प्रभम्
निर्गुणं च गुणाधारं काली-स्थानं पुनः पुनः ॥

ध्यान के उपरांत साधक **वैताल माला** से मंत्र की **21 माला** मंत्र जप सम्पन्न करे। यह मंत्र छोटा होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है और **मुण्ड माल तंत्र** में इस मंत्र की अत्यन्त प्रशंसा की गयी है। इस मंत्र को पूर्ण **चैतन्य वीर वैताल शक्तिपात दीक्षा** प्राप्त कर धारण करने से मंत्र जप के साथ-साथ गुरू की **शक्ति** भी **वैताल सिद्धि** में सहयोग करती है।

वैताल-मंत्र

॥ ॐ वैताल यच्छ यच्छ क्षं क्षीं क्षूं क्षैं क्षः
आगम आगम वं वं वं आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥

जब मंत्र जप पूर्ण होता है अथवा **मंत्र जप** सम्पन्न होते-होते **अत्यन्त सौम्य** स्वरूप में **वैताल** स्वयं हाथ जोड़ कर कमरे में प्रगट होता है। जब पहले से लाकर रखे गए **बेसन के चार लड्डूओं** का भोग वैताल को लगा दें और अपने हाथ में जो **वैताल माला** है वह उसके गले में पहना दें, ऐसा करने पर **वैताल** वचन दे देता है कि जब तुम उपरोक्त मंत्र **11 बार** उच्चारण करोंगे, तब में अदृश्य रूप में उपस्थित होऊंगा और आप जो भी आज्ञा देंगे उसे पूरा करूंगा, ऐसा कहकर वैताल माला को वहीं छोड़ कर **अदृश्य** हो जाता हैं।

दूसरे दिन साधक प्रातः काल उठकर स्नान आदि से निवृत होकर **वैताल यंत्र, वैताल माला** और वह भोग किसी मन्दिर में रख दें अथवा नदी, तालाब या कुंएं में डाल दें। महाकाली या भगवान शिव जीवट को पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

सामग्री न्यौछावर ₹460

वैताल सिद्धि शक्तिपात दीक्षा और **साधना सामग्री** संयुक्त रूप में प्राप्त करने का **न्यौछावर ₹1800**

खूब हँसिये स्वस्थ रहिये

वाकई आज के इस भागदौड़ वाले **युग** में लोगों के चेहरे से हंसी बिल्कुल ही गायब हो गई है। कोई भी किसी के साथ हंसकर बात करना गवारा नहीं समझता और अक्सर अपना चेहरा गंभीर बनाये रखता है। इस कारण ऐसे लोगों की जिंदगी में आने वाली बहार उनसे रूठ सी जाती है। जबकि हमारे देश में यह बात काफी प्राचीन समय से प्रचलित है कि **हंसी** हर व्यक्ति के लिए हर प्रकार के रोग की सबसे बेहतरीन दवा है। अगर आप हर वक्त हंसते और मुस्कुराते रहते हैं तो कोई भी **बीमारी** आसानी से आपके निकट फटक नहीं सकती।

आज देश भर में कई स्थानों पर लोग **लाफिंग ग्रुप** (हंसने वाले लोगों का समूह) बनाकर हंसी के माध्यम से अपनी जिंदगी में **इंद्रधनुषी रंग** भर रहे हैं। दरअसल जब कई लोग मिलकर एकसाथ काफी जोर-जोर से हंसते हैं तो इससे उनके अंदर एक **नई ऊर्जा** का संचार होता है। हंसने की यह क्रिया श्वास पर आधारित **योगासन प्राणायाम** से जुड़ी हुई है। इस क्रम में लोग हंसते हुए हाथ को आसमान की ओर उठाते हैं और ताली भी बजाते हैं, जिससे शरीर का रक्त प्रवाह संतुलित बना रहता है। लेकिन आम तौर पर लोगों के साथ हंसने में समस्या यह आती है कि लोग अकेले अधिक हंस नहीं पाते। इसीलिये यदि आप भी खूब हंसना चाहते हैं तो बेहतर यह होगा कि पहले आप अपने मिलने वालो का समूह बना लें। इसके बाद आप अपने दोस्तो या रिश्तेदारों के साथ मिलकर संभव हो तो रोज सुबह शोर करते हुए किसी पार्क की ओर चले जाये और वहां एकसाथ खूब हंसे। इस तरह की **हंसी चिकित्सा** आपके जीवन में काफी बहार ला सकती है।

जिंदादिली बनाये रखें

इस बात से हर कोई वाकिफ है कि तनाव के समय में हंसी का वातावरण एक सबसे अच्छा उपचार है। ऐसे कई अनुसंधान के अनुसार हंसने से दरअसल तनाव बढ़ाने वाले **हार्मोन कार्टिसोल** का स्त्राव कम होने लगता है, जबकि हंसी ऐसे प्राकृतिक किलर सेल को पैदा करने लगती है, जो **ट्यूमर** जैसी घातक बीमारी से लड़ने से शरीर की मदद करते हैं। इस अनुसंधान को **साइकोन्यूरोइम्यूनोलॉजी** का नाम दिया गया है। इसके अलवा अन्य प्रकार के शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि हंसी से रक्तचाप में भी कमी आती है, श्वास प्रक्रिया व प्रवाह में सुधार आता है हताशा समाप्त होती है। इतना ही नहीं, केवल यही एक ऐसी यौगिक क्रिया है, जिसे बिस्तर पर पड़ा अथवा व्हील चेयर का इस्तेमाल करने वाला इंसान भी कर सकता है।

आज की भागदौड़ वाली जिंदगी में हर व्यक्ति महत्वाकांक्षी हो गया है। लोगों में इसी वजह से **सेंस ऑफ ह्यूमर** की कमी होने लगी है। ऐसे मौके पर ही हंसने-हंसाने वाले लोगों का समूह काम आता है। इस क्लब में शामिल लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, अकसर मिलने की जगह कोई पार्क होती है और फिर अपने हंसने-हंसाने के खेल में शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार से हंसने वाले लोगों के समूह में हर उम्र और हर प्रकार के व्यवसाय से जुड़े लोग अपना नाम शुमार कर सकते हैं।

उत्साही और **जागरूक** बनें

इस प्रकार के व्यायाम के लिए आपका जागरूक और बहिर्मुखी होना काफी आवश्यक है। यदि आप ऐसे नहीं हैं तो खुद को इस रूप में ढालने की शुरुआत कर दीजिये। आप चाहे घर में हों या दफ्तर में जब कभी आपको ऐसा लगे की आपके आसपास के माहौल को खुशगवार बनाने के लिए हंसी-मजाक की बातें शुरू कर दें। काम के दौरान भी **तनावमुक्त** होकर बीच-बीच में थोड़ा हंसना जरूरी है। हो सके तो अच्छी और कॉमेडी फिल्में देखने की आदत भी बनाये। लेकिन हंसने वाले समूह में आप और भी अधिक खुलकर शामिल हो सकती हैं और अपनी हंसी-खुशी अधिक बेहतर तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार आप सभी के बीच एक-दूसरे से **ऊर्जा** का आदान-प्रदान होता है। यह आपके लिए अधिक कारगर है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि जब लोग ऐसे समूह में हंसी का खेल पूरा कर अलग हटते हैं, तब उनके भीतर पहले की अपेक्षा काफी अधिक बदलाव पैदा हो चुका होता है। कई लोगों ने अपने अनुभवों के बारे में बताया कि वे खुद को पहले की अपेक्षा काफी **तनावमुक्त** महसूस करते हैं क्योंकि ऐसे हंसी के सत्र से निकलने के बाद उनकी **परेशानियां, शारीरिक-मानसिक तनाव** और उनकी **चिंताये** भी काफी हद तक दूर हो चुकी होती हैं। मुस्कुराहट से उनका चेहरा दमक उठता है और आंखें चमक उठती हैं।

सकारात्मक भाव

हंसी के माध्यम से एक रिपोर्ट ऐसी मिली है जिसमें **आर्थराइटिस (गठिया)** के रोगी इस प्रक्रिया को अपनाने से एकदम स्वस्थ हो जाते हैं। इस मामले में ऐसा पाया गया कि आर्थराइटिस से पीड़ित रोगियों की **मांसपेशियों की सूजन** में हंसने से काफी कमी आ जाती है। यहां तक कि खुलकर हंसने का लाभ सीधे तौर पर **स्पांडिलाइटिस के रोगियों** में भी देखने को मिलता है।

प्राकृतिक चिकित्सा

कई चिकित्सकों ने विश्व के विभिन्न हिस्सों में बच्चों के जीवन में हंसी को पूरी तरह से भर देने का बीड़ा उठा रखा है। इस काम में सफलता पाने के लिए अनेक चिकित्सक अलग-अलग तरह की प्रणालियों को भी आजमाते हैं। चिकित्सक बच्चों को इस हंसी के खेल में इसलिये पूरी तरह से माहिर कर देना चाहते हैं क्योंकि बच्चे हंसी के माध्यम से अपनी **आधी से अधिक बीमारियां** खुद ही दूर कर लेते हैं। कुछ चिकित्सक बच्चों को हंसाने के लिए जादुई खेलों के साथ ही **गेंदों की जगलिंग, ताश के पत्तों, बैलून** आदि का सहारा भी लेते हैं। इस प्रकार के मशीन में जुटे हुये चिकित्सकों का महत्व अन्य किसी क्षेत्र के विशेषज्ञ से किसी भी मामले में कम करके नहीं आंका जा सकता है।

लाफिंग क्लबों का भविष्य

विशेषज्ञों की राय है कि ऐसे **लाफिंग क्लब** हमेशा पूरी तरह से सफल हो जाये, इस बात की कोई गारंटी नहीं हैं। यह बात पूरी तरह से इस पर निर्भर है कि उस क्लब में शामिल लोग उस क्लब की सफलता के लिये कितने गंभीर हैं। उनका कहना है कि ऐसे समुह से जुड़े रहना और उसे सफल बनाना एक कठिन कार्य है, जिसमें हर व्यक्ति को पूरी तरह से जुटाना पड़ता है। दरअसल केवल हंसना ही सब कुछ नहीं है, बल्कि सब कुछ भूलकर हंसना उससे भी अधिक कारगर है। यदि सारे लोग इस लाफिंग क्लब की गंभीरता को समझ जाये तो इसकी सफलता निश्चित है। इसके अलावा भारत में ऐसे क्लबों में मशहूर होने के पीछे एक और महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि अकसर लोग सुबह के वक्त पार्कों में टहलने के लिए निकला करते हैं। यह उन्हें ऐसे क्लबों में शामिल होने का एक अच्छा मौका प्रदान करता है। यह क्रिया उनकी रूटीन का हिस्सा बन जाती है और वे आमतौर पर हल्का-फुल्का मजाक करने के आदत डाले देते हैं। इसके अलावा इस क्रिया के साथ ही **एक्युप्रेशर** की एक खास विधि को अपनाने से लोगों की हंसी में और भी बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है। इस चिकित्सा प्रणाली में विश्वास रखने वाले कुछ चिकित्सकों ने ऐसे लाफिंग क्लबों की वीडियों कैसेट्स भी तैयार करा रखे हैं, जिन्हें वे अकसर अपने **अस्पताल** या **क्लीनिक** में टीवी पर चलाते रहते हैं। ये कैसेट्स कुछ इस तरह से तैयार किये हुए होते हैं कि इन्हें देखने पर अनायास ही लोग हंसने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इतना ही नहीं, कई जगह तो यह शोध भी चल रहा है कि आखिर हंसने से किस-किस तरह की परेशानियों का सफल इलाज संभव है।

यदि आप भी खुद को हमेशा निरोग रखना चाहते हैं तो हंसी को अपना मूलमंत्र बनाते हुये इसे अपना सबसे प्यारा साथी बना लीजिये। फिर देखिए, आपका यही साथी आपके जीवन में किस तरह से खुशियों की बहार लाता है।

सस्नेह आपकी माँ
शोभा श्रीमाली

नारी शक्ति विवेचन

प्राचीन भारत में **स्त्रियों** को महत्वपूर्ण पद प्राप्त था। वास्तव में पुरूषों की अपेक्षा उनकी श्रेष्ठ स्थिति थी। **'शक्ति'** स्त्री सूचक शब्द का तात्पर्य **'बल'** तथा **'शक्ति'** है। समस्त पुरूषोचित शक्तियां स्त्री से ही प्राप्त होती है। **साहित्यिक प्रमाण साक्षी** हैं कि **राज्यों** अथवा **कस्बों** के **विनाश** का कारण शासकों द्वारा किसी **स्त्री** को **अपमानित** करना था। उदाहरण हेतु वाल्मीकि रामायण से हमें शिक्षा प्राप्त होती है कि रावण तथा उसका सम्पूर्ण राज्य नष्ट हो गया क्योंकि उसने **सीता** का अपहरण किया था। **वेद व्यास** की रचना महाभारत कौरवों की **मृत्यु** का कारण जन साधारण में **द्रौपदी** को **अपमानित** किया जाना था।

स्त्री को **पुरूष** की **अर्धांगिनी** माना जाता है, **गौरी-शंकर, राधा-कृष्ण, सीता-राम** हमारे जीवन में आदरपूर्वक स्मरण किये जाते है। भारत को इस तथ्य का गर्व है कि हमने नारी **शक्ति** को प्रधान स्थान दिया है, **शक्ति पूजा** के महत्व को जाना है।

धार्मिक संदर्भ में, **हिन्दुओं ने स्त्रियों** को देवत्व के स्तर तक उन्नत किया है। भारत में हिन्दुत्व के बारे में एक भूल है कि यह पुरूष प्रधान समाज है तथा धर्म पर प्रभुत्व है तथा सच्चाई यह है कि वास्तव में ऐसा नहीं है। **यह वह धर्म है जो स्त्री की ताकत और बल को सूचित करता है।** **'शक्ति'** का तात्पर्य **'बल'** और **'ताकत'** पुरूष में समस्त **शक्तियों** का कारण **स्त्रियां** हैं। **त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शिव)** अपने नारी सहायक अंग के बिना **शक्ति विहीन** हैं।

त्वया उत्पन्नः सार्वभौमःसृष्टिश्च त्वया समुत्प न्नः।
रक्षितश्च त्वया सृष्टिः अन्ते त्वयि विलीयतें।।

'तुम्हारे द्वारा ही यह सार्वभौम उत्पन्न हुआ। तुम्हारे द्वारा इस सृष्टि की रचना हुई है। तुम्हारे द्वारा ही रक्षित है। अंत में तुम्हारे द्वारा ही यह विनष्ट होता है। हे देवी आप परम विदुषी हो तथा समान रूप में समझदार तथा भाव पुंज हो।'

प्राचीन समय में अन्य देशों की अपेक्षा भारत में नारियों को अधिक आदर सम्मान प्राप्त होता था तथा अन्य धर्मो के वेदों तथा साहित्य की अपेक्षा भारत के प्राचीन साहित्य एवं वेदों में उनकी उच्चतम स्थिति निर्दिष्ट की गई है। हिन्दू नारियां वैदिक काल से धन के अधिकार का आनन्द लेती रही हैं। वे सामाजिक एवं धार्मिक संस्कारों में भाग लेती रही हैं तथा कभी-कभी उसकी पहचान उनकी शिक्षा द्वारा हुई है। प्राचीन काल में भारत में नारियां कभी अकेली नहीं रही।

किसी भी रचना के क्रियान्वहन हेतु ज्ञान, बुद्धि, ताल, लय आदि समस्त आवश्यक अंग हैं। ये सभी गुण शिक्षा, संगीत व कला की देवी सरस्वती में विद्यमान हैं। सरस्वती के बिना ब्रह्मा सृष्टि का उचित कार्य नहीं कर सकते। कोई भी रक्षित क्रिया को अनेक साधनों की अवश्यकता होती है, मुख्यत: राज्यकर सम्बन्धी साधना, अत: धन की देवी लक्ष्मी-विष्णु का अति आवश्यक अंग है। शिव को विनाशकर के रूप में पार्वती द्वारा ही शक्ति व बल उद्भत होता है। पार्वती अथवा दुर्गा को शक्ति कहा जाता है। यह केवल हिन्दू परम्परा है कि जो मन की भावना सम्बन्धी सामग्री उपस्थित करती है, यहां तक कि भावनात्मक स्तर पर स्त्री व पुरूष का एक साथ कार्य करने का सिद्धान्त सार्वभौम में समानता का सूचक है। यह विचार आगे बढ़कर उत्कृष्ट अर्द्धनारीश्वर के रूप में पद धारण करता है। शिव एवं शक्ति का एक शरीर में रूप में संयोग ही अर्द्धनारीश्वर है। प्रत्येक नारी में अर्द्धशरीर बसा हुआ है जो यह निर्दिष्ट करता है कि दूसरे के बिना एक अकेला अपूर्ण है।

हिन्दुत्व में शक्ति का समस्त बल नारी में है। शक्ति स्त्री जाति का मूल बल है जो कि समस्त जीवन में प्रविष्ट है। शक्ति दिव्य स्त्रीत्व की ताकत है जो प्रत्येक वस्तु में पाई जाती है। वह देवी है अत: वास्तव में भारत में काली एक महान् देवी है।

भगवान शिव शक्ति के संग जुड़े हुये एक ही शरीर में प्रकट होते हैं। पति या पत्नी के रूप में वह दायीं तरफ तथा पत्नी बायीं तरफ है। स्पष्ट रूप से वे अर्द्धनारीश्वर के रूप में जाने जाते हैं, आधे पुरूष एवं अर्द्धनारी के रूप में भगवान का अवतार। उनमें से प्रत्येक भगवान ब्रह्मा सृष्टिकर्त्ता, विष्णु रक्षक तथा शिव विनाशक के रूप में हिन्दुओं के सब देवताओं के मन्दिर में शक्ति के साथ विद्यमान है। वह उनका नारी के रूप में दुर्गा तथा शक्ति के रूप में स्पष्ट है।

ऋग्वेद भी नारी के उच्च गौरव का आधार प्रदान करता है, 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं।

जहां नारी के सम्बन्ध में **पीड़ादायी** व्यवहार होते हैं, वह परिवार शापित निर्णय होते है और एक चमत्कार की तरह श्राप से घर पूर्ण रूप से **नष्ट** हो जाते हैं, परन्तु वे परिवार जहां वे प्रसन्न होती हैं, हमेशा सफल होते हैं। जो पुरूष अपने सुख की इच्छा करते हैं, उन्हें सदैव स्त्रियों को अवकाश तथा उत्सवों में आभूषण, वस्त्र तथा स्वादिष्ट भोजन से सम्मान प्रदान करना चाहिये।

रामायण में प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नियों को कभी भी दशरथ की चिंता में जलने के लिए नहीं कहा गया। वस्तुत: वे परिवार में पूर्ण सम्मान के साथ रही तथा राम सदैव सम्मान पूर्वक अपनी माताओं के समक्ष नत-मस्तक रहे। महाभारत में कुंती, पाण्डवों की माता सती नहीं हुई इस प्रकार रामायण, महाभारत, गीता में सती होने का कहीं कोई उल्लेख नहीं है।

जहां नारी का सम्मान होता है वहां ईश्वर की अनुकम्पा रहती है, परन्तु जहां उनका सम्मान नहीं होता, कोई पवित्र संस्कार, पुरस्कृत स्वीकार नहीं होते है।

विश्व के सम्पूर्ण **धार्मिक इतिहास** में कोई दूसरी सीता प्राप्त नहीं होगी, उसका जीवन अद्भुत था, उसकी ईश्वर के अवतार के रूप में आराधना की जाती है। भारत ही केवल ऐसा देश है जहां पर पुरूष के समान स्त्री भी अवतार लेती है, ऐसा मत प्रचलित है। महाभारत में हम सुलभ के बारे में पढ़ते हैं, महान् नारी योगिनी, जो राजा जनक के दरबार में आई तथा आश्चर्यजनक शक्तियों तथा बुद्धि का प्रदर्शन किया जो उसने योग के अभ्यास द्वारा प्राप्त किया। इससे प्रदर्शित होता है कि नारियों हेतु योग के अभ्यास की अनुमति थी।

भारतीय नारी हेतु मातृत्व सबसे महान गौरव माना जाता है तैतरय उपनिषद् शिक्षा प्रदान करता है, 'मातृदेवो भव' अपनी माता को अपने लिये ईश्वर होने दो। हिन्दू परम्परा माता तथा मातृत्व को स्वर्ग से भी उच्चतम मान्यता प्रदान करता है। महाभारत महाकाव्य में कहा गया है, 'वेदों में शिक्षित दस निपुण पुजारियों की अपेक्षा पिता को श्रेष्ठतम माना गया है। एक माता 'सम्पूर्ण विश्व अथवा ऐसे दस पिताओं से श्रेष्ठतम हैं।'

हिन्दुत्व केवल एक धर्म है जिसका लक्षण स्त्री को पुरूष के तुल्य परत आदरणीय शिव-शक्ति की परमकोटि की अर्द्धनारीश्वर के रूप में कल्पना की गई है। अपने राष्ट्र का नाम हमने मातृभूमि 'भारतमाता' तथा हमारे राष्ट्र का मूल मंत्र 'वन्दे मातरम्' है।

नृसिंह साधना

यह तो **ध्रुवसत्य** है कि जीवन केवल **रास रंग** से नहीं चल सकता, जीवन में **नवरंग** अर्थात् **दया, करूणा, मोह, ममता, वीरता, तेजस्विता, आरोग्य, बल, पराक्रम, बुद्धि** इत्यादि सभी **गुण** होने चाहिये तभी जीवन सामान्य जीवन नहीं होकर **आदर्श जीवन** बनता है, व्यक्ति की समाज में पहचान बनती है। ऐसा व्यक्ति केवल अपने **घर परिवार** के भरण-पोषण तक ही सीमित नहीं रहता अपितु वंश के लिये और समाज के लिए भी बहुत कुछ करने में समर्थ रहता है। **अपने लिये तो पशु भी जीते हैं, कीट पतंगे भी जीवन यापन करते हैं** लेकिन मनुष्य का जीवन इस भांति बिताने के लिए प्राप्त नहीं हुआ है। मनुष्य का जीवन तो बना ही इसलिये है कि वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करें और जीवन में **धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुवर्ग** से जीता हुआ हुआ परम तत्त्व को प्राप्त करे।

जिसके जीवन में **डर** है, **भय** है, **आशंका** है वह व्यक्ति अपने जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता हैं, जिसने अपने जीवन में **भय, डर** और **आशंका** को हटा दिया है वही अपना जीवन उत्तम रूप से जी सकता है। जिस प्रकार दीवाली के शुभ अवसर पर **लक्ष्मी की साधना** का विशेष महत्व है, उसी प्रकार **होली तांत्रोक्त साधनाओं** के साथ **नृसिंह साधना** सम्पन्न करने का महान **पर्व** है, जिससे यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि **वीर** व्यक्ति के लिए संसार में कुछ भी असंभव नहीं है और जिन्होंने भी **नृसिंह साधना** सम्पन्न की है उनके लिए शमशान साधनायें, वीर

साधनाये, वैताल साधनायें, महाविद्या साधनायें सम्पन्न करना अत्यन्त सरल हो जाता है क्योंकि तीव्र साधनायें करने से पहले आत्मबल का जागरण भी आवश्यक है और यह आत्मबल आता है **नृसिंह साधना** करने से अपने जीवन को **नृसिंह** बनाने से।

नृसिंह का तात्पर्य है जो नर अर्थात् मनुष्यों में भी सिंह की भांति हो, जिस प्रकार जंगल में **सिंह** बिना रोक-टोक, निर्भय और गर्व से विचरण करता है उसी प्रकार **मनुष्य** भी अपने जीवन की **बाधाओं** पर **विजय** प्राप्त करता हुआ सिंह के समान जीवन जिये जिसे किसी भी प्रकार की **आशंका, डर** और **भय** नहीं हो।

नृसिंह के रूप को समझने से पहले जो पुराणों में इनकी अवतार कथा आती है उसे समझना भी आवश्यक है, जिससे यह ज्ञान होता है कि किस प्रकार विष्णु के अवतार **नृसिंह** अपने भक्तों पर **कृपा** कर उसे पूर्णता प्रदान करते हैं।

भगवान **नृसिंह वराह अवतार** के रूप में पृथ्वी का उद्धार करने हेतु **भगवान वराह** ने **हिरण्याक्ष** का वध किया था, इससे उसके बड़े भाई **हिरण्याकश्यप** अत्यन्त दुःखी हुआ और उसने अजेय होने का संकल्प लिया, भारी तपस्या कर सारी सिद्धियां प्राप्त कर ली और **ब्रह्मा** द्वारा उसे सारे वरदान प्राप्त हुए।

जब **दैत्यराज हिरणकश्यप** तपस्या में थे तो उनकी पत्नी कयादू के गर्भ में **प्रहलाद** थे। **देवताओं** ने **दैत्यों** पर आक्रमण किया उस समय **देवर्षि नारद** ने **कयादू** को अपने आश्रम में शरण दी और असुर पत्नी कयादू और प्रहलाद को भक्ति का उपदेश दिया।

तपस्या पूर्ण होने पर **हिरण्याकश्यप** ने सारे **लोकों** पर अधिकार कर लिया। अपने भाई के वध का बदला ले लिया था और **साधना सिद्धि** द्वारा यह वरदान उसे प्राप्त था कि **उसे कोई भी मनुष्य, पशु मार नहीं सकेगा, धरती अथवा आकाश में उसका वध नहीं हो सकेगा।** इसी हिरण्याकश्यप के चतुर्थ पुत्र **प्रहलाद** को शिक्षा के लिए **आचार्य शुक्र** के पुत्र **षण्ड** और **अमर्क** के पास भेजा। इन **दोनों गुरूओं** से प्रहलाद ने धर्म, अर्थ, काम की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा पूर्ण होने पर पिता ने उससे शिक्षा के बारे में पूछा तो प्रहलाद का उत्तर था कि **श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य** और **आत्मनिवेदन**- ये **नौ भक्तिभाव** ही श्रेष्ठ हैं।

हिरण्याकश्यप ने अपने पुत्र को ही मार देना चाहा लेकिन भगवत कृपा से प्रहलाद का कुछ नहीं बिगड़ा। मंत्र बल से **कृत्या राक्षसी** उत्पन्न हुई लेकिन वह भी प्रहलाद का अंत नहीं कर सकी। हिरण्याकश्यप को आश्चर्य हुआ कि ऐसी क्या शक्ति इस बालक में है जिसके कारण से यह अमर है जबकि अमरता का वरदान तो मुझे प्राप्त है। उन्होंने अपने पुत्र प्रहलाद को पूछा। प्रहलाद ने उत्तर दिया कि मैं उस शक्ति का साधक हूँ जिसका बल समस्त चराचर जगत में है। व्यंग्य से **राक्षस** ने कहा कि क्या उस खम्ब में भी **भगवान** है? प्रहलाद ने कहा निश्चय ही। **दैत्यराज** ने खम्ब तो तोड़ा और उस खम्ब से **एक महान व्यक्ति गर्जना** के साथ प्रकट हुआ जिसका समस्त शरीर मनुष्य का था और मुंह सिंह का था। उस आकृति को देखकर दैत्य झपटे लेकिन नृसिंह रूप में उत्पन्न **भगवान विष्णु** ने सबको मार दिया और **हिरण्याकश्यप** को पकड़ लिया।

दैत्य ने कहा कि मुझे **ब्रह्मा** का वरदान है कि मैं दिवस और रात्रि में नहीं मरूंगा, **कोई देव, दैत्य, मानव, पशु** मुझे नहीं मार सकेगा। भवन में अथवा भवन के बाहर मेरी मृत्यु नहीं हो सकेगी, समस्त शस्त्र मुझ पर व्यर्थ होंगे। **भूमि, जल** और **गगन** में भी मेरा **वध** नहीं हो सकेगा।

भगवान नृसिंह ने कहा कि यह संध्याकाल है। तेरे द्वार की देहली है जो न भवन के भीतर और भवन के बाहर है, मेरे नख शस्त्र नहीं हैं और मेरी जंघा पर तू न भूमि पर है न जल पर और न ही गगन पर और इसके साथ ही अपने तीक्ष्ण नखों से उसके वक्ष को विदीर्ण कर उसका अंत कर दिया। तदोपरांत **प्रहलाद** का **राजतिलक** कर उन्हें **राजा** बनाया। प्रहलाद के कारण ही **देवताओं** और **दैत्यों** में पुनः सन्धि हुई। जगत में पुनः भक्ति, साधना, पूजा स्थापित हुई, जब जब पृथ्वी पर अन्याय बढ़ जाते हैं तो भगवान किसी न किसी रूप में प्रकट होकर उस **अन्याय** का अन्त करते हैं।

नृसिंह साधना क्यों आवश्यक?

यह साधना जीवन में **चतुर्वग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष** प्राप्ति के लिए **सर्वोत्कृष्ट साधना** मानी गई है। जीवन में वीरता का समावेश होता है और **अज्ञात भय** की आशंका पूर्ण रूप से दूर हो जाती है। जब जीवन में भय नहीं रहता है तो साधक अपनी **शक्तियों** से पूर्ण रूप से कार्य कर सकता है यह **त्रिदिवसीय साधना** होली के **तांत्रोक्त पर्व** पर साधक अवश्य ही सम्पन्न करे।

साधना विधान

विनियोग

अस्य नृसिंह मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः।
सुरासुरनमसकृत नृसिंहो देवता।
सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ ब्रह्मर्षये नमः शिरसि ॥1॥
अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ॥2॥
श्रीनृसिंहदेवतायै नमः हृदि ॥3॥
ॐवनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥4॥

करन्यासः

ॐ उग्रवीरम् अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥1॥
महाविष्णुं तर्जनीभ्यां नमः ॥2॥
ज्वलन्तं सर्वतोमुखं मध्यमाभ्यां नमः ॥3॥
नृसिंहभीषणं अनाभिकाभ्यां नमः ॥4॥
भद्रं मृत्युं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥5॥
नमाम्यहं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥6॥

हृदयादिषड्ङ्गन्यासः

ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः ॥1॥
महाविष्णु शिरसे स्वाहा ॥2॥
ज्वलन्तं सर्वतोमुखं शिखायै वषट् ॥3॥
नृसिंह भीषणं कवचाय हुं ॥4॥
भद्रं मृत्यु मृत्युं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥5॥
नमाम्यहम् अस्त्राय फट् ॥6॥

मन्त्रवर्णन्यासः

ॐ उं नमः शिरसि॥1॥
ॐ ग्रं नमः ललाटे॥2॥
ॐ वीं नमः नेत्रयोः॥3॥
ॐ रं नमः मुखे॥4॥
ॐ मं नमः दक्षिण-बाहुमूले॥5॥
ॐ हां नमः दक्षिणकूर्परे॥6॥
ॐ विं नमः दक्षिणमणिबन्धे॥7॥
ॐ ष्णुं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले॥8॥
ॐ ज्वं नमः दक्षहस्तां गंल्सग्रे॥9॥
ॐ लं नमः वामबाहुमूले॥10॥
ॐ तं नमः वामकूर्परे॥11॥
ॐ सं नमः वाममणिबन्धे॥12॥
ॐ वं नमः वामहस्ताँगुलिमूले॥13॥
ॐ तों नमः वामहस्तांगुल्यग्रे॥14॥
ॐ मुं नमः दक्षपादमूले॥15॥
ॐ खं नमः दक्षजानुनि॥16॥
ॐ नं नमः दक्षगुल्फे॥17॥
ॐ सिं नमः दक्षदांगुलिमूले॥18॥
ॐ हं नमः दक्षपादांगुल्यग्रे॥19॥
ॐ भीं नमः वामपादमूले॥20॥
ॐ षं नमः वामजानुनि॥21॥
ॐ णं नमः वामगुल्फे॥22॥
ॐ भं नमः वामपादांगुलिमूले॥23॥
ॐ द्रं नमः वामपादांगुल्यग्र॥24॥
ॐ मृं नमः कट्याम्॥25॥
ॐ त्युं नमः कुक्षौ॥26॥
ॐ मृं नमः हृदये॥27॥
ॐ त्युं नमः कण्ठे॥28॥
ॐ नं नमः वामपार्श्वे॥29॥
ॐ मां नमः वामपार्श्वे॥30॥
ॐ म्यं नमः लिङ्गे॥31॥
ॐ हं नमः ककुदि॥32॥

अर्थ ध्यानम्

माणिक्याद्रिसमप्रभं निजरूचा संत्रस्तरक्षोगणं।
जानुन्यस्तकराम्बुजं त्रिनयनं रत्नोल्लसद्भूषणम्॥
बाहुभ्यां धृतशख्ङचक्रं
निशंदंष्ट्राग्रवक्त्रोल्ल सज्ज्वालाजिह्वमुदग्रकेशनिचयं
वन्दे नृसिंह विभुम्।

यह साधना 3 दिनों की है। साधक को चाहिये की प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में लाल आसन बिछाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठें। धूप तथा घी का दीपक जलाकर **पंचपात्र** के जल से पवित्रीकरण करके 3 बार आचमन करें।

ॐ केशवाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ नारायणाय नमः

सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर गुरू पूजन करें। पहले गुरू चित्र को स्नान करायें, फिर तिलक करें, उसके बाद धूप और दीप दिखाकर गुरूचित्र को हार पहना दें तथा दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें।

गुरूर्ब्रह्मा गुरू र्विष्णुः गुरू र्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै गुरवे नमः।

इसके बाद सामने ताम्र पात्र पर कुकुंम या केशर से षट्कोण बनाकर उस पर 'प्राणप्रतिष्ठित नृसिंह यंत्र' को स्थापित करें। साधना काल में घी का दीपक लगाकर जलते रहना चाहिये। पहले यंत्र को शुद्ध जल से स्नान कराये।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरि स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्॥

इसके बाद **यंत्र** को चारों दिशाओं में चार तिलक लगाये।

श्री खण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाड्यं सुमनोहरं।

थ्वलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

अक्षतान, पुष्पमालां, धूपं दीपं समर्पयामि नमः।

इस संक्षिप्त यंत्र पूजन के बाद षट्कोणों में निम्न सामग्री को स्थापित करें।

अग्निकोण

सिंह बीज स्थापित करें। इससे किसी भी शत्रु को भयभीत करके परास्त किया जा सकता है तथा विजय सिद्धि का प्रतिक है।

नैऋत्य कोण

किसी भी **दुर्दान्त शत्रु** को मर्दन करने के उद्देश्य से 'मर्दिनी' स्थापित करें।

पश्चिम दिशा

वीरवटी स्थापित करने का उद्देश्य साधक में वीरता का समावेश हो सके।

वायव्य कोण

नागचक्र स्थापित इसलिये किया गया है कि शत्रु को वश में करके नाग पाश से बांधा जा सके।

ईशान कोण

रूद्र दण्ड की स्थापना शत्रु को वशीभूत करके उचित दण्ड देने का प्रयास किया जा सके।

पूर्व दिशा

शौरी स्थापना का उद्देश्य साधना के बाद साधक में निरन्तर शौर्य और वीरता बनी रहे। इसके बाद षट्कोणों में स्थापित सभी सामग्री पर कुकुंम का तिलक करके एक-एक पुष्प चढ़ायें। तिलक करते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

अग्निकोण

अग्निकोणे ॐ उग्रवीरं हृदयाय नमः॥1॥

निर्ऋते ॐ महाविष्णुं शिरसे स्वाहा॥2॥

वायव्ये ॐ ज्वलन्तं सर्वतोमुखं शिखायै वषट्॥3॥

ऐशान्ये ॐ नृसिंह भीषणं कवचाय हुं॥4॥

पूज्यपूजकयो-र्मध्ये। भद्रं मृत्यु-मृत्युं नेत्रत्रयाय वौषट्॥5॥

देवतापश्चिमे ॐ नमाम्यहं अस्त्राय फट्॥6॥

इसके बाद अक्षत को कुकुंम से रंग कर निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर चढ़ायें।

इसके बाद गुलाब की पंखुड़ियां यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करें-

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा॥1॥

ॐ रं अग्नेय नमः अग्निश्रीपा॥2॥

ॐ मं यमाय नमः यमश्रीपा॥3॥

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिश्रीपा॥4॥

ॐ वं वरूणाय नमः वरूणश्रीपा॥5॥

ॐ धं वायवे नमः वायुश्रीपा॥6॥

ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेरश्रीपा॥7॥

ॐ हं ईशानाय नमः ईशानश्रीपा॥8॥

इन्द्रशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा॥9॥

वरूणनिर्ऋत्योर्मध्ये ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपादुकां पूजयायि॥१०॥

इसके बाद यंत्र पर एक-एक लौंग चढ़ाते हुये निम्न मंत्रों का उच्चारण करें

ॐ वं वज्राय नमः॥1॥

ॐ शं शक्तयै नमः॥2॥

ॐ दं दण्डाय नमः॥3॥

ॐ खं खड्गाय नमः॥4॥

ॐ पं पाशाय नमः॥5॥

ॐ अं अंकुशाय नमः॥6॥

ॐ गं गदायै नमः॥7॥

ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः॥8॥

ॐ पं पद्माय नमः॥9॥

ॐ चं चक्राय नमः॥10॥

यह 3 दिन प्रातःकालीन साधना है। 'रक्ताभ माला' से निम्न मंत्र का 5 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखं।
नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम्॥

इस प्रयोग को फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष के त्रयोदशी से आरम्भ करके पूर्णमासी को पूर्ण करें। इसके बाद उसी दिन सभी सामग्री को लाल वस्त्र में बांधकर होलिका में समर्पित कर दें।

न्यौछावर ₹ 1800

जगदम्बा शक्ति रक्षा कवच

जगदम्बा शक्ति रक्षा कवच गुरूदेव द्वारा **महाशिवरात्रि पर्व** के पावन अवसर पर साधकों के लिये **सद्गुरूदेव चैतन्य प्रणीत सूर्य मंत्रों** से सम्पूर्ण कर **जगदम्बा शक्ति रक्षा कवच** निर्मित किये गये हैं।

आज जब **जीवन** बिल्कुल **असुरक्षित** बन गया है, पग-पग पर **संकट** और **खतरे** चारों ओर खड़े हैं तो अपनी प्राण रक्षा अत्यन्त आवश्यक हो जाती है। यदि किसी **शत्रु** अथवा किसी **आकस्मिक दुर्घटना** से जान का भय हो, तो व्यक्ति का जीवन चाहे कितना ही **धन-धान्य** से पूरित हो, उसका कोई अर्थ नहीं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी ओर से, अपनी सुरक्षा की ओर से सचेष्ट रहता ही है, परन्तु **दुर्घटनायें** बिना सूचना दिये आती है। ऐसी स्थिति में **दैवी सहायता** या कृपा ही **एकमात्र** उपाय शेष रहता है। **जगदम्बा शक्ति रक्षा कवच** एक ऐसा उपाय है, जो **कुग्रहों** के इस प्रभाव को **क्षीण** कर देता है। इस कवच को धारण करने से **शारीरिक मानसिक आत्मिक शक्ति** की वृद्धि होती है और व्यक्ति के अन्दर स्वत: ही निरन्तर **क्रियाशील** रहने की भावना के साथ देह में **स्फूर्ति, ओज, तेज** की वृद्धि होती है। इस **महाशिवरात्रि पर्व** पर **जगदम्बा शक्ति रक्षा कवच** निर्मित किये गये हैं। आप स्वयं इस **सद्गुरूदेव शिव-शक्ति युक्त यंत्र** की **विलक्षणता** अनुभव करेंगे।

मन में **उमंग, उत्साह, आनन्द, प्रसन्नता** एवं **सफलता** का वातावरण बनेगा। जब उक्त **समस्याओं** का समाधान होना प्रारम्भ होता है, तब व्यक्ति पूर्ण **आनन्द** के साथ, बिना किसी भी **चिंता** या **मानसिक तनाव** के, पूरे वर्ष भर **श्रेष्ठता** के पथ पर अग्रसर होते हुए उसे **कामनाओं** की पूर्ति प्राप्त होती रहती है।

जगदम्बा शक्ति रक्षा कवच

साथ ही दो वर्षीय पत्रिका सदस्यता न्यौछावर ₹900/-

प्राचीन मंत्र-यंत्र विज्ञान

मासिक पत्रिका के सदस्य बनें

कैलाश सिद्धाश्रम-1-C, पंचवटी कॉलोनी
रातानाड़ा जोधपुर- 342011(राज.)
☎ 0291-2517025, 2517028
✆ 7568939648, 8769442398
Info@pmyv.net
www.pmyv.net

नाम
मकान नं.
गली नं.
मोहल्ला
गांव
पोस्ट
जिला
राज्य
पिन कोड नं
मो. नं.
मो. नं.
ई-मेल...

- ☞ वार्षिक पत्रिका सदस्यता हेतु सदस्यता फार्म को सम्पूर्ण विवरण के साथ भरकर कैलाश सिद्धाश्रम-जोधपुर भेजें।
- ☞ फार्म के साथ ही न्यौछावर राशि अग्रिम भेजने पर speed post से उपहार स्वरूप साधना सामग्री आपके पते पर भेज दी जायेगी।
- ☞ साधना सामग्री व दीक्षा हेतु UPI द्वारा भी न्यौछावर राशि भेजने से सम्बन्धित व्यवस्था यथाशीघ्र प्राप्त हो सकेगी।
- ☞ जिसे प्राप्त कर जोधुपर कार्यालय में सूचित करें, जिससे आपकी सदस्यता सक्रिय की जा सके।
- ☞ कृपया अपना विवरण अग्रेजी के स्पष्ट शब्दों में भरें जिससे निश्चित पते पर पत्रिका पहुँच सके।
- ☞ online transaction-PAYTM व UPI द्वारा भेजे।
- ☞ बुक पोस्ट द्वारा तीन दिन में पत्रिका प्राप्त करें, न्यौछावर सदस्यता व बुक पोस्ट चार्ज सहित ₹ 750
- ☞ आश्रम द्वारा आपका मोबाईल नं. डी.एन.डी. होने पर भी सूचना मैसेज द्वारा प्रदान की जायेगी।

शिव साधनायें

शिवो गुरूः शिवो देवः शिवो बन्धुः शरीरिणाम्।
शिव आत्मा शिवो जीवनः शिवादन्यन्न किंचन॥

अर्थात **भगवान शिव** ही **गुरू** हैं, शिव ही देवता हैं, शिव ही **प्राणियों** के **बन्धु** हैं, **शिव** ही आत्मा और शिव ही जीवन हैं। शिव से भिन्न कुछ नहीं है। सद्गुरू के साकार रूप की भी पूर्णता उनके शिव स्वरूप में ही होती है। अतः शिव की साधना, शिव की आराधना, उपासना से ही संसार के समस्त पदार्थ प्राप्त हो सकते हैं, समस्त कामनायें पूर्ण हो सकती है। अन्य देवी-देवता तो फिर भी **शक्तियों** से बन्धे होते हैं और अपनी शक्ति और क्षमतानुसार ही वरदान दे पाते हैं, परन्तु मात्र शिव ही ऐसे देव हैं, भगवान हैं, जो सब कुछ प्रदान करने में समर्थ हैं। संसार के समस्त मंत्र भगवान शिव के डमरू **'निनाद'** से ही निकले हैं और उन्हीं शिव मंत्रों को **गुरू** (जिन्हें शास्त्रों में शिव का ही रूप कहा गया है) द्वारा प्राप्त कर **साधना** सम्पन्न की जाये तो सफलता मिलने में कोई संशय नहीं होगा।

भगवान शिव की चुनी हुई अमोघ, अचूक फल प्रदान करने वाली कुछ साधनायें आगे प्रस्तुत की जा रहीं हैं, जिन्हें साधक यदि शिव कल्प में सम्पन्न करें तो निश्चित रूप से **शिव कृपा** अनुभूत होती ही है। पूरे वर्ष में 365 दिन होते हैं, कुछ दिवसों को **गुरू स्तुति** के लिए श्रेष्ठ माना जाता है किसी दिवस को **'बगलामुखी जयंती'** के रूप में सिद्ध दिवस समझा जाता है, इस प्रकार अलग-अलग **देवताओं** के अलग-अलग सिद्धि दिवस होते हैं, उन दिवसों पर यदि साधना सम्पन्न की जाये तो फल मिलता ही है। **महाशिवरात्रि** का दिवस **भगवान शिव** का **सिद्धि दिवस** है।

महाशिवरात्रि के पहले पड़ने वाली **माघी पूर्णिमा** से **वसंत ऋतु** का प्रारम्भ होता है और इसी दिन से भगवान शिव **साधकों** के लिए अपने पूर्ण **वरदायक** रूप में अवस्थित हो जाते हैं। माघी पूर्णिमा से लेकर **फाल्गुन शुक्ल अष्टमी** तक का समय **'शिव कल्प'** कहलाता है। इन दिवसों में और शिवरात्रि में कोई भेद नहीं है, इन दिनों में की गई साधना निष्फल नहीं होती, ऐसा भगवान शिव ने स्वयं कहा है। इस बार **शिव कल्प दिनांक 16.02.2022 से लेकर 10.03.2022 तक है।** यदि इन **साधनाओं** को **शिव कल्प** में प्रारम्भ न कर सकें, तो इन

साधनाओं को वर्ष के किसी भी माह के प्रदोष से भी प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रदोष भी भगवान शिव का **प्रिय दिवस** है।

भगवान् शिव की आराधना में लाखों करोड़ों श्लोक लिखें गये हैं और यदि साधक भगवान शिव को निरन्तर स्मरण करता है तो उसके सभी कार्य सफल होते हैं। **भौतिक** और **आध्यात्मिक** रूप से उसे पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त होती है। प्रत्येक साधक और कोई मंत्र जाप करे या नहीं करे लेकिन शिव का **पंचाक्षरी मंत्र ''नम: शिवाय''** का उच्चारण तो अवश्य ही कर सकता है। इस **'नम: शिवाय'** मंत्र में ही भगवान शिव के स्वरूप **सदाशिव, शिव, अर्द्धनारीश्वर, शंकर, गौरीपति, महामेहश्वर, अम्बिकेश्वर, पंचानन्द, महाकाल, नीलकण्ठ, पशुपति, दक्षिणामूर्ति, महामृत्युंजय** का सार निहीत है। ऐसे भगवान शिव जो कि शीघ्र प्रसन्न होने वाले और देवों के देव आदि देव हैं। उन महादेव की वन्दना तो **ब्रह्मा, विष्णु** भी करते हैं। उनकी वन्दना में यह प्रार्थना श्लोक उनके पूरे स्वरूप को स्पष्ट करता है।

नमस्तुभ्यं भगवते सुव्रतेऽनन्तेजसे।
नम: क्षेत्राधिपतये बीजिने शूलिने नम:॥
नमस्ते ह्यस्मदादीनां भूतानां प्रभवाय च।
वेदकर्मावदातानां द्रव्याणां प्रभवे नम:॥
विद्यानां प्रभवे चैव विद्यानां पतये नम:।
नमो व्रतानां पतये मन्त्राणां पतये नम:॥
अप्रेमयस्य तत्त्वस्य यथा विद्म: स्वशक्तित:।
कीर्तितं तव माहात्म्यमपारं परमात्मन:॥

भगवान! आप सुव्रत और अनन्त तेजोमय हैं, आपको नमस्कार है। आप क्षेत्राधिपति तथा विश्व के बीज-स्वरूप और शूलधारी हैं, आपको नमस्कार है। आप हम सभी भूतों के उत्पत्ति स्थान और वेदात्के सभी **श्रेष्ठ यज्ञ** आदि कर्मों को सम्पन्न कराने वाले, समस्त द्रव्यों के स्वामी हैं, आपको नमस्कार है। आप विद्या के आदि कारण और स्वामी हैं, आपको नमस्कार है। आप व्रतों एवं मंत्रो के स्वामी हैं, आपको नमस्कार है। आप अप्रेममय तत्व हैं। आप हमारे लिये सर्वत्र **कल्याणकारक** हों। आप जो हैं, वही हैं अर्थात् **अज्ञेय** और **अगम्य** हैं, आपको नमस्कार है।

शिव महाकल्प के शुभ अवसर पर साधकों के लिये विशेष **शिव तंत्र साधना** प्रयोग दिये जा रहे हैं जिन्हें साधक स्वयं सम्पन्न करें और अपने जीवन में आनन्द रूपी **अमृत** का सिंचन करें। ये प्रयोग जीवन के विभिन्न पक्षों **भौतिक, आध्यात्मिक, दैहिक, मानसिक स्वरूपों** से सम्बन्धित हैं। इनसे भगवान शिव का वरदान तो निरन्तर प्राप्त होता ही है।

एक-एक करके इन सभी **साधनाओं** को सम्पन्न करें जिससे **शिव रूपी गुरू** और **गुरू रूपी शिव** आपके जीवन में निरन्तर **आशीर्वाद** प्रदान करते रहें...

शिव साधनायें

आय के साधनों में वृद्धि हेतु

परिवार अथवा स्वयं किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन का आधार **अर्थ** ही होता है इस तथ्य को आज के **भौतिक युग** में **नकारा** नहीं जा सकता। केवल धन का एक बंधा-बंधाया स्रोत ही नहीं, व्यक्ति के पास धन प्राप्ति के अन्य मार्ग भी हों, उसे जीवन में निरन्तर आकस्मिक धन की प्राप्ति भी होती रहे। इसके लिए यह लघु प्रयोग सम्पन्न करना उचित है। साधक **'विश्वेश्वर'** को प्राप्त कर उसका पूजन चंदन अक्षत से कर निम्न मंत्र का **101 बार** जप करें, तथा दूसरे दिन उसे विसर्जित करे तो उसे विभिन्न रूपों में **आकस्मिक धन** की प्राप्ति जीवन में निरन्तर होती ही रहती है-

मंत्र

॥ शं ह्रीं शं ॥

न्यौछावर ₹370

शारीरिक पीड़ा के समाधान हेतु

जिस प्रकार **चिंता** जीवन का **अभिशाप** है, उसी प्रकार नित्य शरीर में कहीं न कहीं बनी रहने वाली कोई **पीड़ा** भी अभिशाप होती है, जिससे जीवन की गति ही **स्तम्भित** हो जाती है। इसके समाधान हेतु साधक एक **'मधुरूपेण रूद्राक्ष'** प्राप्त कर निम्न मंत्र का **51 बार** मंत्र जप सम्पन्न कर अगले बीस दिनों तक **रूद्राक्ष** गले में धारण किये रहने के पश्चात नदी में विसर्जित कर दें-

मंत्र

॥ ॐ पशुपतये नम: ॥

न्यौछावर ₹521

शत्रुओं की समाप्ति हेतु

जीवन को पूर्णरूप से **सकारात्मक** बनाने के लिये आवश्यक है कि जीवन के **नकारात्मक पक्षों** पर प्रहार कर उन्हें जड़ मूल से समाप्त कर निश्चित हो जायें। शत्रु जीवन के ऐसे ही **नकारात्मक पक्ष** होते हैं भले ही किसी भी रूप में क्यों न हों, इन्हें समाप्त करने के लिये आवश्यक है कि **साधक शिवकल्प की चैतन्य** रात्रि में अपने समक्ष **'त्र्यक्ष गुटिका'** रखे और फिर

मंत्र

॥ ॐ भ्रं शिव स्वरूपाय फट् ॥

उपरोक्त मंत्र का 101 बार जप करें, तीन दिन बाद में गुटिका नदी में विसर्जित कर दें। **न्यौछावर ₹340**

ग्रह दोष की समाप्ति हेतु

प्रायः अनेक **साधनाओं** का **वांछित फल** व्यक्ति को इस कारण नहीं मिल पाता, क्योंकि **ग्रहों, नक्षत्रों** का कोई विशिष्ट संयोग उसकी भाग्य लिपि में दुर्भाग्य बनकर अंकित हो जाता है। ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति के पास **जन्मकुण्डली** न हो, तो उसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना अत्यधिक श्रेयस्कर होता है। साधक को चाहिये कि वह **मंत्र सिद्ध 'नील लोहित फल** को प्राप्त कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का **65 बार** जप कर फल को घर से दूर दक्षिण दिशा में उसी दिन या अगले दिन फेंक दे।

मंत्र

॥ ॐ ज्योतिर्मय स्वरूपाय नमः॥

न्यौछावर ₹450

व्यापार में आ रही अवनति की समाप्ति हेतु

प्रायः व्यक्ति किसी श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने के पश्चात् जब अपने यौवन काल में नौकरी या व्यापार को संभालने की स्थिति में आता है तब तक वह विविध कारणों से जिसमें पितृ दोष आदि सम्मिलित होते हैं, पूर्व की स्थिति को खो बैठता है तथा आर्थिक व सामाजिक रूप से अवनति की ओर अग्रसर होने लग जाता है। यह मन को मथ कर रख देने वाली स्थिति होती है। इसकी समाप्ति के लिए साधना का अवलम्बन लेना ही चाहिये। ऐसे में चाहिये कि वह **'गुणवा'** को **प्रदोष** अथवा **सोमवार** की प्रातः स्थापित कर निम्न मंत्र का **51 बार** उच्चारण करे-

मंत्र

॥ ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ॐ ॥

अगले पांच दिनों तक नित्य जप करते रहने के बाद गुणदा को नदीं में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर ₹370

भूमि दोष तथा गृह-दोष निवारणार्थ

व्यक्ति जहां रहता है अथवा जिस स्थान पर रहकर वह अपना **व्यापार** आदि करता है उस भूमि का भी अपना **दोष** या **गुण** होता है, जिसकी रश्मियां प्रभावित करती रहती हैं। अनेक बार तो ऐसा भी देखा गया है कि कोई व्यक्ति किसी साधना अथवा जीवन यापन में सब ओर से हार कर **असफल** होकर बैठ जाने के बाद, जब अपनी भूमि का अथवा गृह या व्यापार स्थल का शोधन करवा लेता है, तो उसे एकदम से आशातीत सफलता मिलने लग जाती है।

महाशिवरात्रि की रात्रि में दस बजे किसी ताम्रपात्र में **'शण्ड'** को रख कर उस पात्र को काले वस्त्र पर स्थापित कर, निम्न मंत्र का **91 बार** मंत्र जप करने के पश्चात् उसी काले वस्त्र में बांध कर **घर** अथवा **व्यापार स्थल** पर रखें-

मंत्र

॥ ॐ ह्रौं ब्लूं हं लं रं ॐ ॥

एक माह पश्चात् शण्ड को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर ₹440

आयुष्य लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु

जीवन के **विविध सुख** जीवन की विविध अवस्थाओं के साथ ही जुड़े होते हैं। उदाहरणार्थ कोई किशोर पिता बनने का सुख उसी प्रकार अनुभव नहीं कर सकता, जिस प्रकार कोई युवा पितामह बनने का। और जीवन में ऐसे सुख से मिली तृप्ति से ही परिपूर्णता का बोध संभव हो जाता है। यूं भी जीवन ऐसा होना चाहिये, जो निरन्तर **सुदीर्घ काल** तक पूर्ण **स्वास्थ्य** के साथ विस्तारित हो। इस **महाशिवरात्रि** के पर्व पर पूरे दिवस कभी भी (दिन में दस बजे से दो बजे के मध्य छोड़कर) **श्वेत वस्त्र** के ऊपर **ताम्रपात्र** में **'मृड'** स्थापित कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का **51 बार** जप करने से इस अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति संभव होती है।

मंत्र

॥ ॐ वं शं ॐ ॥

अगले दिन **मृड** को **कुछ दक्षिणा** के साथ **शिव मंदिर** में चढ़ा दें।

न्यौछावर ₹310

धन-धान्य की प्राप्ति हेतु

भगवान शिव की अर्द्धांगिनी, उनकी मूलभूत शक्ति, जगत जननी माँ पार्वती का एक स्वरूप अन्नपूर्णा का भी है, जो अपनी समस्त संतानों के पोषण के साथ-साथ निरन्तर उनके हित चिंतन में भी तल्लीन रहती है, किन्तु **भगवती अन्नपूर्णा** की आराधना-साधना तब तक अधूरी ही है, जब तक उसमें **शिवतत्व** की समायुक्ति नहीं। जिस प्रकार शिव शक्ति के बिना अधूरे हैं ठीक उसी प्रकार शक्ति का **माधुर्य** भी शिव की उपस्थिति में प्रस्फुटित हो पाता है। घर धन-धान्य से भरा रहे, अतिथियों का आगमन व सत्कार संभव हो सके, जीवन में पुण्य कार्य हो सके, तीर्थयात्राये हो सके, ऐसे जीवन के विविध उदार पक्षों की पूर्ति के लिए एक लघु प्रयोग का विधान किया जाता है।

साधक जल्दी उठकर नित्य **पूजन, शिव पूजन** को सम्पूर्ण कर अपने समक्ष सफेद वस्त्र पर एक ताम्रपात्र में **'श्रीकण्ठ'** को स्थापित कर निम्न मंत्र का **75 बार** मंत्र जप सम्पन्न करे-

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ ॥

दूसरे दिन श्रीकण्ठ को कुछ दान के साथ किसी को दे दें अथवा देवालय में रख दें।

न्यौछावर ₹470

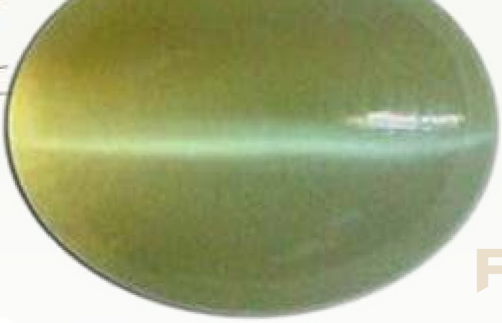

लहसुनिया

लहसुनिया की विशेषता

लहसुनिया केतु का रत्न है, इसे सूत्र मणि भी कहा जाता है। माना जाता है, इसे धारण करने से शारीरिक दुर्बलता समाप्त हो जाती है और वीर्य, ओज, तेज में वृद्धि होती है। यह रत्न दमा अथवा सांस सम्बन्धित रोगों में लाभकारी है। लहसुनिया आध्यात्मिक गुणों में विकास करता है और केतु के सभी प्रकार के दोषों से निवृत्त होती है।

लहसुनिया के लाभ

लहसुनिया जीवन में उत्तम प्रभाव करने में समर्थ होता है। इसे धारण करने से संतान सुख वृद्धि, सम्पत्ति, स्थिर लक्ष्मी एवं आनन्द, सुख-शांति में वृद्धि होती है। भूत प्रेत का भय इसे धारण करने से समाप्त हो जाता है। यह प्रबल शत्रु संहारक रत्न है, जिसे धारण करने से किसी भी प्रकार के शत्रु निस्तेज व पराजित होते हैं।

लहसुनिया कौन धारण करें

जिसकी कुण्डली में केतु ग्रह दूषित, दुर्बल या अस्त हो, उसे लहसुनिया धारण करना चाहिये। यदि केतु ग्रह की महादशा या अर्न्तदशा चल रही हो तो लहसुनिया धारण करना चाहिये। केतु से सम्बन्धित दोष से मुक्त होने के लिए भी इस रत्न को धारण किया जाता है। शुभ अथवा सौम्य ग्रहों के साथ यदि केतु पीड़ा हो तो लहसुनिया धारण करें।

मंत्रों द्वारा प्राण प्रतिष्ठित लहसुनिया रत्न न्यौछावर राशि ₹ 5100/-

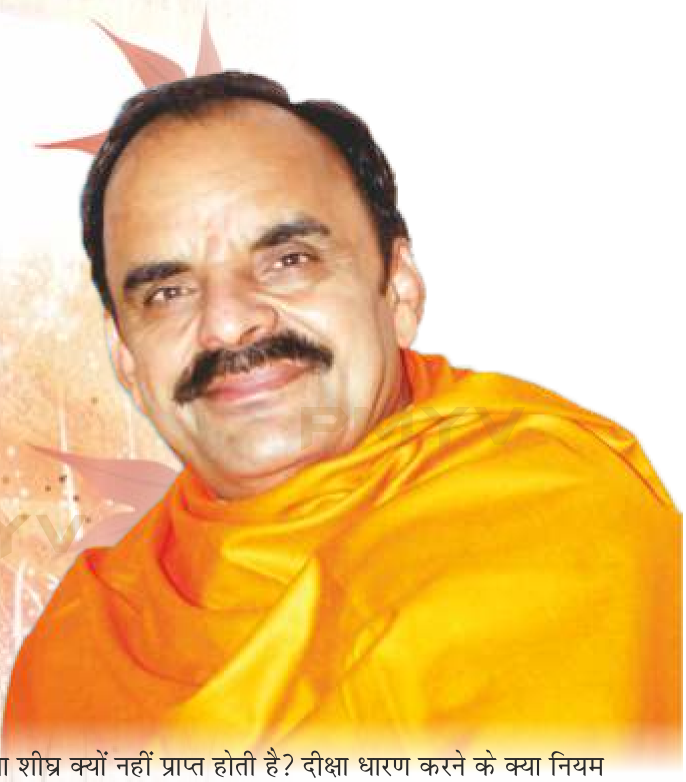

धैर्य-विश्वास आस्था

मंत्र जप, साधना, दीक्षा क्या होती है? साधना में सफलता शीघ्र क्यों नहीं प्राप्त होती है? दीक्षा धारण करने के क्या नियम हैं? ये सारे प्रश्न साधक के मन में बार-बार उठते रहते हैं। जब तक मन में संशय रहता है, तब तक उसे किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती है। इन्हीं सब संशयों का निवारण करने हेतु **सद्गुरूदेव** ने यह महान् प्रवचन दिया, जिससे व्यक्ति जान ले कि वह किस धरातल पर खड़ा है और उसका साधना- पथ कैसा है...?

वदामि नित्यं भवदेव रूपं गणेशं वदामि, भव रूप चिन्त्यं लक्ष्मीर्वदां भवदेव हितं सदैवं कार्यो र्वतीर्वै भवदे व न दुःखं

गणेश उपनिषद् का यह एक महत्वपूर्ण श्लोक है। सभी साधकों के लिए इस श्लोक में उन प्रश्नों को उठाया है, जो प्रश्न हृदय में उठ सकते हैं। इन श्लोक में उन प्रश्नों के उत्तर दिए हैं, जो आपके लिये जरूरी हैं।

प्रश्न है- हमारे जीवन में हम किन कारणों से **तनावमय, दुःखमय, चिंतामय** रहते हैं?... और यदि भारतवर्ष में देवी-देवता हैं, प्रत्यक्ष देवता हैं, यहां राम और कृष्ण ने जन्म लिया है तो फिर हम इतने परेशान और दुःखी क्यों हैं? इग्लैण्ड और अमेरिका में, जहां देवताओं ने जन्म लिया ही नहीं, वहां लोग सुखी क्यों हैं? क्या कारण है, कि हम दुःखी है और वे सुखी हैं, उनके पास धन है, इसका मूल कारण क्या है?

यह आप लोगों की एक शंका है, कि वे ज्यादा सुखी हैं और आप दुःखी हैं और भारतवर्ष में हमने यह देखा है कि उनकी अपेक्षा हम कमजोर हैं धन के मामले में भी और स्वास्थ्य के मामले में भी। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि हम इतने **दरिद्र,** हम इतने परेशान क्यों हैं? यदि यहां गणपति हैं, यहां शिव हैं, लक्ष्मी हैं, साधनायें हैं, मंत्रजप हैं, गुरू हैं तो ये सब होते हुए भी क्यों हमारी **दरिद्रता** नहीं जाती है?

हमारी परेशानियां क्यों नहीं मिटती हैं और हमारे जीवन में **अभाव** क्यों है?, यह आप लोगों का ही सोचना है कि आप दुःखी हैं, इसलिये की आप ने वहां का जीवन देखा ही नहीं है। वे सब यहां आते है तो बहुत अच्छे कपड़े पहन कर आते हैं, चाहे आपके भाई हों या मित्र हों, यहां रहकर आप उनकी परेशानियों को नहीं समझ सकते हैं।

24 घण्टे वे काम में लगे रहते हैं, चाहे पति हो, चाहे पत्नी हो, चाहे बेटा हो या बेटी हो, सात दिनों में वे एक दूसरे से मिल ही नहीं पाते। यहां जो पारिवारिक वातावरण आपको मिलता है, उनको नहीं मिलता। मैं उनके घर में रहा हूं और कई बार रहा हूं, एक बार नहीं बीस बार। मैंने देखा है उनको तनाव में, दुःख में। जितना दुःख उनको है, आपको नहीं। वहीं पर आत्महत्या की दर 22 प्रतिशत हैं। हमारे यहां केवल 6 प्रतिशत है। ऐसा क्यों हो रहा है? इसलिये कि उनके जीवन में धर्म का और गुरू का कोई स्थान नहीं है और हमारे जीवन में धर्म का स्थान है और हम फिर भी ज्यादा **संतुष्ट** हैं। आपके जीवन में जितना धन है, उतना ही वहां है। यह केवल आपकी कल्पना है, कि वे वहां पर सुखी हैं। जब वे यहां आते हैं तो अच्छे कपड़े पहने होते हैं, अच्छी घड़ी होती है, अच्छा बैग होता है, लेकिन उनके बैग से आप उनके जीवन को नही आंक सकते, उनके **मूल्य** को नहीं आंक सकते। वे आपसे ज्यादा परेशान, दुःखी और संतप्त हैं। सुबह उठते हैं तो पति अपनी चाय बनाकर पीता है, पत्नी अपनी चाय बनाकर दौड़ती हैं, आपस में मिलते ही नहीं, सात

दिनों में एक बार मिलते हैं। रात को ग्यारह बजे आते हैं तो होटल में खाकर आते हैं और लेट जाते हैं।

हमारी केवल कल्पना है कि वे **सुखी** हैं। जब हम अपने जीवन में **ईश्वर** को स्थान नहीं दे पाते, तो हमारे जीवन में **परेशानियां** और **बाधाये** आती हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम परेशान नहीं है... मगर उसका समाधान है।

समाधान तभी होगा जब आस्था हो, विश्वास हो। जब विश्वास डगमगा जाता है, तब जीवन में **धर्म** नहीं रह पाता, आस्था नहीं रह पाती, पुण्य नहीं रह पाता, जीवन में प्रगति नहीं हो पाती और इस श्लोक में यही बताया गया है कि जीवन में पूर्ण रूप से समृद्ध हो सकते हैं और वह भी कुछ ही समय में। ऐसा नहीं है कि मंत्र जप आज करें और बीस साल बाद फल मिले, उस फल की कोई महत्ता नहीं है। दु:ख आपको आज हैं, धन की परेशानी आज है और मैं तुम्हें मंत्र दूं और पांच साल बाद लाभ मिले तो मंत्र का कोई फायदा नहीं है।

आप ट्यूब लाइट या बल्ब लगायें और स्विच दबायें और दो साल बाद लाइट आये तो उस लाइट की कोई उपयोगिता नहीं है। बटन दबाते ही लाइट होनी चाहिये तो वह लाइट सही है। मंत्र को करते ही आपको लाभ होना ही चाहिये।

यदि ऐसा है, तो गुरू सही हैं अन्यथा गुरू फ्रॉड हैं, फिर छल है, झूठ है, वह गुरू बनने के काबिल नहीं है। मगर आवश्यकता इस बात की है कि ट्यूब लाइट सही होनी चाहिये। मैं यहां बटन दबाता रहूं और ट्यूब आपकी फ्यूज है, तो मैं उसे जला नहीं सकता।

यदि आपमें आस्था है ही नहीं, न गणपति में है, न गुरू में आस्था है, न देवताओं में आस्था है तो मैं कितने ही बटन दबाऊं, आपको लाभ नहीं हो सकता और लाभ नहीं हो सकता तो फिर आप कहेंगे बिजली बेकार है, मैंने ट्यूब लाइट लगाई है पर जलती नहीं है।... तो लाइट जल ही नहीं सकती तीस साल तक बटन दबाते रहें तो भी लाइट नहीं जल सकती। आवश्यकता इस बात की है कि आप इस बात को समझें और आपको अनुकूलता प्राप्त हो।

हमारे मन में **विश्वास** नहीं रहा देवताओं के प्रति, अपने आप पर भी विश्वास नहीं रहा। मेरे कहने के बावजूद भी विश्वास नहीं रहेगा। मैं कहता हूं, तुम्हें मंत्र जप करना है, तुम्हें सफलता मिलेगी तो अनमने मन से। आप मंत्र जप भले ही करेंगे परन्तु एक जो गहराई होनी चाहिये, वह आप में नहीं हैं। ऊपर से आप मुझे गुरू भले ही कहेंगे, मगर मन में जो **अटैचमैंट** बनना चाहिये वह नहीं बन पाता और अटैचमैंट नहीं बन पाता तो मैं ज्योंही अपनी **तपस्या का अंश**, **साधना** और **सिद्धि** देना चाहूंगा, नहीं दे पाऊंगा और आप नहीं ले पाएंगे।

लेने और देने में, दोनों में एक **समरूपता** होनी चाहिये। जहां मैं खड़ा हूं वहाँ आपको खड़ा होना पड़ेगा, तब मैं दे पाऊंगा और आप ले पाएंगे। फिर **मंत्र** जप करने से कुछ नहीं हो पाएगा, मंत्र देने से भी कुछ नहीं हो पाएगा, आवश्यकता है कि मैं दूं और आप पूरे शरीर में उसे धारण कर सकें। मैं जो दूं उसे आप कानों से ही नहीं सुनें, बल्कि पूरे शरीर में वे मंत्र समा जाने चाहिये।

भोजन मैं आपको दूं और आप भोजन करें तो पूरा खून बनना चाहिये और पूरे शरीर में घूमना चाहिये। मैं भोजन दूं, और आप उसे पचा नहीं पाएं उसका खून नहीं बन सकता, ताकत नहीं मिल सकती। ताकत मिलने के लिए जरूरी है कि इंतजार करें कि खून बने। इधर आपने खाना खाया और उधर खून बन जाये, यह संभव नहीं। एक मिनट में खून नहीं बन सकता। दो दिन तक आपको वेट करना ही पड़ेगा।

इतना विश्वास करना ही पड़ेगा, कि जो भोजन किया है उसका खून बनेगा ही, इतना विश्वास करना पड़ेगा कि भोजन किया है, उसका लाभ मिलेगा ही। मंत्र की स्थिति यही है। मैं आपको मंत्र दूं तो उसके प्रति आस्था बननी चाहिये आपकी, आध्यात्म चेतना बननी चाहिये, चाहे वह एक दिन में बने या दो दिन में। मंत्र दिया है, तो चेतना बनेगी ही बनेगी। यह हो ही नहीं सकता कि मैं मंत्र दूं और आपको सफलता नहीं मिले। यह हो सकता है कि आपसे कम मिल पाऊं, हो सकता है कि केवल एक मिनट मिलें। इससे आपके विश्वास में अन्तर नहीं आना चाहिये। जिसको एक बार शिष्य कहा, वह मेरा शिष्य है ही। मगर आवश्यकता इस बात की है कि शिष्य बुलाये और गुरू आए। बिना बुलाये तो न गुरू आ सकता है, न गुरू का चिंतन बन सकता है, न गुरू में आस्था बन सकती है।...और ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप बुलाएं और मैं नहीं आऊं।... और इसके बावजूद भी जीवन में तनाव है तो संसार में सभी लोगों के जीवन में तनाव है। दूसरों के जीवन में लगता है कि उसमें कम तनाव है, परन्तु यदि हम उसको अंदर से कुरेदेंगे तो पता लगेगा, उनकी जिन्दगी खोलकर देखें तो मालूम पड़ेगा कि वे हमसे ज्यादा परेशान हैं, **दु:खी** हैं, **संतप्त** है।

...और श्लोक में यही बताया गया है कि **पीड़ा** है, **बाधा** है, **अड़चन** है, **कठिनाइयां** हैं तो सबसे पहले उस रास्ते पर चलना है, जहां

एक दूसरे पर विश्वास बने। तुम्हारे, पति-पत्नी के बीच विश्वास नहीं होगा, तो भी आप बीस साल एक छत के नीचे रहेंगे तो भी न आप पत्नी का लाभ उठा सकते हैं और न पत्नी आपका लाभ उठा सकती है। तनाव में जीवन कट जायेगा, पूरे बीस साल कट जाएंगे। यह नहीं कि आप मर जाएंगे, मगर जो जीवन का आनन्द होना चाहिये वह नहीं होगा।

आप बीस साल मेरे साथ रहें और अगर विश्वास नहीं होगा तो मैं जो **मंत्र** और **साधना** दूंगा उनका लाभ आप नहीं उठा पाएंगे। दीक्षा के बाद, केवल यह नहीं है कि मंत्र आपको दे दिया। ऐसी दीक्षा मैं आपको देना भी नहीं चाहता और ऐसी दीक्षा से लाभ भी नहीं है। तुम्हारा पैसा भी मुझे नहीं चाहिये, नारियल हाथ में रखने से और तिलक करने से कुछ नहीं हो पाएगा। मैं चाहता हूं कि मैं दूं और आप पूरी तरह से ग्रहण कर सकें। आपने दो पैसे खर्च किये, तो आपको लाभ होना ही चाहिये यदि मैं आपको दीक्षा दूं तो उनका मंत्र आपके हृदय में उतरना ही चाहिए, उतरे, और आप उसका लाभ उठा सकें, आप अनुभव कर सकें कि आपको एक तृप्ति मिली है सुख मिला है, मन में एक शांति मिली है और आपके हृदय में एक ऐसा विश्वास पैदा होना चाहिये कि मंत्र-जप के बाद आपके चेहरे पर एक **आभा, एक चमक, एक ज्योत्सना** होनी चाहिये।

...और ऐसा होगा, तो जो मैंने मंत्र दिया है, वह भी सार्थक होगा। वह चाहे गुरू का मंत्र हो, लक्ष्मी का मंत्र हो, चाहे गणपति का मंत्र हो। **हरिद्वार** में तो कम से कम डेढ़ लाख लोग रहते हैं। हम जाते हैं और गंगा में स्नान करते हैं तो बहुत शांति अनुभव करते हैं कि आज गंगा में स्नान किया, जीवन धन्य हो गया।... और हरिद्वार में रहने वाले गंगा में स्नान करते ही नहीं है। उनकी आस्था ही नहीं है हरिद्वार में। उनको गंगा में आस्था है ही नहीं। उनके लिए वह सिर्फ नदी है और हम जाते हैं तो **पवित्रता अनुभव** होती है। ऐसा क्यों

है? इसलिये कि हमारे मन में **गंगा के प्रति अटैचमैंट** है, **एक भावना है**, उनके मन में भावना है ही नहीं। जो बहुत आसानी से प्राप्त हो जाता है उसके प्रति भावना रहती ही नहीं। यदि गुरू आसानी से मिल जाएंगे तो उनके प्रति वैसा भाव रहेगा ही नहीं।

तुम्हारे, मेरे मन में भावना है गंगा के प्रति, तो **शीतलता अनुभव** होगी ही। यह तो आत्म विश्वास की बात है, आत्मचिन्तन की बात है। इसलिये जब आप स्नान करते हैं तो इतनी **पवित्रता अनुभव** करते है, सिर्फ महसूस नहीं करते, मिलती ही है पवित्रता। आत्मा को आनन्द मिलता है, जीवन की पूर्णता मिलती है, जीवन को चेतना मिलती है और जीवन में जो कुछ हम चाहते हैं, वह मिल ही जाता है।

...और जब मैं **दीक्षा** देता हूं आपको, तो उस दीक्षा के माध्यम से उतनी ही **चेतना** पैदा होनी चाहिये, मंत्र को धारण करने की शक्ति पैदा होनी चाहिये। दीक्षा का तात्पर्य है कि मैं आपको **मंत्र** दूं और धारण हो जाये, दीक्षा का अर्थ है कि केवल कान ही आपके मंत्र को ग्रहण न करें, शरीर का प्रत्येक कण आंख बन जाये, कान बन जाये।

गुरू ने अगर दिया है **मंत्र,** तो लाभ होगा ही उससे, गुरू ने अगर उपाय किया है तो ठीक होगा ही, दीक्षा दी तो आपके पूरे शरीर ने मंत्र को ग्रहण किया। आप केवल कान से मंत्र ग्रहण करते हैं। कान से मंत्र ग्रहण करना और पूरे शरीर से मंत्र ग्रहण करने में अंतर है, ऐसा हो की एक-एक रोम कान बन जाये।

और वह कान बन जाता है **दीक्षा** के माध्यम से। मैं आपको दीक्षा दूं और आप उसका लाभ उठा सकें, मैं आपको दीक्षा दूं और आप पूर्णता प्राप्त कर सकें।

गुरूर्मे देह मदैव भवतां वरेण्यं ज्ञानोप दीक्षा भवतां महितं बहन्ती।

रूपं वदैव भवतां परीतं श्रीयंतु दीक्षो वदां भवतां मयैव सिद्धि॥

इस **श्लोक** में एक अत्यंत **तेजस्वी ऋषि विश्वामित्र** ने **उच्चकोटि** की बात कही और विश्वामित्र, जो ऋषि थे, वे अपने जीवन में आपसे भी ज्यादा **दरिद्र** रहे। विश्वामित्र ने ही राम और लक्ष्मण को **धनुर्विद्या की दीक्षा** दी। वे ही विश्वामित्र, जो रघुकुल के गुरू थे, वे ही विश्वामित्र , जो अस्त्र-शस्त्र में, धनुर्विद्या में, मंत्र में, तंत्र में इतने उच्चकोटि के थे, कि अकेले राम ने रावण और करोड़ों की उसकी सेना को समाप्त करके पूर्ण **विजय** प्राप्त की।

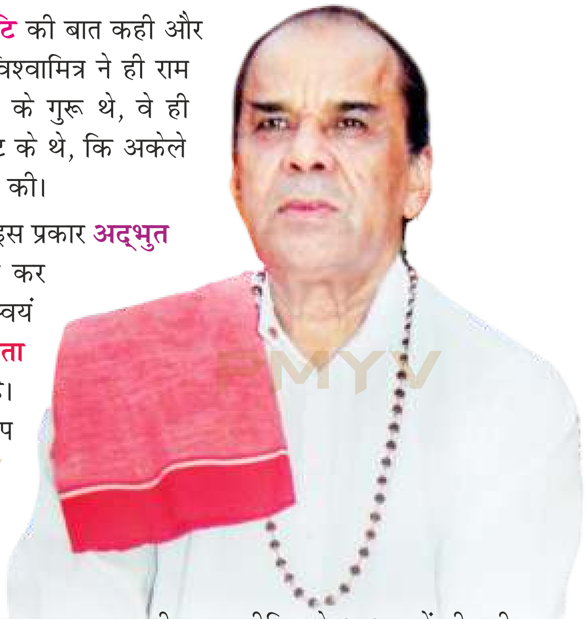

...जरूर उन मंत्रों में और तंत्र में एक ताकत थी जो विश्वामित्र ने राम को दी, इस प्रकार **अद्भुत शक्तियां** प्रदान की, जिनके माध्यम से वे अपने जीवन में **सफलता** प्राप्त कर सके। यद्यपि रघुकुल के गुरू तो वशिष्ठ थे, मगर दशरथ ने राम-लक्ष्मण को स्वयं विश्वामित्र के हाथों में सौंपते हुए कहा कि आप जैसा उच्चकोटि का **तंत्र ज्ञाता** कोई नहीं है। इस प्रकार का अद्भुत तेजस्वी व्यक्तित्व पृथ्वी पर कोई नहीं है। इसीलिये मैं अपने दोनों पुत्रों को तंत्र शास्त्र ज्ञान हेतु वशिष्ठ को नहीं सौंप करके आपको सौंप रहा हूं। इसलिए कि ये जीवन में **अद्वितीय व्यक्तित्व** प्राप्त कर सकें और उस समय भरी सभा में विश्वामित्र ने दशरथ को एक बात कही...और वाल्मीकि रामायण में वाल्मीकि ने उस समय की अपनी आँखों से देखी घटना कही। तुलसीदास तो बहुत बाद में पैदा हुए, वाल्मीकि तो उस समय थे ही, क्योंकि जिस समय सीता को राम ने निष्कासित किया, उस समय सीता वाल्मीकि के आश्रम में ही रही। वाल्मीकि रामायण में आता है कि दशरथ ने कहा, मैं अपने दोनों पुत्रों को अद्वितीय बनाना चाहता हूं, ऐसा बनाना चाहता हूं कि फिर पृथ्वी पर उनके समान दूसरा हो ही नहीं, मंत्र में, तंत्र में, योग में, साधना में, दर्शन में, शास्त्र में, राज्य में, वैभव में और सम्मान में।

तब विश्वामित्र एक ही पंक्ति में उत्तर देते हैं कि दशरथ-

योगीय मेव भवता वरेण्यं दीक्षां वदेम्यं भवतां वरिथं।

मैं तुम्हारे पुत्रों को अद्वितीय बना तो दूंगा, अद्वितीय का मतलब कि उनके मुकाबले पृथ्वी पर कोई हो ही नहीं, ये राजा की संतान नहीं कहलाएंगे, ये भगवान कहलायेंगे, रघुवंश में ऐसा कोई बालक नहीं हुआ, ऐसा बालक मैं इनको बना दूंगा, मगर ये केवल मुझे ही गुरू मानें तो। इतना की मुझसे सम्बन्ध जुड़ जाये इनका। ये मुझे अपने आप में पूर्णता के साथ में ग्रहण कर लें तो मैं अपनी समस्त सिद्धियां इन्हें दे सकता हूं। मैं इनको सिद्धियां तभी दे सकूंगा जब ये पूर्ण रूप से मुझे गुरू स्वीकार कर लेंगे। मुझे पूर्ण रूप से स्वीकार करेंगे तभी मैं इनको ज्ञान दे पाऊंगा। चौथाई मंत्र स्वीकार करेंगे तो इन्हें चौथाई ही ज्ञान दे पाऊंगा क्योंकि

मंत्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे च गुरौ तथा या:असी भावना यस्य तादृशी फलितं भवति:

मंत्र में, तीर्थ में, देवताओं में, ब्राह्मण में और गुरू में आपकी भावना जितनी जुड़ेगी उतना ही फल मिलेगा। गंगा के प्रति आपकी भावना जितनी ज्यादा होगी, उतनी ही आप पवित्रता अनुभव करेंगे। गुरू के प्रति जितनी भावना होगी, उतना ही आप लाभ उठा पाएंगे। यदि आप दूर से ही प्रणाम करेंगे और गुरू में कोई अटैचमैंट नहीं होगा तो गुरू देगा भी आशीर्वाद, तो वह यों ही लौट जायेंगा।

दो स्थितियां बनती हैं जीवन में। एक **श्रद्धा** होती है, एक **बुद्धि** होती है। आदमी दो तरीकों में जीवन व्यतीत करता है, श्रद्धा के माध्यम से और बुद्धि के माध्यम से। जो बुद्धि के माध्यम से प्राप्त करते हैं जीवन को, वे जीवन में सुख प्राप्त नहीं कर सकते, आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। वे हर समय तनाव में रहते हैं। वे समझते हैं, हम बहुत चालाक हैं, बहुत होशियार हैं, हमने जीवन में इसको धोखा दे दिया, इसको मूर्ख बना दिया, इसको कुछ भी कर दिया और हम ज्यादा सफलता प्राप्त कर सकते हैं, वे नहीं कर सकते। हर क्षण उनके जीवन में तनाव होता है और जीवन में आनन्द क्या होता है, सुख क्या होता है, वे अनुभव कर ही नहीं सकते, संभव ही नहीं, क्योंकि बुद्धि के माध्यम से केवल भ्रम पैदा होगा, संदेह पैदा होगा। बुद्धि तो कहेगी कि यह शिवलिंग है ही नहीं, एक पत्थर है, और पत्थर के माध्यम से तुम्हें सफलता नहीं मिल सकती। बुद्धि तो यह भी कहती है कि पत्नी है तो क्या हुआ, मैं शादी कर के लाया हूं, इसकी ड्यूटी है कि सेवा करे, मैं इसको रोटियां दे रहा हूं। वह पति अपनी पत्नी को सुख नहीं दे सकता।

तुम्हारी जिन्दगी में आनन्द तभी हो सकता है, जब बुद्धि को एक तरफ करके श्रद्धा के द्वारा जुड़ोगे। देवताओं के प्रति, मंत्र के प्रति, तीर्थ के प्रति और गुरू के प्रति श्रद्धा से जुड़ोगे, तब फल मिलेगा। यह आपके हाथ में है कि आप बुद्धि से जुड़ते हैं, कि श्रद्धा से जुड़ते हैं। अगर मेरे प्रति श्रद्धा नहीं है तो कोई लाभ नहीं दे पाऊंगा आपको।

यदि आपका मुझ पर **प्रेम** है, **श्रद्धा** है, तो ही आप कुछ प्राप्त कर पाएंगे। विश्वास तो करना पड़ेगा ऐसी कौन सी चीज है जीवन में, कि आपने कहा, और हुआ। ये तो आपके जीवन के भोग हैं, और आपके जीवन में केवल **तनाव** है, आपके जीवन में **झूठ**

है, आपके जीवन में **छल** है, **कपट** है, आपने जीवन के इतने साल **छल** और **कपट** में व्यतीत किये और आप चाहते हैं कि गुरू जी सब ठीक कर लें,... तो ऐसा गुरूजी नहीं कर सकते। दो मिनट में भी ठीक हो सकता है, यदि आप पूर्ण रूप से समर्पित हों।

एक पूर्ण अनजान लड़की, 19 साल की लड़की जिसने अभी जीवन देखा ही नहीं उससे हम शादी करते हैं। मैं अगर करोड़पति हूं और उस लड़की को देखा नहीं जिन्दगी में, तो शादी की, चार फेरे किये और ज्योहि घर में लाता हूं सारे घर की चाबियां उसे दे देता हूं। पति अपनी तिजोरी की चाबी दे देता है कि यह तिजोरी की चाबी है यह ले इसमें हीरे हैं, जवाहरात हैं। इस लड़की पर एकदम से कितना विश्वास हो जाता है! यह विश्वास हो जाता है कि यह लड़की मुझे धोखा नहीं देगी। यह मुझसे जुड़ी रहेगी। यह एक अनजान व्यक्ति से किस प्रकार से एकदम पांच मिनट में विश्वास कायम हो सकता है?... और विश्वास होगा, तो ही फल मिल सकता है। यदि आपका विश्वास गणपति पर या लक्ष्मी पर होगा, तो ही फल मिल सकता है, यदि आपका विश्वास गणपति पर या लक्ष्मी पर नहीं है तो आप 5 हजार साल भी लक्ष्मी की साधना करते रहें, आपको कुछ नहीं मिल सकता। इसलिये विश्वास आपके अन्दर आवश्यक है।... तो विश्वास कैसे बने? विश्वास तो करना ही पड़ेगा।

देवताओं ने आपको जन्म दिया है, शरीर दिया है, भारतवर्ष दिया है, शरीर में एक जीवन है, जो कुछ दिया है, कम से कम उसके प्रति तो कृतज्ञ बनें। हम हर समय कोसते रहते हैं **देवताओं** को और अपने आपको तो उससे जीवन में पूर्णता नहीं मिल सकती। अगर मैं अपने जीवन में **श्रद्धा** के माध्यम से सब कुछ प्राप्त कर सकता हूं तो आपको भी उपदेश दे सकता हूं। अगर मैं 19 साल हिमालय में रह सकता हूं तो मैं आपको भी बता सकता हूं कि यह मंत्र सही है। मैं कोई बिना पढ़ा लिखा मनुष्य नहीं हूं। मैंने भी पढ़ाई, लिखाई की है। एम.ए. किया है, पी.एच.डी. की है यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहा हूं, फिर भी पूरा जीवन हिमालय में व्यतीत किया है और तुमसे ज्यादा दुगुनी उम्र लिये हूं, अधिक अनुभव लिये हूं और इसीलिये तुमसे कह रहा हूं कि मंत्रों में ताकत है, क्षमता है और उनके माध्यम से, मैं एक अकिंचन ब्राह्मण अगर समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर सकता हूं तो आप भी प्राप्त कर सकते हैं। मैंने अपना ही उदाहरण लिया।

यह एक बीज था, छोटा सा बीज एक बीज की कोई **हिम्मत** नहीं होती। इतना सा अगर बीज है, हम मुट्ठी में बंद करें तो मुट्ठी में बंद हो जायेगा। मगर वह बीज जब जमीन में गाड़ते हैं और उसे खाद पानी देते हैं तो चार पांच साल में **विशाल पेड़** बन जाता है। बड का पेड़ बन जाता है और उसके नीचे 5 सौ व्यक्ति बैठ सकते हैं। उस बीज में इतनी ताकत थी, कि एक पेड़ बन जाये।

मैं भी एक बीज था, जमीन में गड़ा, खाद पानी मिला, तकलीफ आई, मगर मैं अपनी क्षमता के साथ उस पथ से जुड़ा रहा। आज मैं वह वृक्ष बना और मेरे **सैकड़ों हजारों साधु संन्यासी शिष्य** हैं, पूरे भारत वर्ष में शिष्य हैं। मैं बीज से पेड़ बना, तो आप भी बन सकते हैं।

मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि अगर एक व्यक्ति इस रास्ते पर चलकर **सफलता** प्राप्त कर सकता है तो तुम भी कर सकते हो। मगर मुझे विश्वास था उस खाद पर, पानी पर, जमीन पर कि ये खाद, पानी, हवा, मुझे पेड़ बनाएंगे। अगर मैंने संन्यासी-जीवन लिया है तो उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त की है। मैं हिला ही नहीं, विचलित नहीं हुआ, डगमगाया नहीं।

मैं भी नौकरी में था, प्रोफेसर था, अच्छी तनख्वाह ले रहा था उस समय भी 10000 मिल जाते थे। आज से पच्चीस तीस साल पहले, दस हजार की बहुत कीमत होती थी। मगर मैंने ठोकर मारी उसको कि यह जिन्दगी नहीं हो सकती। ऐसे प्रोफेसर तो पूरे भारत में एक लाख होंगे। इससे जिन्दगी पार नहीं हो सकती। मुझे कुछ हट कर करना पड़ेगा या तो मिट जाऊंगा या कर जाऊंगा।

यदि मैं ऐसा बन सकता हूं, तो तुम्हें सलाह देने का हक रखता हूं। यदि मैं नहीं बनता, मैं यों ही बैठा रहता तो तुम्हें कहने का हक नहीं रख सकता था। इस रास्ते पर चलकर यह हक प्राप्त कर सकता हूँ, यदि मैं **सिद्धियों** के माध्यम से **असंभव** को **संभव** कर सकता हूं तो तुम्हें सलाह दे सकता हूं कि तुम भी कर सकते हो।

मेरा विश्वास है, आपको विश्वास नहीं है, मेरी गुरू के प्रति असीम श्रद्धा है। यदि गुरू मुझे कह दें कि सब छोड़ कर चले आओ तो मैं पत्नी से मिलूंगा ही नहीं। सीधा यहीं से रवाना हो जाऊंगा, क्योंकि मेरी आस्था है।

मैंने जिस समय संन्यास लिया, उस समय शादी हुये बस 5 महीने हुए थे। पांच महीनों में मैं छोड़ कर चला गया। पत्नी की क्या हालत हुई होगी, आप कल्पना कर सकते हो। मगर मैंने कहा, ऐसे तो जिन्दगी नहीं चलेगी। ठोकर तो लगानी पड़ेगी या तो उस पार जाऊंगा या डूब जाऊंगा या मामूली ब्राह्मण बन कर रह जाऊंगा। हिमालय में जाऊंगा तो या तो समाप्त हो जाऊंगा या कुछ प्राप्त कर लूंगा।

आप, पंडित, पुरोहित और ब्राह्मण; पोथी में पढ़कर उपदेश देते हैं। मैंने जो कुछ **जीवन** में सीखा है, वह **उपदेश** दे रहा हूँ, मैं आँखों देखी बात कर रहा हूँ, पोथियों की देखी बात नहीं कर रहा हूँ। पोथियों में सही लिखा है या गलत लिखा है, वह अलग बात है। हो सकता है उनमें गलत भी लिखा हो, हो सकता है सही भी लिखा हो। मगर मैं देखना चाहता था छानकर, कि यह सब क्या है?

मैं केवल **सत्य** तुम्हारे सामने रखना चाहता हूँ, क्योंकि तुम मेरे **शिष्य** हो और मैं तुम्हें शिष्य बना रहा हूँ और **दीक्षा** दे रहा हूँ और दीक्षा देने के बाद भी मेरा **अधिकार** समाप्त नहीं हो जाता कि दीक्षा दी और आप अपने घर, मैं अपने घर। तुम्हारी डयूटी है कि तुम मुझसे जुड़ोगे। तुम्हारी शिकायत आती है कि गुरू जी, मैं जोधपुर आया, पांच दिन रहा, आप मुझसे मिले ही नहीं। कोई जरूरी नहीं कि पांच दिनों में मिल जाऊं आपको, ऐसा कोई ठेका नहीं ले रखा है। मैं आपको अभी कह रहा हूं, ऐसा नहीं है कि आप आये और मैं दरवाजा खोल कर, सब कुछ छोड़कर तुमसे गले मिल लूं। यह जरूरी नहीं है कि जो आये उससे मिलूं, मुझे भी अपने घर का कामकाज देखना पड़ेगा, घर में मेहमान आयेंगे उनको भी देखना पड़ेगा।

ऐसा नहीं है कि आपके प्रति **अश्रद्धा** है। आपके प्रति प्रेम में कमी नहीं है, मेरे हृदय के दरवाजे हमेशा खुले हैं। मगर आप **आलोचना** करने लग जाये कि गुरूजी पांच घंटे मिले ही नहीं, तो कोई जरूरी नहीं है कि मैं मिलूं। आप कहें कि गुरू जी के पास गया, पांच रूपये भेंट किये मेरी लड़की की शादी हुई ही नहीं। अब पांच रूपये हनुमान जी को चढ़ा दें, हनुमान जी मेरी लॉटरी

निकाल दें, हनुमान जी नहीं निकाल सकते तुम्हारी लॉटरी। यों लॉटरी लगती, तो ये बिरला और 25 फैक्टरी खोल लेते।

हनुमान जी इसलिये नहीं बैठे कि तुमने पांच रूपये का सिन्दूर चढ़ाया और तुम्हारी पांच लाख की लॉटरी निकल गई, तुम्हारी लड़की की शादी हो गई। यह तुम्हारी गलतफहमी है कि हनुमान जी बैठे-बैठे यह करते रहेंगे। ऐसा संभव नहीं होता। तुम आये, तुमने गुरू जी के पांव दबाए और कहा, गुरूजी! मेरी लड़की की शादी नहीं हो रही है।

अब मैं तो यही कहूंगा कि हो जाएगी, चिंता मत कर।

मगर इसके बाद अनुभव करना होगा कि मैंने दिया क्या हैं? प्रश्न पैसे का नहीं है। तुम्हारी तरफ से मुझे **प्रेम** मिलना चाहिये, **श्रद्धा** मिलनी चाहिये, **अटैचमेंट** मिलना चाहिये, **समर्पण** मिलना चाहिये और सबसे बड़ी बात, आप में **धैर्य** होना चाहिये। आप में धैर्य है ही नहीं और फिर तुम **आलोचना** करो! आलोचना करने से जीवन में पूर्णता नहीं प्राप्त हो सकती। आलोचना तो कोई भी, किसी की भी कर सकता है। मैं तुम्हारी आलोचना कर सकता हूं कि तुम्हारी मूंछ अच्छी नहीं है, तुम्हारे बाल अच्छे नहीं हैं, बस **आलोचना** हो गई। ये ही आपके गुण भी हो सकते हैं, परंतु जिसे आलोचना करनी है, वह आलोचना ही करेगा।

मैं तुम्हारी आलोचना का जवाब दे रहा हूँ और इस बात की मुझे परवाह है ही नहीं। जीवन में मैं तलवार की धार पर चला हूं और आगे भी चलूंगा। न मैं कभी झुका हूं और न कभी झुक सकता हूं। क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारे गुरूजी बिल्कुल लुंज पुंज बेकार से, ढीले ढाले हों और हरेक के सामने झुकें! क्यों झुकें? यदि मैंने व्यर्थ में कोई काम किया है, व्यर्थ में कोई चापलूसी की है, व्यर्थ में कोई पैसा लिया है, तो मैं झुकूंगा। मैं अगर तेज धार पर रहता हूं, तो तुम्हें भी यही सलाह देता हूं कि शिष्य होकर अपनी मर्यादा में तेज धार में रहो। संसार में तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता, तुम्हें डर ही नहीं किसी का।

मैं तुम्हें **दीक्षा** देता हूं तो इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हारा मेरा सम्बन्ध समाप्त हो गया। अगर तुम मेरे शिष्य हो, तो तुम्हें मजबूती के साथ खड़ा होना पड़ेगा समाज में। **कायरता** से और **आलोचना** से जिन्दगी नहीं जी जाती। तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ सकता ही नहीं है, बिगाड़ेगा तो मैं तुम्हारे साथ में खड़ा हूं, कहीं कोई **तकलीफ** होगी तो मैं जिम्मेदार हूं। आप एक बार मुझे परख करके देखें, टैस्ट तो करके देखें! आप आये यहां मेरे पास और टैस्ट तो करें, आप मुझसे मिलिये तो सही। मैं आपसे नहीं मिलूं, आपका काम नहीं करूं, तो मेरी जिम्मेदारी है।

मगर तुम्हें **विश्वास** बनाना पड़ेगा, **श्रद्धा** रखनी पड़ेगी। शादी होने के दस साल बाद भी पत्नी से लड़ाई होगी मगर विश्वास बना रहेगा, विश्वास नहीं टूट सकता। विश्वास टूटने से काम नहीं चल सकता।

इसलिये **देवताओं** के प्रति एक बार विश्वास पैदा करें, एक बार मंत्र जप करें और आप मंत्र जप करेंगे तो सफलता मिलेगी ही। मैने आपको मंत्र दिया लक्ष्मी का और आप घर गये और मंत्र जप किया 5 दिन और कहने लगे कि सोने की वर्षा तो हुई ही नहीं, यह मंत्र तो झूठा है, गुरूजी ने कहा था पर हुई नहीं वर्षा, गुरूजी बेकार हैं।

ऐसा नहीं हो सकता। ऐसा हो भी सकता है, परन्तु **श्रद्धा** चाहिये, विश्वास चाहिये, धैर्य चाहिये। **विश्वामित्र** इतना तेजस्वी बालक था, उसके बावजूद भी उसके घर में लक्ष्मी थी ही नहीं, **दरिद्र** था, तुम से ज्यादा **दरिद्र, अनाथ।** उसके बाद उसने कहा कि मेरे मंत्रों में अगर ताकत है तो लक्ष्मी को अपने घर में लाकर खड़ा करूंगा ही, हर हालत में खड़ा करूंगा। ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं मंत्र जप करूं और लक्ष्मी नहीं आये! एक अटूट विश्वास था। अपने आप पर विश्वास था।... और पहली क्लास का व्यक्ति एम.ए. की किताब नहीं पढ़ सकता। मैं अगर किताब दे दूं एम.ए. की कीट्स की, मिल्टन की या शेक्सपीयर की और तुम्हें कहूं कि पढ़ो, तो तुम्हें कुछ समझ में ही नहीं आयेगा। पहले आप पहली क्लास में पढ़ेंगे, फिर दूसरी पढ़ेंगे, फिर तीसरी पढ़ेंगे, फिर मैट्रिक करेंगे, बी.ए. करेंगे, फिर एम.ए करेंगे तो फिर किताब समझ में आयेगी। अब **साधना** में तुम पहली क्लास में हो और वह साधना एम.ए. लैवल की है। उसके लिए 16 साल मेहनत करनी पड़ेगी, तब समझोगे।

पहली क्लास का बच्चा ए, बी, सी, डी तो पढ़ लेगा किन्तु उससे मिल्टन की किताब तो नहीं पढ़ी जायेगी। अगर 16 साल मेहनत करने से साधना सिद्ध होती है तो एक दिन में कहां से हो जायेगी? तुम कहोगे, लक्ष्मी ने आकर घुंघरू बजाये ही नहीं, पांच दिन हो गये लक्ष्मी आई ही नहीं। गुरूजी ने कहा कि आयेगी, पता नहीं क्या हुआ? और फिर तुम कहोगे, गुरूजी झूठे और मंत्र झूठा, लक्ष्मी झूठी, तीनों झूठे हो गये और तुम सत्य हो गए। एक बार आवाज दोगे, तो पत्नी भी नहीं आयेगी,... तो लक्ष्मी कहां से आएगी? मेरे कहने का तात्पर्य है कि **धैर्य** चाहिये। एक बार साधना करो, नहीं सफलता मिलेगी तो दूसरी बार करो, पांच बार करो। कभी तो सफलता मिलेगी ही, क्योंकि मंत्र सही है। इस मंत्र के माध्यम से जब मैंने सफलता पाई है और शिष्यों ने सफलता पाई है तो तुम्हें भी सफलता मिलेगी ही।

...पर एक **विश्वास** कायम रखना पड़ेगा और जीवन में इन मंत्रों से वह सब कुछ प्राप्त होता ही है, जो कुछ मैं कहता हूँ कि लक्ष्मी साधना के माध्यम से धन मिलेगा, कर्जा कटेगा, ऐसा होता ही है, बस तुम में धैर्य कम है। तुम चाहते हो एकदम से रेडिमेड फूड आया, खाया और रवाना हो गये। ऐसा नहीं है। तुम बाजार में जाकर रेडिमेड फूड खाओ और पत्नी खाना बनाकर खिलाये, उसमें डिफरेंस होगा। दीक्षा का तात्पर्य है, मैं तुम्हें कह रहा हूं उस रास्ते के लिए, मैं **तेजस्विता** दे रहा हूं, अब तुम **साधना** कर सकते हो। तुम सफलता पाओगे, धैर्य के साथ करने पर विश्वास के साथ करने पर।...और तुममें धैर्य है?... मैं यह भी कह रहा हूं कि तुममें **धैर्य** की कमी है, तुम्हारे आस-पास के लोग **गड़बड़** हैं। वे तुम्हें गलत गाइड करते हैं। तुम तो सही हो, पर वे कहते हैं- और तुम गए थे, क्या हुआ?

तुम कहोगे- लक्ष्मी का मंत्र लाया। तुम करोगे लक्ष्मी मंत्र पांच दिन और लक्ष्मी आयेगी नहीं, तो वो कहेंगे- ले, अब क्या हुआ? हम तो पहले ही कह रहे थे कि सब झूठ है और तुम्हारा माइंड खराब हो जायेगा। तुम्हारा **विश्वास खत्म** हो जायेगा। किसी के घर का सत्यानाश करना हो तो एक मूल मंत्र बता देता हूं किसी के घर जाइये और कहिये- कल भाभी जी कहां जा रहीं थीं, चुप-चाप एक गली में घुसी थीं, फिर आधे घंटे में एक घर से निकली थी। चलो जाने दो जाने दो, कुछ नहीं।

अब उस पति के माइंड में घूमता रहेगा। वह पूछेगा पत्नी से, कहां गई थी और वह कहेगी कहीं नहीं गई थी। बस वो कितना ही समझाये पति के दिमाग से कीड़ा निकलेगा ही नहीं। वो कहीं भी जायेगी, वह पीछे-पीछे जायेगा। बस पूरा जीवन उनका तबाह हो

जायेगा। बस किसी ने कह दिया इस मंत्र से क्या होगा? और तुम्हारा माइंड खराब हो गया। अब चार दिन तुम्हारा माइंड खराब रहेगा कि मंत्र बेकार है, गुरू जी बेकार है। तुम खराब नहीं हो, वे आस-पास के लोग खराब हैं वे न तो खुद कुछ करते हैं और न तुमको करने देंगे। उनका काम ही यही है, आलोचना करना, चाहे तुम्हारे चाचा हों या ताऊ हों, या सम्बन्धी ही हों। जो जिन्दगी भर कुएं में रहे वे तुम्हें **मानसरोवर के आनन्द** में देखना नहीं चाहते।

तुम्हारे अपने अन्दर ताकत है, तो तुम सफलता पाओगे। मेरे साथ भी यही घटना घटी। मैंने सन्यास लिया तो मुझे सब ने कहा, क्यों जा रहा है? क्या फायदा है? सब ने सलाह दी- यहीं रूको, क्यों दस हजार की नौकरी को ठोकर मार रहे हो, तुम्हारे जैसा मूर्ख दुनिया में नहीं होगा।

मैंने कहा, कोई बात नहीं, मूर्ख हूं तो मूर्ख ही सही। भले ही समुद्र में डूब करके मर जायेंगे, लेकिन कूद कर तो देखेंगे। पर पांव तुम्हारा मजबूत रहेगा तो तुम सफलता पाओगे। तुम्हारे पांव कमजोर हैं, तुम औरों की बातों पर विश्वास करके चलोगे तो तुम्हारी साधना बर्बाद हो ही जायेगी। आप कमजोर हैं तो आप इस रास्ते पर चलिये ही मत, यह आपका रास्ता है ही नहीं। आप अपनी पैंट पहनिये और नौकरी पर जाइये, चुपचाप आँख नीची करके घर आइये, पत्नी थैला देकर कहे की सब्जी लेकर आइये, चुपचाप सब्जी लाकर घर में रखिये, पत्नी जब भी हल्ला करे तो चुपचाप रहिये और रात को सो जाइये। यह रास्ता सीधा है, इसमें खतरा कम है।

...और मैं जो रास्ता बता रहा हूँ, उसमें **खतरा** बहुत है। यह बहुत **तेज तलवार की धार** की बात है, **हिम्मत** की बात है और **उच्चता, श्रेष्ठता, सफलता** की बात है। तुम्हारे जैसे लोग और नहीं होंगे। तुम **अद्वितीय** बनोगे। तुम अपना जीवन मुझे सौंपो, मैं तुम्हें अद्वितीय बना दूंगा, ऐसा पृथ्वी पर कोई नहीं होगा। विश्वामित्र ने ऐसा कहा दशरथ को, पर साथ ही यह भी कह दिया कि जरूरी है कि राम, लक्ष्मण मुझे ही गुरू मानें, मेरा ही कहना मानें। दशरथ तुमसे मिलने भी नहीं आये, न तुम मिलने जाओगे और दशरथ ने कहा- मैं इनसे मिलने नहीं आऊंगा और न कोई घर का, इन्हें मिलने आयेगा। ये मेरे घर तब तक वापस नहीं आयेंगे जब तक तुम पूरा संस्कार नहीं कर लोगे।... मगर आप इन्हें अद्वितीय बनाये और मैं इन्हें मिलने नहीं आऊंगा, चाहे बहुत प्रिय **राम** हैं और बहुत प्रिय **लक्ष्मण** है!

और ऐसा ही दशरथ ने किया। मैं भी वही बात तुम्हें कह रहा हूं कि परिवार की चिंता तुम मत करो औरों पर विश्वास मत करो, जो मैं कह रहा हूं उस बात पर विश्वास करो, जब तक मैं तुम्हें अद्वितीय न बना दूं।... और मैं तुम्हें अद्वितीय बना दूंगा, यह तुम्हारे मेरे बीच **वचनबद्धता** है। गारंटी के साथ बनाऊंगा, यह मेरा विश्वास है।

आप कल्पना कीजिये, राजा दशरथ के बुढ़ापे में संतान हुई और वह केवल दस साल का लड़का राम, उसे जंगल में भेज दिया जहां पर **राक्षस** बैठे थे, जहां **तकलीफें** थी। राजा के महलों में रहने वाला राजकुमार, जंगल में खाक छाने और विश्वमित्र जैसे क्रोधी व्यक्ति के साथ में। **दशरथ** को **विश्वास** था कि यहां रहने पर तो केवल एक राजकुमार बनकर रह जायेगा, वहां जायेगा तो **भगवान** बन जाएगा।

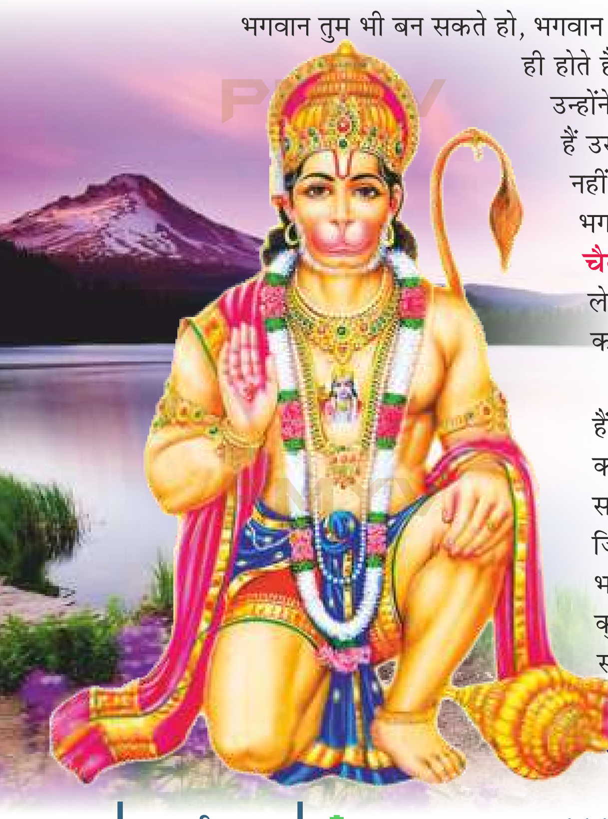

भगवान तुम भी बन सकते हो, भगवान कोई पेट में से पैदा नहीं होते, अपने **कार्यों से** भगवान बनते हैं। पैदा तो सब एक से ही होते हैं, चाहे आप हों या **राम** हों, या **लक्ष्मण** हों, या **मैं** हूं, चाहे **कृष्ण** हों। उसके बाद उन्होंने **कितनी रिस्क** ली है, कितनी जिन्दगी में **तकलीफ** उठाई है, कितने **खतरे** उठाये हैं उससे वे भगवान बनते हैं। अद्वितीय आप भी बन सकते हैं, मगर पैसों के माध्यम से नहीं। पैसों के माध्यम से भगवान!... तो आज बिड़ला और टाटा भगवान हैं ही। ऐसे भगवान नहीं बन सकते। भगवान बनने का रास्ता है तुम्हारी **नैतिकता,** तुम्हारी **चैतन्यता,** तुम्हारे **मंत्र,** तुम्हारे **ज्ञान,** तुम्हारी **चेतना** और **देवताओं** को अपने साथ लेने की क्षमता। जीवन के दो हेतु हैं, दो तरीके हैं और दोनों के ही माध्यम से जीवन को पार किया जा सकता है। चाहे आप हों या मैं हूं, चाहे **साधु** हों या **संन्यासी** हों।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो घिसी- पिटी जिन्दगी जी कर पूरा जीवन व्यर्थ कर देते हैं। ऐसे 60 प्रतिशत लोग हैं। उनमें हिम्मत, जोश होता ही नहीं।... और जो चैलेंज लेने का भाव नहीं होता और जो चैलेंज नहीं ले सकता वह जीवन में **सफल** नहीं हो सकता, जीवन में **सफलता** के लिए आवश्यक है, किसी बात का **चैलेंज** लें। आप जिस भी क्षेत्र में जायें उच्च कोटि के बनें। साधक बनें तो ऐसा साधक बनें कि पूरा भारत आपको याद करे। ज्योतिषी के क्षेत्र में हो तो आप नम्बर वन ज्योतिषी हों, जो कुछ करें उच्च हो।...और ऐसा होने में रिस्क बहुत है और जो खतरों से जूझ नहीं सकता वह मनुष्य नहीं हो सकता, वह पशु है।

हमारे जीवन का सार एक आधार भोग है, एक मोक्ष है। **एक रास्ता मोक्ष की ओर जाता है**- ये **साधु-संन्यासी, योगी, तपस्या** करते हैं, साधना करते हैं। अब इनमें से कितने साधु सही होते हैं, मैं नहीं कह सकता। भगवा कपड़े पहनने से कोई

साधु नहीं होता, लंबी जटा बढ़ाने से कोई साधु नहीं होता। **साधु तो वह होता है जिसमें आत्मबल हो, जूझने की शक्ति हो, जो देवताओं को अपनी मुठ्ठी में रखने की क्षमता रखता हो।**

साधयति सः साधु

जो अपने शरीर को, मन को साध लेता है वह साधु है।

जो खुद ही हाथ जोड़कर कहे- तुम मुझे दस रूपये दे दो, तुम्हारा कल्याण हो जायेगा, वह साधु नहीं हो सकता। उन लोगों में है ही नहीं **आत्मबल**। आत्मबल एक अलग चीज है, जो लाखों लोगों की भीड़ में खड़े होकर चैलेंज ले सकता है। अगर मंत्र क्षेत्र में हो तो कह सकता है कि संसार में कोई मेरे सामने आकर खड़ा हो, मैं चुनौती स्वीकार करता हूँ, ऐसी **हिम्मत**, ऐसी **क्षमता**, ऐसी आँख में चिंगारी होनी चाहिये। उसकी बोली में क्षमता होनी चाहिये। ऐसा व्यक्ति सही अर्थों में साधु भी हो सकता है और मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है।

मोक्ष प्राप्त करना इतना आसान नहीं है और मोक्ष प्राप्त करने के लिए जंगल में जाने की जरूरत नहीं हैं, हिमालय में जाने की भी जरूरत नहीं है। **जो सभी बंधनों से मुक्त हो, वह मोक्ष है।**... और आपके जीवन में कोई बंधन है। लड़की की शादी करनी है, बीमारी से छुटकारा पाना है। घर में कलह है- ये सब बंधन है। उन बंधनों से मुक्त होना ही मोक्ष कहलाता है। मोक्ष का मतलब यह नहीं, कि मरने के बाद जन्म ले ही नहीं। हम तो कहते हैं, वापस जन्म लें, वापस लोगों की सेवा करें, चैलेंज स्वीकार करें और **अद्वितीय** बनें। हम क्यों कहें कि हम वापस जीवन नहीं चाहते। हम हजार बार जन्म लेना चाहते हैं, हजार बार जीवन में चैलेंज लेना चाहते हैं और जीवन में सफल होना चाहते हैं। **मोक्ष का अर्थ यह नहीं कि पुनर्जन्म हो ही नहीं।** मोक्ष का अर्थ है, हम जीवन में सारे बंधनो से मुक्त हो जाये।... और ऐसा व्यक्ति गृहस्थ में रहते हुए भी साधु हो सकता है, भगवान कपड़े पहने हुए भी गृहस्थ हो सकता है। साधु हो और उसकी आंख ठीक नहीं हो, गंदगी हो आंख में, उसमें लालच की वृत्ति हो तो वह गृहस्थ से भी गया बीता व्यक्ति है। कम से कम यह तो है ही हम गृहस्थ हैं, हमारी आंख गंदी हो सकती है, हम कु दृष्टि से देख सकते हैं। मगर वे साधु हैं, अगर वे ऐसे लालची होंगे तो साधुत्व ही समाप्त हो जायेगा। इसलिये साधुओं के प्रति हमारे जीवन में आस्था कम हो गई है। इसलिये उनके प्रति सम्मान कम हो गया है।

या तो एक रास्ता है मोक्ष का और दूसरा रास्ता है भोग का। भोग का मतलब है कि हम गृहस्थ बनें, हमारी पत्नी हो, पुत्र हों, बंधु हों, बांधव हों, यश हो, सम्मान हो, पद हो, प्रतिष्ठा हो और हम अपने आप में अद्वितीय बनें। यदि ऐसा नहीं कर सकते तो फिर घिसा-पिटा जीवन जीने का मतलब ही नहीं है।

आपके मन में कभी चेतना पैदा नहीं होती कि कुछ **अद्वितीय** करूं! इसलिये पैदा नहीं होती कि आपके जीवन में उत्साह समाप्त हो गया है, तुम्हारे जीवन में गुरू रहे नहीं जो तुम्हें कह सकें कि यह सब **गलत** है। जीवन जीने के लिये तो एक चुनौती का भाव होना चाहिये, एक आकाश में उड़ने की क्षमता होनी चाहिये। एक तोता है, पिंजरे में बंद है। चांदी की शलाकाये बनी हुई हैं और बड़ा सुखी है, उसको तकलीफ है ही नहीं, खतरा है ही नहीं। उसको अनार के दाने खाने को दे रहा है मालिक, बोल मिट्ठू राम-राम, वह कहता है- राम-राम। उसको बाहर निकालते हैं, नहलाते हैं, पंख पोंछते हैं और वापस पिंजरे में बंद कर देते हैं।... और एक तोता है, जो पचास साठ किलोमीटर उड़ता है, उसे अनार के दाने खाने को नहीं मिलते, उसके पैरों में घुंघरू नहीं बंधे, मगर वह जो उसे आजादी है, वह उस तोते को नहीं मिल सकती जो चांदी के पिंजरे में बंद है। वह **आनन्द** उस पिंजरे में बंद तोते को नहीं मिल सकता, और तुम भी वैसे ही पिंजरे में बंद तोते हो। तुम्हारें मां-बाप, भाई-बहन ने तुम्हें पिंजरे का एक तोता बना दिया है और उसमें आप बहुत खुश हैं। आपको हरी मिर्च और अनार के दाने खाने को मिल रहे हैं और कभी आप उस तोते को पिंजरे के बाहर निकालिये, वह तुरन्त उस पिंजरे में वापस घुस जायेगा। वह बाहर खतरा महसूस करता है कि मर जाऊंगा, कोई बिल्ली खा जाएगी।

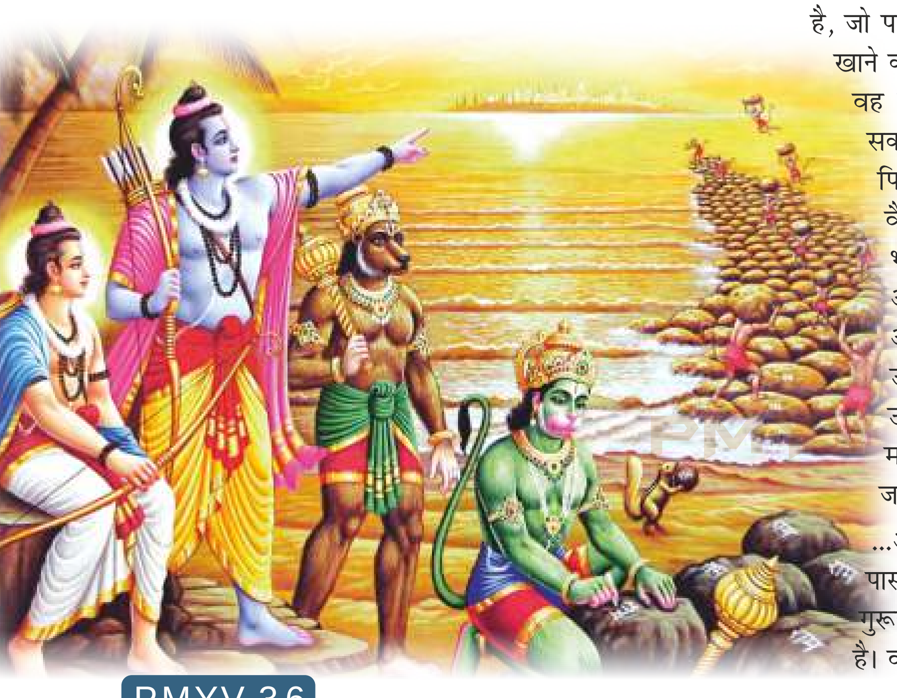

...और तुम भी एक दो मिनट निकाल कर गुरूजी के पास आते हो और फिर वापस अपने घर में घुस जाते हो। गुरूजी ने जो कहा उसमें खतरा है, मंत्र जप सब गड़बड़ है। वापस अपने पिंजरे में घुसे- पत्नी भी खुश, आप भी

खुश। पत्नी को चिंता है कि चला जायेगा गुरूजी के पीछे, साधु बन जायेगा, कोई भरोसा नहीं है। पत्नी कहती है, तुम्हें क्या **तकलीफ** है? चाचा भी कहते हैं, मामा भी कहता है, मां भी कहती है और आप वापस उस जीवन में घुस जाते हैं, जो पूरी जिन्दगी की गुलामी है। तुमने कभी आकाश को नापने की हिम्मत नहीं की, इसलिये तुम वह आनन्द नहीं उठा सकते। उसके लिये तो तुम्हें चैलेंज उठाना पड़ेगा जीवन में। तुमने मानसरोवर में डुबकी लगाई नहीं, तो तुम्हें क्या पता लगेगा कि मानसरोवर की गहराई क्या है, उसका आनन्द क्या है? मैं ऐसा नहीं कह रहा कि तुम गृहस्थ से अलग हट जाओ। गृहस्थ में रहो, मगर **संन्यासी** की तरह रहो। गृहस्थ में रह रहे हो तो इस भाव से, कि मैं संसार में आया हूं और सब अपना खेल, खेल रहे हैं। मैं देख रहा हूं और मुझे तटस्थ रहना है।

मेरे **गृहस्थ शिष्य** हैं, तो मुझे उन्हें बताना ही होगा कि कैसे जीवन व्यतीत करना है। मैं उन्हें संन्यासी नहीं बना सकता। संन्यासी बनने के लिए और साधना करने के लिए कोई **हिमालय** में जाने की जरूरत नहीं है। हम गृहस्थ में रहते हुए भी उन **साधनाओं** को कर सकते हैं...और भोग का अर्थ है– **धन, ऐश्वर्य, पूर्णता**...और उसका आधार है **लक्ष्मी**। बिना लक्ष्मी के गृहस्थी नहीं चल सकती। यदि तुम्हारे घर में आटा नहीं है तो तुम ध्यान लगाकर नहीं बैठ सकते। उसके लिए भी जरूरी है, तुम पहले ऐश्वर्यवान बनो। इतना धन हो कि तुम्हें याचना करने की जरूरत न पड़े। इतना धन हो कि सारी समस्याओं से मोक्ष प्राप्त कर लें। जब ऐसी स्थिति बनेगी तो तुम ध्यान भी कर सकोगे साधना भी कर सकोगे। मगर लक्ष्मी पहला आधार है और उसके बिना आपके जीवन में **पूर्णता** आ नहीं सकती।

जीवन में अद्वितीय बनने के लिए केवल छः महीने बहुत हैं, पचास साल जरूरी नहीं है। अगर छः महीने पूरी क्षमता के साथ **साधना** करें तो हम पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं, सफलता प्राप्त कर सकते हैं, अपने जीवन में **देवताओं** को देख सकते हैं परन्तु उसके लिए एक चैलेंज, एक क्षमता आपमें आनी चाहिये, प्रत्येक गांव में गुरू पहुंचे यह चैलेंज उठाना चाहिये, जिससे आप लाभ उठा सकें और औरों को भी लाभ हो सके।

आपके **मन** में लोगों ने एक **भय** पैदा कर दिया है कि **साधना** करोगे तो बर्बाद हो जाओगे, साधु बन जाओगे, साधना में सफलता मिलेगी नहीं।...और तुम्हारे मन में जो भय है तो पांच सौ गुरू भी आ जाये तो वे इस भय को नहीं मिटा सकते। किसी पत्रकार ने मुझसे पूछा कि क्या पूर्व जन्म होता है? मैंने कहा– होता है, आपका पिछला जीवन मुझे याद है, बिना पिछले जन्म के सम्बन्ध के आप मुझे जान ही नहीं सकते थे। यह संभव ही नहीं था। पिछले जीवन के सम्बन्ध ही इस जीवन में बनते हैं। मैं पिछले जीवन में भी आपका गुरू था और इसीलिये कहता हूं कि **साधना का रास्ता** ही आपका रास्ता हैं और चैलेंज के साथ साधना करोगे तो लक्ष्मी तो एक मामूली बात है, **सम्पूर्ण देवता** आपके सामने खड़े हो सकते हैं। जब **राम** और **कृष्ण** और **बुद्ध** के सामने खड़े हो सकते हैं तो आपके सामने भी खड़े हो सकते हैं।

शंकराचार्य ने कहा– **अहं ब्रह्मास्मि।**

मैं खुद ब्रह्म हूं।

और मैं भी वही कहता हूं, तुम खुद ब्रह्म हो। मगर तब, जब तुम्हें अपना पूरा **ज्ञान** हो। अगर हम जीवन में **चैलेंज** लेकर आगे बढ़ते हैं तो निश्चय ही हम सफलता प्राप्त करते हैं और ऐसे सैकड़ों उदाहरण मेरे सामने हैं कि उन **शिष्यों** ने एक चैलेंज लिया और वे सफल हुए। मेरे हृदय पटल में तो हजारों नाम हैं जिन्होंने **धारणा** को लेकर कार्य किया और सफलता प्राप्त की। आप किस प्रकार का जीवन जीना चाहते हैं वह तो आप पर निर्भर है। मैं तो आपको सिर्फ समझा सकता हूं, मैं आपको अहसास करा सकता हूं कि जीवन का **आनन्द** क्या है? और साधना द्वारा हम उस स्थान पर पहुँच सकते हैं जहां विरह होता ही नहीं। हम आँख बंद कर चिंतन करते हैं तो **गुरू** हमारी आँखों के सामने साक्षात् हो जाते हैं। साधना के माध्यम से हम **प्रभु** के चरणों में पहुँच सकते हैं। आपके जीवन में ऐसा **आनन्द** हो, ऐसा **संतोष** हो, आपके जीवन में **पूर्णता** हो, आप भी ध्यान लगाने कि प्रक्रिया में संलग्न हो सकें, अपने **इष्ट** के दर्शन कर सकें और अपने आपको पूर्ण रूपेण **गुरू चरणों** में समर्पित करते हुए उस ज्ञान को प्राप्त कर सकें जो हमारे पूर्वजों की धरोहर थी, ऐसा ही मैं आप सबको हृदय से **आशीर्वाद** देता हूँ।

परम पूज्य सद्गुरूदेव
कैलाश श्रीमाली जी

रूद्रशः महामृत्युंजय शक्तिपात दीक्षा

जब **मन** और **शरीर** में **पीड़ा** होती है तो **एकमात्र शिव** ही अपने **रूद्र** रूप में उन **पीड़ाओं, व्याधियों** का हरण कर साधक के सभी **रूदन** समाप्त कर **भक्त के चित्त** में प्रसन्नता का संचार करते हैं। इसीलिये रूद्र को **सृजनकर्त्ता** और **संहारकर्त्ता** कहा गया है। भगवान शिव ही रूद्र रूप में साधक के शरीर और मन की **दुर्बलता** दूर करते हैं, उसके जीवन के दुःखों का नाश करते हैं और उसमें शुद्ध भावों का संचार कर **श्रेष्ठताओं** से युक्त बनाते हैं।

इसीलिये भगवान रूद्र की प्रार्थना में कहा गया है–

सर्वो वै रूद्रस्तस्मै रूद्राय नमो अस्तु, पुरूषो वै रूद्रः सन्महो नमो नमः।

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्, सर्वो ह्येष रूद्रस्तस्मै रूद्राय नमो अस्तु।

जो **रूद्र उमापित** हैं, वही सब शरीरों में **जीव रूप में** प्रविष्ट हुये हैं, उनको हमारा प्रणाम। **रूद्र ही पुरूष है, वह ब्रह्मलोक में ब्रह्मा से, प्रजा पतिलोक में प्रजापति के रूप से, सूर्यमण्डल में विराट रूप में तथा देह में जीव रूप से स्थित हैं, उन महान सच्चिदानन्द स्वरूप रूद्र को बारम्बार नमस्कार।**

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरभ्यो घोरघोरतेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रूद्ररूपेभ्यः॥

जो अघोर हैं, घोर है, घोर से भी घोरतर है और जो **सर्वसंहारी रूद्र** रूप हैं, आपके सभी स्वरूपों को नमस्कार है।

मनुष्य जीवन की प्रथम आवश्यकता है, मन और तन का स्वस्थ होना, स्वस्थ शरीर से ही हमारे मन की **वृत्तियां स्वस्थ** होती हैं, स्वस्थ मन से श्रेष्ठ इच्छाओं की उत्पत्ति होती है, श्रेष्ठ इच्छाओं से क्रिया शक्ति में वृद्धि और क्रिया शक्ति से ही श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होती है। इसीलिये शरीर और मन दोनों का स्वस्थ होना अति आवश्यक है, क्योंकि जीवन की प्रत्येक क्रिया इनके द्वारा ही संचालित होती है। साथ ही **स्वस्थ** और **प्रसन्न** व्यक्ति के शरीर में **शक्ति, स्फूर्ति** और **बल** का प्रवाह तीव्र रहता है और उसी से **मन, वचन, कर्म** में एकता रहती है। जब तीनों में एकता का सामंजस्य होता है, तो जीवन **श्रेष्ठमय** बनता है।

स्वः प्रयास से तो मनुष्य निरन्तर प्रयत्न करता है कि उसे **स्वस्थ देह** और **स्वस्थ मन** की प्राप्ति हो, परन्तु इस घोर **भौतिकतावादी** संसार में **विकृतियां** जकड़ ही लेती हैं। **गलत खान-पान, दूषित वातावरण, सामाजिक गरिमा में ह्रास, मर्यादाओं का उल्लघंन, उत्तेजित दृश्य** आदि ऐसे कारण होते हैं, जिनसे तन व मन में अस्वस्थता आ ही जाती है। ऐसे में आवश्यक है कि **चिंतनशील साधक शक्तिमान परमपिता परमेश्वर शिव** से **शक्ति तत्व** ग्रहण कर अपने रोम-प्रतिरोम में आत्मसात करे, क्योंकि एकमात्र शिव का रूद्र स्वरूप ही जीवन के सभी रूदन भाव अर्थात् **व्याधियों, विकृतियों** को जड़ मूल से समाप्त करने वाले देव हैं।

रूद्रशः महामृत्युंजय शक्तिपात दीक्षा से **साधक** जीर्ण-शीर्ण मन-देह से निजात पा लेता है, उसका शरीर **आरोग्यमय चेतना** से आप्लावित होता है, साथ ही मन की अनेक विकृतियां समाप्त हो जाती हैं। जिससे तन-मन में सामंजस्य स्थापित होता है और साधक अपने प्रत्येक क्रिया को पूरी **एकाग्रता** व **श्रेष्ठता** से सम्पन्न कर सभी प्रकार की सफलताओं से युक्त होता है।

न्यौछावर ₹ 1500/-

तीन पत्रिका सदस्य बनाने पर यह दीक्षा उपहार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

इच्छुक दीक्षा प्राप्त करने वाले साधक का नाम एवं पता

नाम ....

....

अपनी फोटो व तीन पत्रिका सदस्य का पूर्ण पता न्यौछावर राशि के साथ कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर भेजें।

मेष

01 से 06 फरवरी तक- शांत मन से अपने सिद्धान्तों का विश्लेषण कर उचित परिवर्तन करें। मौसम के अनुसार आहार सेवन करें व पर्याप्त मात्रा में पानी जरूर पियें। घर में कोई घरेलु कार्य में व्यस्त रहेंगे। **शत्रु** सक्रीय रहेंगे, प्रतिकूल फल प्राप्त हो सकता है, सतर्क रहे। कोई बुरी आदत को त्याग करने व सम्मोहनीय व्यक्तित्व प्राप्त करने की कोशिश करेंगे पर असफल होंगे। आप **स्वसम्मोहन दीक्षा** ग्रहण करे, सफल होंगे।

न्यौछावर ₹1600

07 से 13 फरवरी तक- समय लक्षयदायक है। कोई पुराना फंसा हुआ धन इस समय प्राप्त होगा। परिवार के साथ शिव जी के दर्शन करेंगे। आप योजनाबद्ध तरीके से काम करेंगे लेकिन अधिकतर समय **असफलता** ही प्राप्त होगी। सूर्य ग्रहण के प्रभाव से स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव हो सकता है। परिवार के लोगो में छोटी-मोटी विवाद संभव है।

14 से 20 फरवरी तक- बात करते समय सोच विचार कर बात करें। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी में पदोन्नति हो सकती है। सरकारी काम में आ रही बाधायें समाप्त होंगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय श्रेयस्कर है। कोई अज्ञात भय सतायेगा। बड़े बुजुर्गों का स्वास्थ्य को लेकर अस्पताल का चक्कर काटना पड़ सकता है। आकस्मिक धन हानि होगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। आपकी आंतरिक चेतना में विकास होगा।

21 से 28 फरवरी तक- समय सुखपूर्वक रहेगा। व्यवसाय में **लाभ** की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में विकास हेतु कोई नई मशीन आदि खरीद सकते हैं। कर्मचारियों के साथ अच्छा ताल-मेल बिठायेंगे साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को ऋण की व्यवस्था बनायेंगे।

शुभ तिथियां 14,19,23,24

वृष

01 से 06 फरवरी तक- मास की शुरूआत शुभदायक रहेगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। किसी वरिष्ठ व्यक्ति से मुलाकात होगी जिससे आपके उन्नति का मार्ग खुलेगा। शांतिदायक दिन रहेगा। सूर्य ग्रहण के प्रभाव से कभी-कभी मानसिक तनाव हावी हो सकता है। देह कष्ट या दुर्घटना की संभावना है, वाहन चलाते समय सतर्क रहें। **जगदम्बा रक्षा कवच** धारण करें। न्यौछावर ₹360

07 से 13 फरवरी तक- आप किसी साजिश, षड्यंत्र या गुप्त योजना के शिकार होंगे। हाथ में पैसा आता-आता रूक जायेगा। आर्थिक परेशानी रहेगी। घर में भी **कलहपूर्ण** वातावरण रहेगा। गलतफहमियों से मन उदास रहेगा। किसी अंजान व्यक्ति पर जरूरत से ज्यादा भरोसा न करें नुकसान हो सकता है। जमीन-जायदाद संबंधी समस्या किसी मध्यस्थता से सुलझ सकता है। आपके लिये **स्वर्णाकर्षण भैरव दीक्षा** उपयुक्त रहेगा। न्यौछावर ₹1800

14 से 20 फरवरी तक- रोजी-रोजगार में अनावश्यक **बाधायें** आयेगी। अधिकार करने की प्रवृति अधिक रहेगी। उच्च अध्ययन, अनुसंधान व शोध आदि में व्यस्तता रहेगी। आपका पूरा ध्यान व्यवसाय पर रहेगा। कोई एक बड़ा सौदा प्राप्त हो सकता है। नौकरी पेशा वर्ग के लिये उन्नति प्राप्त करने का मौका मिलेगा। ग्राहकों को संतुष्ट करने के लिये नयी योजना बनायेंगे। परिवार के लिये समय निकालना मुश्किल हो सकता है।

21 से 28 फरवरी तक- धन आगमन होगा पर स्थायी रूप में नहीं रह पायेगा। सहकर्मी से जो मनमुटाव था वह समाप्त होगा। मन में सुकून मिलेगा। लम्बे समय से अटके हुये काम इस समय कोशिश करने पर पूरे हो जायेंगे।

शुभ तिथियां 11,13,18,21

मिथुन

01 से 06 जनवरी तक- माह का प्रथम दिन प्रेममय रहेगा। पति-पत्नी के बीच प्रेम का भाव विद्यमान रहेगा। सास बहु के बीच कोई **गलतफहमियां** पैदा हो सकती है। काम बनता-बनता रूक व अटक जायेगा। नौकरी में पदोन्नति का योग बन रहा है। आर्थिक मामले में सतर्क रहें।

07 से 13 जनवरी तक- शोध, अध्ययन, अनुसंधान व सूचना के आदान-प्रदान का समय है। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। शुभ समाचार मिलेंगे। निवेश लाभदायक हो सकता है। दूसरी आय का मार्ग खुलेगा। आपकी कडी मेहनत का फल प्राप्त होगा। कोई नया कार्य शुरू करने के लिये समय उचित है। आप पूरी निष्ठा से अपने काम को पूर्णता देंगे। साझेदारी के साथ अच्छे संतुलन बिठायेंगे। अधिकारी आपके काम से संतुष्ट रहेंगे। दिन शुभदायक रहेगा।

14 से 20 जनवरी तक- समय आपके प्रतिकूल है। अनावश्यक कार्यों में समय व्यतीत होगा। काम का भारी दबाव आप पर बना रहेगा। आप कोई गलत निर्णय लेंगे जिससे आर्थिक रूप से भारी नुकसान हो सकता है। शत्रु आपकी परिस्थिति का पूरा फायदा उठायेंगे। मानसिक पीड़ा सतायेगी। घर में भी **कलहपूर्ण** वातावरण रहेगा। आप **ज्वाला मालिनी दीक्षा** ग्रहण करे, बाधायें भस्म हो जायेंगी।

न्यौछावर ₹1600

21 से 28 जनवरी तक-स्थितियों में परिवर्तन आयेगा। कुछ रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। धार्मिक गुरू व महात्माओं के दर्शनों का लाभ प्राप्त होगा। आय की तुलना में खर्च ज्यादा होगा। स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी कष्ट दे सकती है। आप **महाकाली साधना** सम्पन्न करें।

साधना सामग्री न्यौछावर ₹480

शुभ तिथियां 16,18,21,25

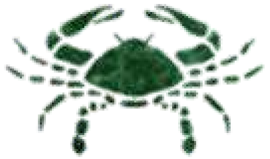

कर्क

01 से 06 फरवरी तक- माह का आरम्भ उतना अच्छा नहीं है। आपके मन में किसी बात को लेकर डर व्याप्त रहेगा। आप अपनी भूल का खेद भी नहीं कर पायेंगे। आपको भावनाओं के तूफान में बहने से बचना होगा। आप ब्रह्माण्ड के गूढ़ रहस्यों के बारे में विचार करेंगे। आप इस समय लोगों के बीच रहने से ज्यादा किसी एकान्त स्थान में समय बिताना पसंद करेंगे।

07 से 13 फरवरी तक- आप धन प्राप्ति के प्रयास में सफल रहेंगे। व्यापार में अग्रसर होने का अवसर प्राप्त होगा। कोई नये मेहमान का आगमन हो सकता है। किसी समारोह में व्यस्त रहेंगे। आप हर कार्य को व्यवस्थित ढंग से करना चाहेंगे, इस हेतु पत्नी के साथ विवाद होगा। पुराना फंसा धन इस समय प्रयास करने से प्राप्त हो जायेगा। स्वस्थ शरीर हेतु जीवनशैली में योग, ध्यान आदि शामिल करें। बच्चों के साथ व्यस्थ रहेंगे।

14 से 20 फरवरी तक- समय आपके अनुकूल नहीं है। **शत्रु** सक्रीय रहेंगे। कोई घोर संकट की संभावना है। किसी के शब्दों के जाल में न फंसे, विश्लेषण करने के बाद ही भरोसा करें। परिवार का साथ मिलेगा। आप शिवरात्रि पर **'महाकाल महामृत्युंजय दीक्षा'** प्राप्त करें।

न्यौछावर ₹ 1500

21 से 28 फरवरी तक- श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करेंगे। पुराना रोग उबर सकता है। कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये सभी चुनौतियों का सामना करने के लिये आप तैयार रहेंगे जिससे आप उस रास्ते पर तेजी से अग्रसर होंगे। समय लाभदायक रहेगा। सरकारी निवेश के लिये समय अनुकूल है। पारिवारिक वातावरण प्रेममय रहेगा। यात्रा में अनावश्यक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

शुभ तिथियां 02,21,26,30

सिंह

01 से 06 फरवरी तक- यह समय लाभदायक साबित होगा। आपका पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा। कार्य योजनायें सफल होंगी। परिश्रम का श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होगा। धनागमन के नये साधन मिलेंगे। करियर और व्यवसाय में उन्नति होगी। मन में प्रसन्नता का भाव विद्यमान रहेगा।

07 से 13 फरवरी तक- आप इस समय जमीन-जायदाद का सौदा कर सकते हैं। घर के लिये कोई नवीन वस्तु खरीदेंगे। आप कार्यालय में कोई गलत निर्णय ले लेंगे जिससे उच्चाधिकारियों की डांट सुननी पड़ेगी। आपको इस समय शत्रुओं से भी बच के रहना होगा। भाइयों व परिवार से सहयोग प्राप्त होगा। किसी से साधारण विवाद हो सकता है। इस समय आप **धूमावती साधना** सम्पन्न करें, शत्रु दूर हो जायेंगे। **न्यौछावर ₹ 1500**

14 से 20 फरवरी तक- यह सप्ताह शानदार व्यतीत होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपकी ईश्वर में आस्था बढ़ जायेगी। अधिकारियों से मित्रता लाभप्रद रहेगी। प्रशासनिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आप इस समय बच्चों की जरूरतों को पूरा करेंगे।

21 से 28 फरवरी तक- पुरानी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। भाग्य का उदय होगा तथा मन को सुकून मिलेगा। राजनीतिज्ञों के लिये समय अनुकूल रहेगा। धन प्राप्ति का समय होगा। संपत्ति से लाभ, सुखद सूचनायें प्राप्त होंगी। आमदनी में वृद्धि होगी। यात्रायें सुखद होंगी। संतान द्वारा शुभ समाचार प्राप्त होगा। **खांसी, जुकाम, सिर दर्द** आदि मौसमी बिमारियां आ सकती है सतर्क रहें। अध्ययन कार्यों में रूची रहेगी। कोई मन पसंद पुस्तक भी खरीदेंगे।

शुभ तिथियां 09,14,16,21

कन्या

01 से 06 फरवरी तक- दिन सामान्य रहेगा। शिवरात्रि के पावन अवसर पर परिवार सहित शिवजी का दर्शन कर धन्य होंगे। लम्बी दूरी की यात्रायें कष्टकारी हो सकती है। नाम व प्रसिद्धि पाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा। पिता के साथ किसी बात को लेकर मतभेद हो सकता है, सतर्क रहें।

07 से 13 फरवरी तक- मानसिक शांति मिलेगी। लम्बे समय से चली आ रही समस्या दूर होगी। पति-पत्नी में सामंजस्य बनेगा। किसी प्रभावशाली व्यक्ति से सम्पर्क बनेगा जिससे आपका आत्मविश्वास बढेगा। नये व्यवसायिक अनुबंधन होंगे। आप छोटी-छोटी सी बात पर किसी से उलझ पड़ेंगे। **शत्रुओं** से सतर्क रहें। कुछ नये-नये करने की प्रवृति रहेगी। मेहमानों का आगमन होगा व आप उनके स्वागत-सत्कार में व्यस्त रहेंगे।

14 से 20 फरवरी तक- राजकीय कार्य में सफलता प्राप्त होगी। तय किये गये लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये प्रयासरत रहेंगे। प्रेम संबंध उजागर होने की संभावना है। आप **'कृष्ण मोहिनी दीक्षा'** ग्रहण करे, परिस्थिति आपके अनुकूल निर्मित होगी। **न्यौछावर ₹ 1500**

21 से 28 फरवरी तक- रूका हुआ काम इस समय पूरा हो जायेगा। आप **षड्यंत्र** का शिकार हो सकते हैं। पदोन्नति में अड़चन आयेगी। कोई सरकारी विभाग का काम रूक सकता है। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। समय मिश्रित फलप्रद रहेगा। किसी पारिवारिक सदस्य से मतभेद हो सकता है। पैसा आने से पहले जाने का रास्ता तैयार रहेगा। आप **'नृसिंह दीक्षा'** ग्रहण करे, विकट परिस्थितियों से बच सकते हैं।

न्यौछावर ₹ 1500

शुभ तिथियां 04,09,11,15

तुला

01 से 06 फरवरी तक- किसी यात्रा पर जा सकते है और यात्रा का फल भी प्राप्त होगा। गुरूजनों के प्रति मन में आदर का भाव रहेगा और उनकी कृपा से यश, पद, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करेंगे। समय आपके अनुकूल है। इस समय शुरू किया हर कार्य सफल होगा। पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है।

07 से 13 फरवरी तक- समय आपके प्रतिकूल है। कार्य पूरे होने में ज्यादा समय लगेगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें अन्यथा अनावश्यक खर्च आ सकता है। मेहमानों का आगमन होगा। आपकी परेशानी बढ़ जायेगी। व्यापार में उतार-चढ़ाव अधिक रहेगा। जमीन-जायदाद से संबन्धित समस्या किसी मध्यस्थता से हल हो जायेंगे। निश्चित रूप से निर्णय आपके पक्ष में होने के लिये **'ब्रह्मास्त्र बगलामुखी दीक्षा'** ग्रहण करें। **न्यौछावर ₹2100**

14 से 20 फरवरी तक- इस सप्ताह आप को बड़ा निर्णय लेना पड़ सकता है, संयम पूर्ण निर्णय लेना हितकर होगा। व्यवसाहियों के लिये यह समय अनुकूल रहेगा। धन की वृद्धि होगी। महिलाये घरेलू कर्तव्यों का निर्वाह भलीभांति करने में सफल रहेंगी। महिलाओं के लिये यह सप्ताह अनुकूलता युक्त है। विद्यार्थी वर्ग और प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वालों को सफलता मिल सकती है।

21 से 28 फरवरी तक- परिवार के लिये समय देना आपकी प्राथमिकता रहेगी। आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। सुखदायक समय व्यतीत करेंगे। आपके काम में कोई हस्तगत करना आप पसंद नहीं करेंगे। वित्तीय मामलों को लेकर आप गम्भीर रहेंगे और सफलता भी हासिल करेंगे। वाहन चलाते समय सावधानी पूर्वक चलायें अन्यथा दुर्घटना हो सकती है।

शुभ तिथिया 02,08,13,27

वृश्चिक

01 से 06 फरवरी तक- आध्यात्मिक क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। परिवार के साथ शिव मन्दिर जायेंगे। आकस्मिक धन हानि होने की संभावना भी है। आप **''शिव शक्ति बाधा निवारण दीक्षा''** ग्रहण करें, परिस्थिति आपके नियंत्रण में रहेगी।

न्यौछावर ₹ 1500

07 से 13 फरवरी तक- स्वास्थ में सुधार होगा। व्यवसाय में सतर्क न रहें तो नुकसान हो सकता है। कर्मचारी पर नजर रखें। व्यापार स्थल का नवीनीकरण करने का विचार करेंगे। काम काज में अतिरिक्त जिम्मेदारियां जिससे व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। इस समय आपको किसी उपहार की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्य के लिये नये वस्त्र, आभूषण या साज-सज्जा से सम्बन्धित वस्तु की खरीददारी होगी।

14 से 20 फरवरी तक- आप अपने आचरण में **सकारात्मक** बदलाव लायेंगे। मौके को पहचान कर अपनी उन्नति के लिये फायदा उठायेंगे। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। मन और शरीर में आलस्य का भाव रहेगा। **''मेधा सरस्वती दीक्षा''** ग्रहण करें। **न्यौछावर ₹1600**

21 से 28 फरवरी तक- नये निवेश के लिये समय उचित नहीं हैं। बड़े-बुजुर्गों के स्वास्थ्य को लेकर आप चिंतित रहेंगे। मेहमानों का आगमन होगा। आप उनका सतकार आदि करने में व्यस्त रहेंगे। घर में उत्सवपूर्ण माहौल रहेगा। मनोरंजन, खरीददारी आदि कार्यो में अधिक धन व्यय होगा, नियंत्रण रखें। आपकी प्रतिभा में निखार आयेगा। मेहनत के अनुसार फल प्राप्त होगा। कोई उल्लेखनीय काम नहीं हो पायेगा। दैनिक कार्यों में आप व्यस्त रहेंगे और आप लम्बित पड़े कार्यो को तेजी से निपटायेंगे।

शुभ तिथियां 01,05,09,25

धनु

01 से 06 फरवरी तक- खान-पान पर ध्यान रखें अन्यथा चिकित्सालय का चक्कर काटना पड़ सकता है। निवेश अच्छी तरह से सोच-समझकर करें। प्रेम संबंधों में गलतफहमी परेशानी का कारण बनेगी। **सम्मोहन दीक्षा** ग्रहण करें अनुकूलता प्राप्त होगी।

न्यौछावर ₹1500

07 से 13 फरवरी तक- विजय सूचक दिवस रहेगा। आप अपनी मनोकामना पूर्ण कर पायेंगे। आपको सहयोगी जनों की सहायता प्राप्त होगी। जीवन के हर पहलू पर कड़ी प्रतियोगिता के कारण आप में गम्भीरता विद्यमान रहेगी। सारी रूकावटों को पार करने के बाद सफलता मिलेगी। आप इस समय स्वावलम्बी बनेंगे। अपने भविष्य के प्रति सजग रहेंगे। मेहनत थोड़ा ज्यादा ही रहेगी। किन्तु इसका फल भी आपको प्राप्त होगा।

14 से 20 फरवरी तक- यह सप्ताह विद्यार्थी वर्ग के लिये शुभदायक है। पढ़ाई में मन स्थिर रहेगा। स्पर्धा में कोई इनाम भी प्राप्त होगा। आप अपनी योग्यता और संघर्ष के आधार पर राजकीय क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त कर सकते है। कहीं बाहर जा सकते हैं। व्यापारिक यात्रा लाभदायक साबित होगी।

21 से 28 फरवरी तक- सास-बहू में अनबन हो सकती है। मामूली-सी कहासुनी बड़े झगड़े का रूप ले लेगी सावधान रहे। आप **धार्मिक कार्यों** में रूची रखेंगे। **धनागमन** की संभावना है। आप दृढ़ संकल्प के सहारे श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप रोजमर्रा के कार्यों में व्यस्त रहने के बावजूद अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर होंगे। आप बच्चों के साथ क्रोधित न होकर समझाने की कोशिश करेंगे तो अच्छा परिणाम प्राप्त होगा।

शुभ तिथियां 02,06,08,26

मकर

01 से 06 फरवरी तक- इस सप्ताह बहुत अधिक परेशानी अनुभव करेंगे। यह वह समय है, जब आपको अपने और पराये में भेद महसूस होगा। पेट संबंधी शिकायत हो सकती है, प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहे लोगों के लिये और अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई तथा तैयारी पर लगाना उपयुक्त होगा। भवन निर्माण की प्रगति में अनेक बाधाये बनी रह सकती है।

07 से 13 फरवरी तक- सर्वलाभकारी दिवस रहेगा। पति-पत्नी के बीच मधुरता रहेगी। आय के दूसरे स्त्रोत के लिये कोशिश जारी रखेंगे। **पैतृक सम्पत्ति** का हिस्सा मिल सकता है। समय आपके प्रतिकूल है सावधानी पूर्वक रहें। **जगदम्बा रक्षा कवच** धारण करें। आप किसी समाज सेवा या गुरू सेवा में शामिल होंगे। मन में श्रद्धा व संतुष्टि का भाव विद्यमान रहेगा। **न्यौछावर ₹ 360**

14 से 20 फरवरी तक- आप धैर्य व शांतिपूर्वक अपना काम पूरा करेंगे। आपके विश्वास और तेजस्विता में वृद्धि होगी जिससे सामाजिक रिश्ते बेहतर बनेंगे। आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। आप में आलस्यता हावी रहेगी। प्राणायाम अवश्य करें।

21 से 28 फरवरी तक- विद्यार्थी वर्ग अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर देंगे। परीक्षा की तैयारी के लिये अतिरिक्त समय निकालेंगे। व्यापार संबंधित यात्रा हो सकती है। किसी क्षेत्र में आपका निखार होगा। आप अपना सम्पर्क का दायरा बढ़ायेंगे। आप इस समय अपना रूख नरम रखें साथ ही अनावश्यक नोक-झोक, वाद-विवाद से दूर रहें या कम-से-कम अपनी बेकाबू जुबान और अहं को नियंत्रित करने की कोशिश करें अन्यता नुकसान होगा।

शुभ तिथिया 02,18,25,26

कुंभ

01 से 06 फरवरी तक- आपके प्रयास सकारात्मक होंगे। आप जीवन के हर मोर्चे पर अपने को आगे खड़ा पायेंगे। उत्तम सम्पत्तिदायक दिवस रहेगा। जीवन साथी को कोई मन पसंद उपहार देंगे। व्यवसायिक साझेदारी के साथ गलतफहमी हो सकती है। समय सिद्धिदायक है।

07 से 13 फरवरी तक- पुराना अटका पड़ा काम इस समय पूर्ण होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समय पूर्ण रूप से अनुकूल रहेगा। आपको धन संबंधी मामलों में शानदार सफलता मिलेगी। आपकी व्यापार/नौकरी के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी शौक रहेगा। कुछ अच्छे कार्यों का अंजाम धन प्राप्ति या इनाम के रूप में प्राप्त होगा। आप पहले से कहीं अधिक अधिकार सम्पन्न होंगे। अनावश्यक चिंताओं से बचना चाहिये।

14 से 20 फरवरी तक- आप अपने खान-पान पर विशेष ध्यान दें अन्यथा आपके स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा असर पड़ सकता है और आपका स्वास्थ्य दिनों दिन गिर सकता है। आप कहीं यात्रा पर जा सकते हैं। धन लाभ होगा। परिवार में अविवाहित युवा युवतियों के लिये विवाह सम्बन्धि चर्चा होगी। श्रेष्ठ जीवनसाथी हेतु **'शिव-गौरी विवाह प्राप्ति दीक्षा'** ग्रहण करें। **न्यौछावर ₹ 1500**

21 से 28 फरवरी तक- आध्यात्मिक जगत आपको आकर्षित करेगा। आप किसी गरीब और जरूरतमंद की मदद करेंगे जिससे मन में संतुष्टि व आनन्द की प्राप्ति होगी। समय आपका अनुकूल नहीं है। धन संबंधी मामलो पर जोर रहेगा। आप कानूनी पचड़े या मुकदमें में फंस सकते हैं। निकट लोंगो के साथ रिश्तों में खटास आ सकती है या संबंध टूट सकते हैं। आप **'पीताम्बरी दीक्षा'** ग्रहण करें, परिस्थिति पर नियंत्रण प्राप्त होगा। **न्यौछावर ₹ 1600**

शुभ तिथियां 01,05,24,28

मीन

01 से 06 फरवरी तक- आप को अच्छे बुरे की पहचान सहजतः ही पता चल जायेगी। मौसम के अनुसार खान-पान करें स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मन में प्रसन्नता का भाव रहेगा। हर कार्य में सफलता प्राप्ति होगी। धन संबंधी मामलों मे धोखा खा सकते हैं, सावधान रहें।

07 से 13 फरवरी तक- इस समय व्यापार मे कड़ी प्रतिस्पर्द्धा रहेगी। आप अपने व्यापार पर अगर गम्भीरता से ध्यान देंगे, तो लाभ का रास्ता खुलेगा। लोग आपकी मजबूरी का फायदा उठा सकते हैं। आप दूसरों पर ज्यादा भरोसा नहीं करें। इच्छित कार्य पूर्ण होगा। कोई अप्रिय समाचार प्राप्त हो सकता है।

14 से 20 फरवरी तक- यह सप्ताह संतान की शिक्षा, विवाह, कैरियर संबंधित कार्यों में बाधायें उत्पन्न करेगा, सामाजिक मान सम्मान में क्षति होगी, बेटी के ससुराल से तरह-तरह की शिकायतों से अनेक समस्या का जन्म होगा, संयम सावधानी से कार्य बरतें, सम्बन्ध और सामाजिक रिश्ते बेहतर बनाने का पूरा प्रयास करें, बेहतर होगा आप **'सावित्री सौभाग्य चैतन्य दीक्षा'** ग्रहण करें जिससे जीवन में अनुकूल स्थितियों का निर्माण होगा।

न्यौछावर ₹ 1500

21 से 28 फरवरी तक- नौकरी पेशा व्यक्तियों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। नई संस्थाओं से जुड़ने के अवसर प्राप्त होंगे। मित्रों के साथ कहीं बाहर जाकर मौज मस्ती करने के लिये समय निकाल पायेंगे। कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। धनागमन का योग है। नौकरी में आपको महत्वपूर्ण कार्यभार सौंपा जा सकता है। अपनी जरूरत की चीजों की खरीददारी में खर्च करेंगे।

शुभ तिथियां 01,21,23,27

सद्गुरू वाणी

- अणु से विराट बनाने की क्रिया केवल गुरू जानता है, मनुष्य से देवता की क्रिया केवल गुरू जानता है, मूलाधार से सहस्रार तक पहुँचाने की विद्या केवल गुरू जानता है। इसीलिये जीवन का आधार केवल गुरू है।
- प्रेम भगवान और भक्त का आंतरिक सम्बन्ध है, एक पूर्ण हृदय का हृदय से सम्बन्ध है, प्राणों का प्राणों से सम्बन्ध है, उसमें वासना नहीं है। **गुरू या ईश्वर से एकाकार होने के लिये मन में प्रेम का बीज बोना पड़ता है।**
- शिष्य यदि सच्चे हृदय से पुकार करे तो ऐसा होता ही नहीं कि उसका स्वर सद्गुरू तक न पहुंचे। उसकी आवाज गुरू तक पहुंचती ही है, इसमें कभी संदेह नहीं होना चाहिये।
- ध्यान लगाने से आत्मा परमात्मा में लीन नहीं हो सकती, मंत्र जप से भी ऐसा संभव नहीं, क्योंकि आत्मा का परमात्मा तक पहुंचने का जो रास्ता है वह वेदना का है, तड़फ का है, विरह का है, प्रेम के सागर में डूब जाने का है, तो ही जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है।
- ज्ञान, चेतना, सुख, सौभाग्य, आनन्द, मस्ती, भौतिक सफलता हो मगर तब भी यह जरूरी नहीं है कि प्रेम प्राप्त हो।
- मैं तुम्हें समुद्र में छलांग लगाने की क्रिया सिखा रहा हूं। मैं तुम्हें वह क्रिया सिखा रहा हूं कि तुम आत्म साक्षात्कार कर सको, यही प्रेम की पूर्णता है।
- यदि चारों वेदों का अर्थ स्पष्ट करूं तो चारों का सारभूत तथ्य एक ही है कि जीवन का प्रारंभ प्रेम है और जीवन का अंत भी प्रेम ही है।
- प्रेम की गहराई में उतरने का अपना ही एक आनन्द है, अपना ही एक अलौकिक सौन्दर्य है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति प्रेम में डूबता है, उसके चेहरे की तेजस्विता बढ़ती जाती है।
- जिस क्षण गुरू यह निश्चय कर लेता है कि अब मुझे इस शिष्य को उठाकर परम अवस्था तक पहुंचा देना है तो फिर भले ही शिष्य में कितने ही विकार हों, गुरू सीधे उसे ध्यान के महासागर में उतार देता है, परन्तु इसके लिए आवश्यक है, कि गुरू से पूर्ण प्रेम हो।

शिष्य धर्म

- जो व्यक्ति **स्वयं** का सम्मान करता है, वही मात्र दूसरों से सुरक्षित है, क्योंकि उसने एक ऐसा **अभेद्य कवच ओढ़** रखा है, जिसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

- गुरू क्या करते हैं, इस बात पर शिष्य को ध्यान नहीं होना चाहिये। श्रेष्ठ शिष्य वही है जो कि गुरू कहते हैं, वह करे। जो कुछ करते हैं, गुरू करते हैं, यह सब **क्रिया कलाप** उन्हीं की **माया** का हिस्सा है, मैं तो मात्र उनका दास, एक निमित्त मात्र हूं, जो यह भाव अपने मन में रख लेता है वह **शिष्यता** के उच्चतम सोपानों को प्राप्त कर लेता है।

- **गुरू** से बढ़कर न **शास्त्र** है न **तपस्या**, गुरू से बढ़कर न **देवी** व देव और न ही **मंत्र जप** या **मोक्ष**। एक मात्र **गुरूदेव** ही **सर्वश्रेष्ठ** हैं।

न गुरोरधिकं न गुरोरधि के न गुरोरधिकं न गुरोरधिक

शिव शासनतः शिव शासनतः शिवन शासनतः, शिव शासनतः

- जो इस **वाक्य** को अपने मन में बिठा लेता है, तो वह अपने आप ही शिष्य शिरोमणि बन कर गुरूदेव का अत्यंत प्रिय हो जाता है। गुरू जो भी आज्ञा देते हैं, उसके पीछे कोई रहस्य अवश्य होता है। अतः शिष्य को बिना किसी संशय के गुरू की आज्ञा का पूर्ण तत्परता से, अविलम्ब पालन करना चाहिये, क्योंकि शिष्य इस जीवन में क्यों आया है, इस युग में क्यों जन्मा है, वह इस पृथ्वी पर क्या कर सकता है, इस सबका ज्ञान केवल **गुरू** ही करा सकता है।

- शिष्य को न तो **गुरू-निंदा** करनी चाहिये और न ही निंदा सुननी चाहिये। यदि कोई गुरू की **निंदा** करता है तो शिष्य को चाहिये कि या तो अपने **वाग्बल** अथवा **सामर्थ्य** से उसको परास्त कर दे, अथवा यदि वह ऐसा न कर सके, तो उसे ऐसे लोगों की **संगति त्याग** देनी चाहिये। गुरू-निंदा सुन लेना भी उतना ही दोषपूर्ण है, जितना कि गुरू निंदा करना।

- **गुरू** की कृपा से **आत्मा** में **प्रकाश संभव** है। यही **वेदों** में भी कहा है, यही समस्त **उपनिषदों** का सार निचोड़ है। शिष्य वह है, जो गुरू के बताये मार्ग पर चलकर उनसे **दीक्षा लाभ** लेकर अपने जीवन में **चारों पुरूषार्थ- धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष** को प्राप्त करता है।

दालचीनी – उपयोगी औषधि भी

दालचीनी एक मझले कद का हरा-भरा वृक्ष होता है जो हिंद महासागर के लंका, जावा, सुमात्रा, मलाबार, कोचीन आदि टापुओं में अधिकता से पाया जाता है, इसके पत्ते सुगंधित, चिकने, चमकीले, लंबगोल और बड़े होते हैं, इन पर 3 से 5 तक रेशे होते हैं, फूल भूरे रेशम के समान कोमल नन्हें-नन्हें होते हैं और फल करौंदे के समान नीलापन लिये लालरंग के होते हैं।

दालचीनी वृक्ष की 'छाल' को ही 'दालचीनी' कहते हैं जो मसाले के रूप में प्रयोग की जाती है। जब इसका वृक्ष तीन साल का हो जाता है तो इसकी छाल को निकालकर धूप में सुखा दिया जाता है और लंबी-लंबी जूड़ियां बांध दी जाती हैं।

दालचीनी की कई किस्में होती हैं जिनमें मुख्य तीन हैं-

चीनी दालचीनी- इसकी छाल चीन से यहां आयात की जाती है, इसकी जूड़िया बंधी होती हैं, इसके टुकड़े फीके खाकी रंग के और तेलयुक्त होते हैं, इसमें से तेल भी निकाला जाता है और औषधि के काम में भी आता है।

तज- तज दालचीनी के वृक्ष भारत में अधिक होते हैं, इसकी छाल बहुत मोटी होती है, इसका प्रयोग सिर्फ औषधि के रूप में होता है।

सिंहलद्विपी दालचीनी- यह लंका से आती है, यह दालचीनी पीली, लाल और भूरे रंग की तेज सुगंध वाली होती है, इससे भी तेल निकाला जाता है और औषधि कार्य में भी ली जाती है।

आजकल बाजार में मिलने वाली पतली छाल की जो दालचीनी होती है वह ज्यादा सुगंध वाली, तेज और उत्तम होती है, इसी दालचीनी का उपयोग मसाले या औषधि के रूप में करना चाहिये।

नाम तथा गुणधर्म

दालचीनी को संस्कृत में **दारूसिता** कहते हैं, और अंग्रेजी में **सिनेमनबार्क(Cinnamon Bark)** कहते हैं जबकि इसका लैटिन नाम **सिन्नेमोमाई जिलानिकम(Cinnamomy Jilenicum)** है।

मोटी दालचीनी कटु, मधुर, तिक्त, उष्णवीर्य, लघु, रूक्ष, पित्त को बढ़ाने वाली होती है। यह कफ, वायु, खुजली, आम(अपक्व रस) तथा अरूचि का नाश करने वाली एवं हृदयरोग, मूत्राशय के रोग, अर्श, कृमि, पीनस को मिटाने वाली और वीर्यहारक है।

पतली दालचीनी मधुर, कड़वी, तीखी, सुगंधित, वीर्यवर्द्धक शरीर के रंग को निखारने वाली एवं वायु-पित्त, मुखशोष और प्यास को मिटाने वाली होती है।

दालचीनी के वृक्ष की छाल, पत्ते और जड़ से तेल निकाला जाता है। इसमें से दालचीनी की छाल का तेल उत्तम होता है। इसके तेल को **सिनेमन आयल(Cinnamon Oil)** कहते हैं। इसका तेल नया होने पर पीलापन लिये हुए और पुराना होने पर पीला होता है। यह गरिष्ठ और पानी में डालने से डूब जाता है।

दालचीनी का तेल **वेदनास्थापक, व्रणशोधक और व्रणरोपण होता है।** औषधि के रूप में इसका उपयोग होता है। यह ग्राही, अग्निमांद्य, वात, आध्मान(पेट की गैस) वमन, उत्क्लेश और दांत का दर्द आदि रोगों को दूर करने वाला होता है।

चिकित्सा वैज्ञानिकों का मानना है कि दालचीनी अत्यंत उपयोगी **सुगंधित औषधि** है। यह **उष्ण, दीपन, पाचन, वातहर, स्तंभन, गर्भाशय-उत्तेजक, गर्भाशय संकोचक, रक्त में स्थित श्वेत कण बढ़ाने वाली और शरीर में उत्तेजना पैदा करने वाली है।** यह **जंतुनाशक** है तथा **काला ज्वर, टायफाइड एवं अन्य संक्रामक रोगों** का नाश करती है। यह हृदय उत्तेजक, हृदय को पुष्ट करने वाली तथा निद्रा लाने वाली है।

बहुत हितकारी है दालचीनी का तेल

दालचीनी का **तेल खाने** से आमाशय की श्लेष्म त्वचा को उत्तेजना मिलती है, जिससे भूख बढ़ती है और पेट के अन्दर उष्णवीर्य होने के कारण यह पेट के अन्दर वायु पैदा नहीं करती और पूर्व संचित वायु को निकाल कर बाहर करती है। इसलिए आमाशय के रोगों में इसका प्रयोग विशेष रूप से किया जाता है। **पेट फूलना, मरोड़ और उल्टी** को रोकने के लिये इसका तेल दिया जाता है।

अतिसार, जीर्णातिसार और ग्रहणी रोग के लिये दालचीनी का तेल रामबाण औषधि है। दवा के रूप में इसे देने से दस्त की मात्रा कम हो जाती है और पाचन-नलिका की शक्ति बढ़ती है। दालचीनी के क्वाथ से आंत के रोगों में अच्छा लाभ होता है। क्षय और क्षयजन्य रोगों में इसका तेल अच्छा प्रभाव दिखाता है। फुफ्फुस या गर्भाशय द्वारा हुए रक्तस्राव में इसके उपयोग से उत्तम लाभ होता है। **कीड़ों द्वारा** खाये दांत के छेद में इसके तेल को रूई फाहा में लगाकर उस छेद में रखने से दांत के समस्त कीड़े नष्ट हो जाते हैं और **दर्द** दूर हो जाता है।

- दालचीनी के तेल को तिल के साथ मिलाकर हैजे में या अन्य प्रकार की बेहोशी में **(शरीर क्षीण हो जाने या ठंडा हो जाने पर)** मलने से गर्मी आती है और शरीर चेतनायुक्त बनता है।
- दो से तीन बूंद दालचीनी का तेल एक कप पानी में मिलाकर पीने से इंफ्लूएंजा, जिह्वास्तंभ, आंत्रशूल, हिचकी, उल्टी आदि में लाभ होता है।
- दालचीनी का तेल या अर्क लेने से पेट का दर्द दूर होता है।
- दालचीनी का तेल या काढ़ा लेने से कष्टार्तव में आराम मिलता है।
- सिरदर्द होने पर दालचीनी का तेल या अर्क लगाने से दर्द दूर होता है और सर्दी से भी राहत मिलती है।
- वातरोग में दालचीनी के तेल की मालिश करने से आराम मिलता है।

दालचीनी का औषधीय प्रयोग

दस्त - 4 ग्राम दालचीनी और 4 ग्राम कत्था दोनों को एक साथ पीसकर 250 ग्राम गर्म पानी में डालकर ढंक दें। दो घण्टे बाद इसको छानकर 2 बार में पी लें, पतली दस्त बंद हो जाती है।

कब्ज - सोंठ, दालचीनी और छोटी इलायची के बीज का आधा-आधा ग्राम चूर्ण लेकर एक साथ मिलाकर भोजन से एक घंटा पूर्व लेने से कब्ज दूर होती है और भूख बढ़ती है।

जुकाम - दालचीनी, काली मिर्च और अदरक का काढ़ा पीने से जुकाम से राहत मिलती है।

आमातिसार - दालचीनी डेढ़ ग्राम, बेल फल का गर्भ 3 ग्राम और राल डेढ़ ग्राम लेकर चूर्ण बनाइये। यह चूर्ण गुड़ और दही के साथ मिलाकर लेने से दर्दयुक्त आमातिसार में शीघ्र लाभ होता है।

इंफ्लूएंजा - दालचीनी 4 ग्राम, लौंग आधा ग्राम, सोंठ डेढ़ ग्राम लेकर इनको एक लीटर पानी में काढ़ा बनाये, जब एक चौथाई जल रह जाये तो उतार कर छानकर पीये। इसी तरह दिन में तीन बार पीये, इसमें इंफ्लूएंजा में बहुत लाभ होता है।

खांसी - दालचीनी 4 ग्राम, सौंफ 2 ग्राम, मुलेठी 2 ग्राम, बीज रहित मुनक्का 4 ग्राम, मीठी बादाम मगज 10 ग्राम, कड़वी बादाम की मगज 4 ग्राम, शक्कर 4 ग्राम। इन सबको पीसकर 3-3 रत्ती की गोलियां बना लें, इन गोलियों को चूसने से खांसी शांत होती है।

बच्चों में डालें सफाई की आदत!!

कुछ अहम आदत अगर बचपन से ही बच्चे सिखे तो वे अपने जीवन मे आने वाली बीमारीयों से बच सकते हैं। जैसे:-

- सुबह उठने के बाद व रात को सोने से पहले BRUSH व हाथ मुँह अच्छे से धोकर सोना ।
- कुछ भी खाने से पूर्व व खाने के बाद अच्छे से हाथ धोना व अपने खाने के बरतन सही स्थान पर रखना व धोना।
- रोज कम से कम एक बार जरूर नहाना।
- समय-समय पर नाखून व बाल कटवाना।

इसी प्रकार अगर हम इन अहम बातों का ज्ञान व सीख छोटी उम्र से ही बच्चों में विकसित करते हैं तो यह बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये श्रेष्ठकर रहेगा। स्वच्छता को एक अच्छी आदत के रूप में अपनाना होगा। स्वच्छता केवल स्वयं तक सीमित नहीं है अपितु स्वयं, कार्यस्थल, घर, SCHOOL व हमारे रोजमर्रा के जीवन में आने वाली हर चीज स्वच्छ रखनी चाहिये। इसे जीवन का अभिन्न (INSEPERAPOACE) अंग बनाना चाहिये।

स्वस्थ्य रहो- मस्त रहो।

वराहमिहिर वचन

फरवरी माह के प्रत्येक दिवस को अनुकूल व सफलता युक्त बनाने के उपाय......!

01. **मौनी अमावस्या** इस दिन सरोवर, कुण्ड के जल से स्नान कर सूर्य को अर्घ्य दें।

02. **गुप्त नवरात्रि** कलश स्थापन **8:34AM** से **09:59AM**, **तंत्र दोष बाधा निवारण दीक्षा** **न्यौ.₹2100**

04. गणेश संकट चतुर्थी इस दिन 11 सुपारी गणेश जी के समक्ष चढ़ाये।

05. वसंत पंचमी इस दिन **महासरस्वती** का पाठ करे व बच्चों को **ज्ञान सरस्वती चेतना दीक्षा** दिलवायें। **न्यौ.₹1600**

08. **भीष्माष्टमी** इस दिन घर की महिला और बेटियों को चांदी का उपहार दें, **'दरिद्रता नाशिनी महादुर्गा दीक्षा'** **न्यौछावर₹2100**

12. जया एकादशी, पैतृक सम्पति संबंधित विवाद हेतु **विष्णु जया संकंट निवारण दीक्षा** लें **न्यौ.₹1600**

13 शुक्ल पक्ष प्रदौष व्रत, कुंभ संक्रांति इस दिन कुंभ स्नान का विशेष महत्त्व है। जिन साधकों को पदोन्नति, राजनितिक पद की इच्छा है वे इस दिन **राज्यभिषेक पद उन्नति दीक्षा** लें। **दीक्षा न्यौ.₹2100**

14. **विश्वकर्मा जयन्ती** इस दिन कारीगर अपने औजार की पूजा करते है व वास्तुदोष निवारण के लिये यह उचित दिन है। **वास्तुदोष निवारण साधना** **दीक्षा न्यौ.₹700**

16. **ललिताम्बा जयन्ती** तांत्रिक चेतना और ऊर्जा के लिये साधक **माँ ललिताम्बा** की दीक्षा लें। **दीक्षा न्यौ.₹1600**

19. **छत्रपति शिवाजी जयन्ती** हिन्दु एवं मराठा समाज के लिये **गौरवशाली दिवस।**

20. विनायक सकंट चतुर्थी इस दिन भगवान गणपति को प्रसाद अर्पित करें व **संकंट निवारण रिद्धि-सिद्धि दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा न्यौ.₹1600**

21. इस दिन घर में विशिष्ट गुरू पूजन, साधना का आयोजन करें।

22. यशोदा जयन्ती इस दिन मातायें अपने बच्चों की लम्बी आयु के लिये व्रत करें, गर्भ हत्या के प्रायश्चित हेतु अनाथ बच्चों को भोजन करायें।

23. कालाष्टमी-बच्चों को अगर बार-बार नजर लगती है तो 21 बार सर पर सरसों के दानें घुमा कर अग्नि में प्रज्जवलित करें। इसके निवारण हेतु **नजरदोष बाधा दीक्षा** लें। **दीक्षा न्यौ.₹2100**

24. **जानकी जयन्ती**, माँ सीता की भांति ज्ञानी, पतिव्रता पत्नी पाने हेतु पुरूष व्रत करें व **सुयोग्य वधु प्राप्ति दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा न्यौ.₹2100**

27. विजयाएकादशी इस दिन एकादशी का व्रत कर पितरों की शांति व गृहक्लेश निवारण हेतु उत्तम दिवस है। **पितृ कुयोनी दोष निवारण दीक्षा** व **पितृ मोक्ष प्राप्ति दीक्षा** लें। **दीक्षा न्यौ.₹1600**

28. **सोम प्रदोष** पर भगवान शिव को शंख से जलाभिषेक करने से अकाल मृत्यु का निवारण होगा। इस हेतु **अकालमृत्यु निवारण दीक्षा** ग्रहण करें। **दीक्षा न्यौ.₹1600**

काल निर्णय

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4:24 से 6:00 बजे तक ही रहता है।

दिवस	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
फरवरी	20, 27	21, 28	15, 22	16, 23	17, 24	18, 25	19, 26
मार्च	06, 13	07, 14	01, 08, 15	02, 09	03, 10	04, 11	05, 12
श्रेष्ठ समय दिन	07:36से10:00	06:00से10:48 01:12से03:36 03:36से06:00	06:00से07:36 10:00से10:48 12:24से02:48	06:48से08:24 08:24से11:36	06:00से06:48 10:48से12:24 02:48से06:00	09:12से10:30 12:00से12:24 02:00से06:00	10:48से02:00 05:12से06:00
श्रेष्ठ समय रात	07:36से09:12 11:36से02:00	08:36से11:36 02:00से03:36	08:24से11:36 02:00से03:36	06:48से10:48 02:00से04:24	10:00से12:24	08:24से10:48 01:12से02:00	08:24से10:48 12:24से02:48 04:24से06:00

समावर्तन संस्कार

समावर्तन का अर्थ है, गुरू के घर से अपने घर लौट आना– **तत्र समावर्तन नाम वेदाध्यनानन्तरं गुरूकुलात् स्वगृहागमनम्।** **हिन्दू धर्म संस्कारों** में यह **द्वादश संस्कार** है, इसे **विद्याध्ययनं** पूर्ण होने पर किया जाता है।

समावर्तन संस्कार के बारे में **ऋग्वेद** में लिखा गया है कि–

युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यों उ मनसा देवयन्तः।।

अर्थात् **युवा पुरूष** नये वस्त्रों को धारण कर **ब्रह्मचर्य** का पालन करते हुए **विद्याध्ययन** के पश्चात **ज्ञान के प्रकाश** से प्रकाशित होकर जब **गृहस्थ आश्रम** में प्रवेश करता है तो वह प्रसिद्धि प्राप्त करता है। वह **धैर्यवान, विवेकशील, बुद्धिमान, ध्यान** और **ज्ञान** का प्रकाश जो उसके मन में होता है उसके बल पर **उच्च पदों** पर आसीन होता है।

यह संस्कार **ब्रह्मचर्य व्रत जीवन** की **समाप्ति** की सूचना देता है। मनुष्य के जीवन में शिक्षा पूर्ण कर लेने का समय बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। यही वह समय है जब व्यक्ति के आगामी जीवन की रूपरेखा निर्धारित होती है। इस संस्कार के साथ ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त हो जाता है। प्राचीन समय में इस संस्कार का स्वरूप कुछ इस प्रकार था– विद्याध्ययन समाप्त कर लेने पर शिष्य को **गुरू** अनुशासित करता था। तब शिष्य अपने ब्रह्मचारी जीवन को समाप्त करने की आज्ञा मांगता था, गुरू दक्षिणा अर्पित करता था। गुरू से अनुमति मिलने पर स्नान सम्पन्न होता था। इसके लिये वेद मंत्रों से अभिमन्त्रित जल से भरे हुये 8 कलशों से विशेष विधिपूर्वक ब्रह्मचारी को स्नान कराया जाता था। इसलिये यह संस्कार **वेदनान-संस्कार** भी कहलाता है। स्नान करके छात्र अपनी **मेखला, दण्ड, उत्तरीय** आदि को

त्याग देता था और **अंगराग, सुगन्ध, छत्र, जूते, माला, पगड़ी** आदि पहनता था। अब यह ब्रह्मचारी **स्नातक** कहलाता था। छत्र आदि सारी वस्तुये गुरू को भी अर्पित की जाती थी। यह सारी **नवीन वेशभूषा** धारण करके रथ या हाथी पर बैठकर स्नातक प्राय: किसी विद्वत् परिषद के समाने जाता था और गुरू पूरी सभा से **स्नातक** का परिचय कराते थे। उस विद्वत सभा के सम्मुख प्राय: स्नातक अपनी **ज्ञान प्रतिभा** और **विद्या** का परिचय भी देता था। स्नातकों की तीन कोटियां होती थी–

1. **व्रत स्नातक**– जिसने ब्रह्मचर्यव्रत पालन तो किया, किन्तु अपनी विद्या का अध्ययन पूर्ण नहीं कर सका।
2. **विद्या स्नातक**– जिसने विद्याध्ययन तो पूर्ण कर लिया, किन्तु ब्रह्मचर्य व्रत का सम्यक् पालन न कर सका।
3. **विद्या व्रत स्नातक**– जिसने ब्रह्मचर्य और विद्याध्ययन दोनों में पूर्णता प्राप्त कर ली हो, वह **विद्याव्रत स्नातक** कहलाता था और यह **तीनों स्नातकों** में **श्रेष्ठ** होता था।

वर्तमान समय में **समावर्तन संस्कार** समाप्त हो गया है। शिक्षा का सारा स्वरूप ही बदल गया है। अब न गुरूकुल है, न ब्रह्मचारी जीवन है और न ही वेदाध्ययन है। विश्वविद्यालयों में जो **दीक्षांत समारोह(कॉन्वोकेशन)** किया जाता है, उसको समावर्तन संस्कार का प्रतीक माना जा सकता है। समावर्तन संस्कार एक या अनेक शिष्यों का एक साथ भी होता था। प्राचीन समय में इस संस्कार द्वारा **गुरू** अपने शिष्य को **इंद्रियनिग्रह, दान, दया** और **मानव कल्याण** की शिक्षा देकर उसे **गृहस्थ-आश्रम** में प्रवेश करने की **अनुमति प्रदान** करते थे। वे कहते थे **''उतिष्ठ, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधक...।''** अर्थात् उठो, जागो और छुरे की धार से भी तीखे जीवन के **श्रेष्ठ पथ** को पार करो। दान पुण्य करना, व्यर्थ इच्छाओं का दमन करना, मनुष्यों सहित समस्त प्रकृति व प्राणियों के प्रति **सहानुभूति** की **भावना** रखना ही इस संस्कार का **मूल उपदेश** है।

जन्म पत्रिका

- कुण्डली से व्यक्तित्व लक्षण, वर-वधू मेलापक, रिश्ते-सम्बन्ध, कैरियर, आर्थिक व संतान सुख आदि विषयों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
- भविष्य के सभी अनुकूल-प्रतिकूल योगों का ज्ञान होता है।
- कुण्डली द्वारा जातक जीवन के सभी सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष से परिचित होता है।
- भविष्यफल द्वारा जीवन की सभी समस्याओं, बीमारियों और विपत्तियों से सचेत होकर उनका समाधान किया जा सकता है।
- जन्म पत्रिका की सहायता से जातक अपना भाग्यशाली रत्न, रंग और संख्या की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

ज्योतिष शास्त्र मनुष्य के श्रेष्ठमय जीवन निर्माण में सहायक होता है। जन्म पत्रिका अंतरिक्ष में भ्रमण कर रहे ग्रहों व आकाशीय पिण्डों की जन्म के समय की वास्तविक स्थिति दर्शाता है, जो ग्रहों के मित्र-शत्रु भाव के साथ ही उसके प्रभाव से जीवन में प्राप्त होने वाले प्रतिफल की सटीक जानकारी उपलब्ध कराता है।

जीवन में अनेक-अनेक **सुस्थितियों की प्राप्ति** किस तरह से संभव है? जीवन के किस भाग में **किन योगों के द्वारा सफलता** मिलेगी? जीवन में संतान सुख, धन लक्ष्मी, भू-भवन, यश, कीर्ति का योग कब निर्मित होगा। **विपरीत स्थितियों की निवृत्ति** के लिए क्या उपाय होना चाहिए, आने वाली समस्याओं के निराकरण की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति में होती है ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर सटीक रूप से प्राप्त होना चाहिए।

कैलाश सिद्धाश्रम-जोधपुर में ज्योतिषाचार्यों द्वारा **खगोलीय नक्षत्रों, ग्रहो व अंक ज्योतिष की गणना से भविष्य फल युक्त जन्म कुण्डली की रचना की जाती है। जन्म पत्रिका में भूत, वर्तमान, भविष्य की पूर्ण व्याख्या की जाती है,** साथ ही आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु **पूजन, अभिषेक, साधना, दीक्षा** का सुझाव भी दिया जाता है। जिसका पालन करने से सुस्थितियों की प्राप्ति संभव हो पाती है।

जातक ज्योतिष-विज्ञान के माध्यम से अपने भविष्य के गर्भ में झांक कर जीवन की विषमताओं में सुरक्षित रहने के उपाय व **सुयोगों में पूर्ण अभिवृद्धि युक्त शुभ-लाभ** की क्रियाओं को प्राप्त कर सकेंगे। **न्यौ. ₹ 5100**

जन्म पत्रिका बनवाने हेतु कैलाश सिद्धाश्रम-जोधपुर सम्पर्क करें-

0291-2517025, 7568939648, 8769442398

LALITAMBA SADHANA

Which Blesses the sadhak in Eight ways

ShivaDuto Karali Cha Anantaa Parameshwari
Kaatyaayani Cha Savitri Pratyaksha Brahmavadini.

Irrespective of the number of Sadhanas a Sadhak has accomplished and the siddhis they have obtained in life, grace of Mother Goddess Jagadamba is needed at every moment in life. When the month in itself is a Tantra month, where there is a certain type of positive energy in the nature, when there is a strong want to attain something worthy in life, then one must perform the Sadhana of Goddess Lalita who is the most powerful form of Goddess Jagadamba.

If a person leaves behind his **ego,** then he will find that it is the nature who has been nurturing him and fulfilling all his needs. **Food, water, air, light** etc. all are being **distributed** by the **nature** only and without any discontinuity. It is us who creates hurdles in life by our own deeds. Thus nature is nothing but one of forms of **Mother Goddess Jagadamba.** Goddess Jagadamba exists in several forms to look after Her children, to take care of their needs and is the One who is most compassionate towards our **sorrows** and **pains.**

Even though a mother might be busy in any work, still her entire consciousness remains dedicated towards her child. Her hands might be occupied in work however she continuously keeps an eye on the child. A child doesn't know how to communicate, **still the mother understands the needs of her child.** Just listening to the cries, the mother leaves behind all her tasks and rushes towards the child. She picks up the child in her arms, pours her love with many delicate kisses, feeds the child with her milk and feels relaxed only when the child stops crying.

A Sadhak is just like a child, some Sadhaks easily accept this fact and some Sadhaks accepts it later. Isn't **the powers** a Sadhak is able to attain is the knowledge or power that is bestowed upon by Mother Goddess? All the science and knowledge, **Sadhanas, penance** etc. are bestowed upon the people by this divine source of energy. The quickly we understand this point, the more beneficial it is for us.

This current era is termed as ***Kaliyug*** and we are all aware of the mentality and behaviour of the people around us. We are not writing this article to curse the time because it is not going to resolve any issues. Mere talking might portray a dreamland before our eyes and can give us a false pleasure of **few moments,** it will not reduce our daily **struggles.** In real sense, not only this month but the current era is an era of **Tantra.** To gain control over ***Kaliyug***, mere

worship, Bhakti and chanting of holy preaching will not help but we will need the power of Sadhanas for that. ***Only Goddess Kali can help us win in this Kaliyug and Kali in simple words means Tantra Sadhanas*.** **Goddess Kali** is the prime form of Mother Goddess Jagadamba and Sadhanas of Goddess Kali are mentioned as Tantra Sadhana only. From ancient days, the most favourable form of **Goddess MahaKali Sadhana** is in the form of ***Lalitamba Sadhana*. Goddess Lalitamba** is not a separate form of the Goddess MahaKali, but is an adjective of Goddess MahaKali, a form which is full of **beauty** and **power.**

Lalitam Shringaar Bhaava Janyaa Kriya Visheshah Tadvati Lalita.

Lalita is considered as the prime Goddess of Tantra field and this knowledge has been considered **very secret** and was even not passed onto Guru's son. Due to this reason, this Sadhana almost came to the point of extinction. There is a ***Shaktipeeth*** dedicated to **Goddess Lalita,** however, hardly anyone in general public knows about Her. The reason behind this was the Sadhana that existed during those days generated so **much energy** that a normal Sadhak couldn't withstand it. In the ancient times when the disciples used to stay with their Guru and served Him, the Guru used to slowly and steadily energise the disciples via **Diksha** to make them capable to perform this Sadhana and assimilate its **divine powers.**

We are indebted to ***Yogiraj Gunatitanand Ji*** who has dedicated his entire life for **Lalitamba Sadhana** and has found out a simpler way which can be easily followed by both **householders** and **ascetics.** There is no harmful side effect of this **Sadhana** and all the wishes of the Sadhak are fulfilled by the **mighty powers** of **Goddess MahaKali's Lalitamba** form. Yogiraj Gunatitanand Ji experienced that if a special yantra is created which divides the powers of Goddess Lalitamba into several forms and then the Sadhak chants a special mantra, then the powers of Goddess Lalitamba is slowly absorbed by the Sadhak and they don't face any harm in the Sadhana. Thus, the Sadhak is able to slowly assimilate the powers of Goddess and is able to fulfil all his **desires.**

Sadhana Procedure:

Yogiraj Gunatitanand Ji called this special yantra as ***Ratnollasata Mahayantra*** on which he inscribed the eight powers of Goddess Lalita – ***Prabha, Maya, Jaya, Sukhsma, Vishuddha, Nandani, Suprabha and Vijaya*** via Tantra procedure and made the yantra highly rewarding. These eight powers are powers like **safeguarding, wealth providing, disease eradicating, enemy destroying** etc. Just placing this Yantra at home is said to remove all **sorts of shortcomings** from the life of the Sadhak. One also needs ***Shri Sundari Rosary*** for this Sadhana procedure.

This Sadhana can be tried on any day and at any time. The way a child doesn't checks out the time before calling for mother, similarly, the Sadhak need not follow any special timings here; all one needs is to call the **Mother Goddess** with the same **purity** and **love** just like a child do. One can wear yellow clothes and sit facing east or wear red clothes and sit facing south direction.

Take **a wooden plank** and **cover it** with **fresh yellow cloth** or **red cloth** (same colour which you are wearing). Place a picture of revered SadGurudev and worship Him with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Light a **ghee lamp** and **an incense stick.** Then chant one round of **Guru Mantra** with the ***Shri Sundari*** rosary and **pray to Gurudev** for **success** in Sadhana. The only procedure one needs to perform in this Sadhana is to make eight marks on the Yantra with ***Ashtagandha*** calling out the names of the eight powers of Mother Goddess. The Sadhak must feel that the divine powers of the Mother Goddess are assimilating into him while making these marks. Then chant ***1 round*** of the below with the ***Shri Sundari rosary.***

Mantra

|| Om Shreem Lalitayai Hreem Phat ||

मंत्र

॥ ऊँ श्रीं ललितायै ह्रीं फट् ॥

This completes the Sadhana procedure. Even though the procedure is of just one day, it is highly advised to continue to chant the above mantra ***5 times*** daily along with your daily Sadhana procedure. If it is not possible, at least look at the Yantra light a lamp. One can take this yantra after wrapping in yellow cloth with himself if going out for some special tasks. This ensures safety from any unforeseen **fear** and **troubles.**

Sadhana Articles ₹ 750

Maha Shivaratri 1-Mar-2022

LORD SHIVA SADHANA

Eight Tantrokt Sadhanas of Lord Shiva which are even performed by the Gods to seek His divine blessings...

Shivo Guruh Shivo Devah Shivo Bandhuh Sharirinaam
Shiva Aatma Shivo Jeevah Shivaadanyatra Kinchan

Shiva is Guru, He is God, He is the relative of all the beings, He is the soul and He is the living being. There is nothing separate from Shiva.

The complete form of **a SadhGuru** is none other than that of Lord Shiva. Thus one can attain everything and fulfil all the wishes by the grace of **Lord Shiva**. Other Gods and Goddesses are limited by their powers and can fulfil our **wishes** as per their capabilities; however **Lord Shiva** is the only Lord who can grant anything. All the mantras of this universe were generated by the sound of Lord Shiva's ***Damru*** and the same mantras if obtained by a **SadhGuru,** who is termed as Lord Shiva in **Shaastras,** then there hardly remains any doubt regarding the **success** in **Sadhana.**

Presented below are few chosen Sadhanas related to Lord Shiva. **These Sadhanas are highly effective, simple and produces quick results.** Within an entire year, there are only a few days that are dedicated to Gods and Goddesses and if a person performs Sadhana on those days, then chances of getting success in Sadhana increases many fold. ***Maha Shivratri*** is one such special day which is dedicated to **Lord Shiva** and **Goddess Parvati.** Vasant season starts from the ***Maghi Poornima*** and from this very day till the ***eighth day of bright lunar phase of Phalgun month,*** Lord Shiva continuously fulfils the wishes of His **Sadhaks.** This duration is also called as ***Shiva Kalp.*** This year, Shiva Kalp will fall in between *16th Feb to 10th March*. Sadhaks can perform these Sadhanas during this entire phase and obtain blessings from the divine Lord. Presented below are **Tantrokt Sadhanas** of Lord Shiva which were even performed by Gods to obtain the blessings of Lord Shiva. All these Sadhanas can be started on any Monday or from Shivaratri during this phase.

Pingaleshwara Shiva Sadhana

Once *Agnidev* got infected with several **diseases** and no remedy could cure Him. As a result of these diseases, He became extremely **weak** and His eyes became **pale.** Left with no other **hope,** He started to **worship Lord Shiva.** Other Gods too started to pray Lord Shiva to appease on Agnidev and grant him good health. Appeased with the prayers of Gods and penance of Agnidev, Lord Shiva appeared in the form of *Pingaleshwar* and blessed Agnidev with good health. The Lord who can even grant victory over death, granting good health is much simpler for Him. Lord Shiva then said that whosoever will worship Him in the form of Pingaleshwar will get rid of **all the diseases.**

A person who performs the Sadhana of Pingaleshwar is blessed with good health. All the diseases, may it be **physical** or **mental,** are removed and the person is able to live a happy life. **A person who is healthy and wants to protect himself from any diseases in future should also perform this Sadhana as this Sadhana creates an invisible protective layer around such a Sadhank.**

Sadhana Procedure

One needs ***MahaMrityunjaya Yantra, Pinglaaksha and Aarogya Siddhi rosary*** for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear pure white clothes and sit on a white mat facing north. **Take a wooden plank** and cover it with fresh **white cloth.** Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and worship them with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of Guru Mantra and pray to Gurudev for **success** in Sadhana.

Now take a plate and write ***Mahamrityunjaya Mantra*** on it with vermillion and place the yantra over it. Worship the Yantra with rice grains, flowers, vermillion etc. Light a ghee lamp with two wicks in it and place it on the right side of the Yantra. Place Pinglaaksha on the left side and burn an incense stick.

Now chant ***7 rounds*** of below mantra with the rosary for next ***11 days.***

Mantra

|| Om Hreem Gloum Namah Shivaaya ||

|| ॐ ह्रीं ग्लौं नमः शिवाय ||

Drop all the Sadhana articles in a river or pond on the next Monday after finishing the Sadhana. You will soon start to see the changes in your body and mindset and will regain your health again.

Sadhana Articles ₹750/-

Mahakaaleshwara Shiva Sadhana

This form of Lord Shiva is full of temper. All the **enemies** of the **Sadhak** are defeated by this anger of Lord Shiva. **Lord MahaKaal** saves His Sadhaks from all the **troubles.** This Sadhana is so **powerful** that even if your enemy has made up his mind to kill you, his thoughts will get changed after you **successfully** complete this Sadhana. A Sadhak is also safeguarded from any unfortunate event in life. This Sadhana is a boon for all those who are in defence forces or hold special authorities in the society as this Sadhana safeguards the person from evil intentions of the enemies.

Sadhana Procedure

One needs ***Tantrokt Rudra Yantra, MahaKaal Mudrika and Tantra Siddhi rosary*** for this Sadhana. Get up early and have a bath. **Wear red clothes** and sit on a red mat facing north. Take a wooden plank and cover it with red cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and **worship them** with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of Guru Mantra and pray to Gurudev for **success** in Sadhana.

Now make a mound with some black sesame seeds and place **Tantrokt Rudra Yantra** over it. Make ***4 tridents*** in the four directions around the Yantra and place the ***Mahakaal Mudrika*** over the Yantra. Worship the Yantra with **rice grains, flowers, vermillion** etc. Light a ghee lamp and an incense stick.

Now chant ***5 rounds*** of below mantra

with the rosary for next *7 days.*

Mantra

|| Om Joom Sah Paalaya Paalaya Sah Joom Om ||

|| ॐ जूं सः पालय पालय सः जूं ॐ ||

Wear **MahaKaal Mudrika** around your neck on the eighth day. Keep the remaining Sadhana articles at your worship place for at least one week. Drop all the **Sadhana** articles in a river or pond after that.

Sadhana Articles ₹790

Gaurishwara Shiva Sadhana

Once **Goddess Parvati** and **Lord Shiva** were talking and Lord Shiva unintentionally mentioned Her complexion as dark. Goddess got upset after listening to the word **"dark"** and started to remorse on Her complexion. Out of this pain, She decided to go into deep penance and created **a Shiva Linga.** She became fairer day after another as a grace of Her penance. One day, Lord Shiva emerged and said, "Goddess, whoever will worship this **Gaurishwara Shivalinga** will be blessed with beauty, youth, fairness, fortune, wealth and prosperity and took Her back to Kailash mountains.

Both men and women can perform the Sadhana of Gaurishwara Shiva. Women are benefited with grace, beauty, glow and men attain powerful body, hypnotic eyes and attractive personality. **Mother Parvati** is a form of **Goddess Lakshmi** and thus the Sadhaks who perform this Sadhana don't face any sort of **financial deficit** in life. If a person is unemployed, then such a person gets employment, if business is not running profitably then one can observe **success** in the business, a person gets blessed with multiple sources of income and house of such a person gets filled with all sorts of **luxuries.**

Even the most unfortunate person becomes fortunate after performing this Sadhana. **Quarrels, misunderstanding, all sorts of differences** etc. gets resolved by the grace of this Sadhana. If the husband and wife no longer feel attracted towards one another, if they feel like breaking up the relationship, then this Sadhana acts as an attraction Sadhana. Performing Sadhana under such a situation ensures no difference remains between husband and wife and they start to live happily again. It was Gaurishwara Sadhana by which even Lord Shiva and Goddess Parvati were reunited.

Sadhana Procedure

One needs ***SadaShiva Yantra, GauriShankar Rudraksha and HarGauri rosary*** for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear white clothes and sit on a white mat facing north. Take a wooden plank and cover it with white cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and **Goddess Parvati** and **worship them with vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of **Guru Mantra** and pray to Gurudev for success in Sadhana.

Now take a plate and make a big symbol of "ॐ" with vermillion. Place the Yantra at the centre of this symbol and place GauriShankar Rudraksha over the " ँ " of ॐ. Worship the **Yantra** and **Rudraksha** with **rice grains, flowers, vermillion** etc. Light a ghee lamp and an incense stick.

Now chant *11 rounds* of below mantra with the rosary for next *7 days.*

Mantra

|| Hreem Om Namah Shivaaya ||

|| ह्रीं ॐ नमः शिवाय ||

Keep the remaining Sadhana articles at your worship place for at least one week after completing the Sadhana. Drop all the Sadhana articles in a river or pond after that.

Sadhana Articles ₹770

Indreshwara Shiva Sadhana

Skand Puran mentions that ***Vritra***, son of sage ***Twashta***, got engaged in a great penance to defeat Indra. Looking at his severe penance, Indra got frightened and killed him with his Vajra. However, this act of Indra earned him the sin of ***Brahmahatya***. As a result, wherever Indra went, people started drinking alcohol, followed immoral character, killing of human beings rose and all sorts of bad things started to occur in that area. It was all due to the curse of Brahmahatya. Indra travelled the entire universe to get some peace but couldn't get rid of this sin.

Left with no hope, he started to worship Lord Shiva. Indra started his penance at the banks of river Narmada by creating a Shivalinga. Finally, Lord Shiva was appeased and blessed Indra by saying, "***I will always reside in the Shivalinga created by you. Whoever will worship this Shivalinga will get relieved from all the sins.***"

When sins can be committed by Gods, then we are mere human beings. However, it is also a fact that until these sins are not neutralised, they continue to torment us in life. Our life remains troubled by these sins and we don't find peace even for a moment in life. Every human being, either knowingly or unknowingly would have committed some deeds which might have hurt someone's soul. Such acts are called as sins and till the time those souls exists, the sins remain attached to us. Due to this reason only, we have to face **diseases, failures, offenses, hurdles, tensions** etc. in life. All these challenges of life are created by those sins.

There are two ways to neutralize these sins – first is by pleasing the souls due to which we are facing these issues and other one is by means of Sadhanas, by penance just like Lord Indra did. The first step towards the field of Sadhana is to get rid of all the sins and **Indreshwara Shiva Sadhana** is one such method. A Sadhak can gain **success** in great Sadhanas only after getting rid of all the sins. This Sadhana is a favourable Sadhana and doesn't result into a glimpse of any Gods or Goddess. However, as a positive outcome, the Sadhak observes reduction in oppositions in life, his work gets completed without much hurdles, no new disease will be faced by him and thus the Sadhak can channel out his energy towards his goal.

Sadhana Procedure

One needs ***Divya Shiva Yantra, Indrayan*** *and* ***Indreshwar Mahadev rosary*** for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear white clothes and sit on a white mat facing north. Take a wooden plank and cover it with white cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and worship them with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of Guru Mantra and pray to Gurudev for **success** in Sadhana.

Now take some black sesame seeds and make **a triangle** over the plank. Place **Divya Shiva Yantra** at the centre. Worship the Yantra with **rice grains, flowers, vermillion** etc. Now make a mound of rice grains on the left side of the Yantra and place **Indrayan** over it. Next take some unbroken rice in your right hand and pray to get rid of all your sins. Rotate your right hand 3 times around your head and throw the rice grains in the south direction. Light a ghee lamp and an incense stick and chant ***8 rounds*** of below mantra for next ***5 days.***

Mantra

|| Om Hraum Hreem Namah Shivaaya ||

|| ऊँ हौं हीं नमः शिवाय ||

Keep the Sadhana articles at your worship place for at least one week. Bury all the Sadhana articles at some unfrequented place after that.

Sadhana Articles ₹730

Bhuteshwar Shiva Sadhana

Lord Shiva is also known as ***Bhuteshwara***. When Lord Shiva is termed as ***Bhutnath***, it means He is the Lord of the five essences, ***Panchbhut*** **(earth, water, fire, air and sky).** There are a lot of forms (like spirits) who lacks the earth and water essences and thus lacks a physical form. These spirits continue to wander around and **trouble human** beings to fulfil their **unsatisfied wishes**. Life of a person or a household infected by these **evil spirits gets troubled a lot.** The wishes, habits, behaviour of such an individual changes suddenly and many times become inhumane. It has even been seen that a body get possessed by hundreds of evil spirits who try to get their wishes fulfilled by the person. ***Lord Shiva's Bhuteshwara Sadhana can be a saviour under such a daunting situation.***

Many a times out of **jealousy,** it has even been seen that people perform **black magic** on someone and ruin the life of a good human being. As a result of this **inhumane behaviour,** life of such a person becomes **a hell** and even the happiest of families reach to a level of complete devastation. Definitely, such an act is antisocial, against human laws and criticisable. However, such an act can be neutralized by means of Tantra as Tantra is the mean by which we can make our life systematic and stable.

Sadhana Procedure

One needs ***Tantrokt Rudra Yantra, Kadkadha*** *and* ***Bhoot Daamar rosary*** for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear white clothes and sit on a white mat facing south. Encircle yourself with a lamp **black mark around your mat,** this circle is **a safety circle** around you. Take a wooden plank and cover it with white cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and worship them with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of Guru Mantra and pray to Gurudev for **success** in Sadhana.

Now take a steel plate and cover it completely with lamp black. Create a mound of rice grains and place **Tantrokt Rudra Yantra** over it. Create another mound of rice grains on the right side of the Yantra and place Kadkadha over it. Worship the yantra with rice grains, flowers, vermillion etc. Now chant ***Om Namah Shivaaya*** and offer ***Sindoor*** and ***oil*** over it. Next take some water in your right hand and pledge thus, "***I am performing this Sadhana of Lord Bhuteshwar, after getting the blessings of SadGurudev, for this particular person or for this household or for self to get rid of black magic or evil spirits.***" Sprinkle the water in all the **four directions.** Light a ghee lamp and an incense stick and chant ***7 rounds*** of the below mantra for next ***7 days.***

Mantra

|| Om Hreem Ayeim Namo Rudraaya
Bhutaan Traasaya Om Phat ||

|| ॐ ह्रीं ऐं नमो रुद्राय भूतान त्रासय ॐ फट् ||

On the seventh day after performing the mantra chanting, light a holy fire and make 108 offerings of **mustard seeds** chanting the above mantra (add the word ***Swaha*** at the last*)*. Drop all the Sadhana articles on the coming Monday in river or pond.

Sadhana Articles ₹ 750

Siddeshwar Shiva Sadhana

In the ancient times, both Gods and Demons used to live on the banks of Narmada. Initially they all lived in harmony, however the demons gradually become more powerful due to which an imbalance emerged between them, and they started to **fight.** Soon the demons overpowered the Gods and the Gods were forced to move out of the area. After losing the battle, the **Gods started worshiping Lord Shiva** by the means of offerings into holy fire. Soon, Lord Shiva emerged from the underworld in the form of Linga and told the Gods to worship this Linga to **fulfil their desires.**

The Gods started to worship the Lord in this form and soon became **more powerful** than the demons and defeated them. On losing the war, the demons deserted the place. From that day onwards, people started to worship **Lord Shiva** in the form of ***Omkareshwar***. Wishes of the devotees who worships Lord Shiva in this form gets fulfilled.

Sadhana Procedure

One needs *Sada Shiva Yantra, Siddheswara Shivaling* and *Shiva Siddhi rosary* for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear white clothes and sit on a white mat facing north. Take a wooden plank and cover it with white cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and worship them with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of Guru Mantra and pray to Gurudev for success in **Sadhana.**

Now take a plate and put some white flowers on it. Place the Yantra over the flower and make 5 small mounds of rice at the opposite end of Yantra and place one betelnut on each mound. These betelnuts are symbols of – *Markandeya, Avimukta, Kedar, Amareshwar and Onkareshwar Shivalinga.* Worship the Yantra and these Shivalingas with rice grains, flowers, vermillion etc. Now make a mound of rice grains in the front of the Yantra and place **Siddheswara Shivalinga** over it. Now take some water, flower petals and rice grains in your right hand and speak out your wish. Offer this mixture onto the *Siddheswara Shivalinga.* Light a ghee lamp and an incense stick and chant *8 rounds* of below mantra for next *10 days.*

Mantra

|| Om Shreem Manovanchitam Dehi Om Om Namah Shivaaya ||

|| ऊँ श्रीं मनोवांछितं देहि ऊँ ऊँ नमः शिवाय ||

Everyday after the mantra chanting, light **a holy fire** and make **108 offerings** of ghee chanting the above mantra. Take some ash and touch it to the *Siddheswara Shivalinga* and then spread it on your forehead. Keep the Sadhana articles at your worship place for at least one week after completing the Sadhana procedure on tenth day. Drop all the Sadhana articles into river or pond after that. *Sadhana Articles ₹770*

Brihaspatishwar Shiva Sadhana

Grandson of Brahma, Aangiras gained knowledge of all the **Shastras** and **Vedas** and got involved in a great penance to appease Lord Shiva. Lord Shiva finally got pleased upon Him and asked Him to ask for a boon. Aangiras replied that I am already blessed by your glimpse, I don't have any other wish. To this, Lord Shiva replied, *"You have done a great penance. You will be known as the Guru of Gods and will be worshiped amongst all the planets. You will be known as Brihaspati and will become a great orator and knowledgeable person. Whosoever will worship me via you, will also become knowledgeable and orator like you."*

As a result, Brihaspati became Guru of all the Gods and attained the greatest position in heaven. **Power of knowledge** is far more than the power of **wealth** and **physical power.** One who is knowledgeable, one who has the knowledge of the Vedas, one who is enlightened is worshiped by everyone, *Vidvaan Sarvatra Pujayet.* One who performs the Sadhana of Lord Shiva created by Brihaspati gets spiritual enlightenment and increases possibility of gaining nirvana. One can even get a glimpse of Lord Shiva if this Sadhana is performed with full devotion and dedication. One also gets the blessings of Guru as Brihaspati is a form of Guru only.

Sadhana Procedure

One needs *Tantrokt Rudra Yantra, Guru Gutika and Chaitanya rosary* for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear **white clothes** and sit on a white mat facing **north.** Take **a wooden plank** and cover it with white cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and worship them with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of **Guru Mantra** and pray to Gurudev for **success** in Sadhana.

Now take a plate and write Guru Mantra over it with vermillion. Put a flower at the centre of the plate and place **Tantrokt Rudra Yantra** over it. Net, put a flower on the right side of the Yantra and place **Guru Gutika** over and pray to **Lord Brihaspati** to come and sit on it. Light a ghee lamp and an incense stick and chant *7 rounds* of below mantra for next *8 days.*

Mantra

|| Om Shreem Namah Shivaaya Om Shreem ||

|| ऊँ श्रीं नमः शिवाय ऊँ श्रीं ||

Wear the **Guru Gutika** on the eighth day around your neck or in your finger after completing the **Sadhana.** Keep the Sadhana articles at your worship place for at least one week. Drop all the **Sadhana articles** into river or pond after that. *Sadhana Articles₹740*

Pushpadanteshwar Shiva Sadhana

King of **Gandharwa, Pushpadant,** used to **pluck flowers** from the garden of a king everyday to worship **Lord Shiva.** The king left no stone unturned to know who steals the flowers from his garden. After a lot of discussion, it was concluded that someone steals the flowers in an invisible form. To catch the thief, the king placed ***Shiva Nirmaalya*** in all the directions of his garden. The idea was the moment the invisible thief will cross over the Shiva Nirmaalya, he will lose his power of invisibility. The next day when Pushpadant crossed over Shiva Nirmaalya, he lost his powers and was captivated by the gardeners.

Pushpadant was sentenced to jail for his deeds by the king. Later, Pushpadant came to know that he crossed over Shiva Nirmaalya and felt grieved over his action. He started to worship **Lord Shiva** from his cell only. He established a Linga which was later known as ***Pushpadanteshwar Shivalinga***. He was able to appease Lord Shiva by worshiping this Linga and was thus set free by the king. This Sadhana of Pushpadant can be used to win over any obstacles in life. The obstacles can be in the form of hurdles in daughter's marriage, challenges faced in our daily life. One can also perform this Sadhana to gain **success** in **any work** or to get promotion or approval from any senior government official or get back stuck money etc.

Sadhana Procedure

One needs ***Tantrokt Rudra Yantra, 4 Pushpadant Rudraaksha and Pushpadant rosary*** for this Sadhana. Get up early and have a bath. Wear while clothes and sit on a white mat facing north. Take a wooden plank and cover it with white cloth. Place a picture of revered **Gurudev** and **Lord Shiva** and worship them with **vermillion, rice grains, flowers** etc. Then chant one round of **Guru Mantra** and pray to **Gurudev** for **success** in Sadhana.

Now take a plate and make a Swastik mark on it by fragrant flower's petals. Place **Tantrokt Rudra Yantra** over it and worship it with **vermillion, unbroken rice grains, flowers** etc. Place one ***Pushpadanta Rudraaksha*** on each side of the Yantra and worship them too. Take some water in your right hand and speak out your wish, let the water flow on to the ground. Light a ghee lamp and an incense stick and chant ***11 rounds*** of below mantra for next ***7 days.***

Mantra

|| Om Hreem Hraum Kaarya Siddhim Namah Shivaaya ||

|| ऊँ ह्रीं ह्रौं कार्य सिद्धिं नमः शिवाय ||

Keep the Sadhana articles at your **worship place** for at least one week. Drop all the Sadhana articles into river or pond after that.

Sadhana Articles ₹790

Uma Maheshwar Saubhagya Diksha

A Diksha must for every couple

Namah Shivaabhyaam NavdYauvanaabhyaam
ParasparAashrilashtdVapurdharaabhyaam,
NagendraKanydVrishaKetanaabhyaam
Namo Naham ShankarParvatibhyaam

Obeisance to Shiva and Uma, the eternally young pair who hold each other body in eternal embrace. I offer again my obeisance again and again to Shankar and Parvati the one with the bull and banner and the other, the beloved daughter of king of Himalayas (Himwan).

Once **Goddess Parvati** pleased **Lord Shiva** and Lord Shiva agreed to marry her, She made a wish. The wish was, **"I want you to come to my father and ask him for me in alms. Last time you sent Brahma to Daksha to do the same, and so this time, I want it to be you"**. As well known, the innocent Lord Shiva is unknown of the wordly ways. Thus, he had a unique method of asking to Mother Parvati's parents to let her marry him. Lord Shiva took the form of ***Sunartaka***, the Dancer. A dancer came with an intention to perform dance in the palace of **Himavan.** Since Himavan had gone to take bath in Ganga, Mena invited the dancer to perform the dance in the wide court room.

He had a blowing trumpet horn and a rattle drum in his hands. Draped in red *dhoti*, he danced elegantly in the room, attracting praises of all ministers and the queen Mena herself. He sang melodious songs and blew his horn merrily. Even Mother Parvati heard the song while resting in her room and was filled with ecstasy. She wondered why the voice sounded so familiar. She went into slumber by the smooth melodious voice of dancer. Shiva came in her dreams.

"Ask for anything. Don't hesitate. Your dance and song has amplified my happiness on the return of my daughter after a long penance" said Mena.

"I want to marry your daughter" said the dancer.

These words were a thunderclap to Mena. She screamed and scolded the dancer. But to her horror, the dancer was dancing and singing gleefully. When Himavan came back, he ordered his soldiers to throw out the dancer on knowing his demand. The soldiers caught him but were unable to move him by an inch. Himavan was agitated. He glared at the dancer and paced towards him, however, he stopped in the mid-way. To his astonishment, the dancer had transformed into four armed **Lord Vishnu** , wearing a garland made of fragrant flowers. Himavan was stunned. He vividly remembered that it was the same garland that he had offered to **Vishnu** while worshipping him after taking a bath in Ganga. He was deeply engrossed into his thoughts when he saw the dancer suddenly getting transformed into ***Lord Vishnu***?

In a second blink, the dancer had now transformed into four faced **Brahma**. Himavan was amazed with all this. He looked around and saw people behaving normally and thus concluded that he was the only one who was watching these transformations of the dancer. The dancer further changed into ***Indra, Agni, Soma,*** *etc*. And at last, he saw **Shiva** standing infront of himself. He was not alone. Mother Parvati was also standing besides him, both of them smiling at **Himavan.**

As Himavan was a learned man, he was able to conclude what was happening, the two forms of Shiva and Mother Parvati merged into one and dissolved into a formless entity, oozing divine waves around Himavan. A loud cracking sound brought Himavan to present. He paced back and sinked on his throne. Magically, the dancer had vanished. When Mena looked at him with **worried expression,** he waved at her and said **"Oh Mena. Worry not. He was Shiva himself, who had come here to ask for Goddess Parvati's hand in marriage. He was playing his divine sport with us".** Mena was relieved and much joyful on listening this. Together, the couple reached the temple of Shiva and offered him prayers.

Shiva smiled at Himawan and spoke **"As per Parvati's wish, I have gone and asked for her hand from her father".**

When Goddess Parvati came to know about it, she shook her head and said to herself, **"He still doesn't know the ways of culture, about how a bridegroom comes and asks for someone's daughter for marriage".** Thinking so, she smiled at Lord Shiva's innocent attempt to fulfil her wish of visiting Himavan to ask for her hand in marriage.

Lord Shiva & **Goddess Parvati** are said to have the perfect household life. They have what all one wishes in life – ***name, fame, love, children, grandchildren, harmony*** etc. However, if one looks closely, there is a lot of **trouble** in their home only. Lord Shiva's vehicle is **Nandi, an ox. Goddess Parvati's vehicle is Lion, an enemy to ox. Lord Ganesha's vehicle is mouse** and **Lord Shiva wears snakes** like garland, again enemy of one another. Then, Lord **Kartikeya's vehicle is a peacock which is an enemy of snakes.** Thus in a nutshell, their household life too has a lot of **quarrels** and **challenges,** yet they live a blessed life.

It is thus extremely important to get the grace of the duo for a blessed life. Only the person who is capable to doing something, can help others attain the same. If someone doesn't have water, can he or she offer it to someone? Thus, it only **Lord Shiva** and **Goddess Parvati** who can grant a blessed **married life**. We all want **good health, wealth, name, fame, prosperity and wellbeing of our partner.** Without any doubt, our counterpart brings completeness in our life. If any aspect of life is left unbalanced, the life gets completely destroyed. What's important is to live a contended life. It doesn't matter how long we lived in our life, what matters is how much we really lived in our life.

There might be no control on what sort of life partner we got in our life, it might be possible that your married life is going through the worst possible time and there are chances that **a bitter relationship** has built up in between the two of you. We all wish to live a life where there is **peace, harmony and happiness** in our life. A couple can have the best time if they happily live a major part of their life together. ***UmaMaheshwar Saubhagya Diksha*** is the means by which such a state becomes possible in life. On one hand where this **Diksha** which brings peace and harmony in between the couples, removes their quarrels and makes the life a blessed journey it also blesses the couple with **children, prosperity, name, fame and wealth in life.** Similar to Lord Shiva-Goddess Parvati's household, a couple is blessed with all the **positivity** in life like obedient children, love among the family members, peace, harmony and growth in all the aspects of life.

Gurudev will be granting this divine diksha on the day of Maha ShivRatri to all his loving disciples and Sadhaks.

Diksha ₹1500

PMYV

शिव-गौरी अखण्ड सुख वृद्धि दीक्षा

गृहस्थ जीवन का आदर्श स्वरूप **भगवान सदाशिव** और **माता पार्वती** ही हैं। इसलिये प्रत्येक गृहस्थ **शिव-गौरी** को अपना आराध्य मानता है। **युवतियां संस्कारित, सुन्दर वर** प्राप्ति के लिए भगवान शिव की ही आराधना करती हैं। वहीं **युवक सुन्दर, उच्च चरित्र, सुसंस्कार** से युक्त पत्नी के लिए भगवान शिव का **पूजन** और **अभिषेक** करते हैं। भगवान शिव की आराधना सभी युवक-युवती, गृहस्थ सबके लिये उपयोगी है।

शिव तत्व को **जाग्रत** करने के लिए सबसे अधिक महत्व **शिवरात्रि महोत्सव** का माना गया है। क्योंकि इन दिवसों पर अपने जीवन की **न्यूनताओं** को दूर कर **पूर्ण शिवमय** बनने की क्रिया प्रारम्भ होती है। **सौन्दर्य, सरलता, क्षमा, करूणा** और **ऐश्वर्य** के अधिपति भगवान शिव के समान कोई भी अन्य देव है ही नहीं। **योग** और **भोग** को एक साथ धारण करने का सामर्थ्य किसी भी अन्य देव में नहीं है। **अर्द्धनारीश्वर** स्वरूप ही **भगवान शिव** का यथार्थ परिचय है। **विष पान** कर लेने की घटना **भगवान शिव** की जन-जन के मानस में अपनी पहचान बनाये हुए है और वे ही तो हैं जो गुरू रूप में धरा पर **अवतीर्ण** होते हैं। **गुरू** साक्षात् **भगवान शिव** ही कहे गए हैं।

'शिवरात्रि' जो आनन्द की रात्रि है, जो मनुष्य के **अन्धकारमय** व **घोर कालिमा** युक्त जीवन को प्रकाशवान कर देने की रात्रि है, जो आत्मा को परमात्मा में लीन कर देने की रात्रि है, जो **पूर्णता की रात्रि** है, जो **श्रेष्ठता की रात्रि** है, जो **शिव-शक्ति के सामंजस्य की रात्रि** है, जो शिवत्व को प्राप्त कर लेने की रात्रि है... और ऐसे **शिवत्व** को प्राप्त कर लेना ही तो जीवन का **परम सौभाग्य** है, परम आनन्द है, जीवन की सर्वोच्चता है और यह सर्वोच्चता, यह आनन्द, यह सौभाग्य जीवन में प्राप्त हो सकता है **शिव शक्ति** को धारण करने से।

भगवान शिव का **गृहस्थ जीवन** प्रत्येक **कामनाओं से पूर्ण** है। पुत्र के रूप में **भगवान गणपति** और **कार्तिकेय** हैं। और पत्नी के रूप में सौभाग्य प्रदान करने वाली **देवी पार्वती**, स्थान भी पूर्ण शांति युक्त **हिमालय** है। जहां पूर्ण आनन्द के साथ **शिव-गौरी** परिवार विराजित होते हैं। गृहस्थ व्यक्तियों के लिए **शिव-गौरी** आदर्श स्वरूप हैं। भगवान शिव को ही सृष्टि का प्रथम पुरूष माना गया है। जिन्होंने अपने साथ हर समय **शक्ति** को संयुक्त रखा है। **भगवान शिव के बिना शक्ति अधूरी है और शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं।** और जहां **शिव-शक्ति** का मिलन होता है। वहां **जीवन है, आनन्द है, पूर्णता है।**

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर **नवीनता, आनन्द, परिवार, पुत्र, ऐश्वर्य, भयहीनता** की प्राप्ति होती है। इस सौभाग्य को अपने जीवन में उतारने के लिए इससे उच्चकोटि का दिवस कौन सा हो सकता है? जीवन के प्रत्येक क्षण को **पूर्ण रसमय, आनन्द युक्त, शौर्य, सम्मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य युक्त** बनाने की क्रिया प्रारम्भ इसी पावन पर्व पर होती है।

शिव गौरी अखण्ड सुख वृद्धि दीक्षा न्यौछावर ₹1750

दीक्षा हेतु **नूतन फोटो** व **न्यौछावर राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर राज.** 9950809666

न्यौछावर राशि Vineet Shrimali State Bank Of India UIT Branch Jodhpur

A/c No.: 40310531623 IFSC Code:SBIN0006490

नई दिल्ली E-1077 सरस्वती विहार,पीतमपुरा Mob. +91-90138-59760 / +91-87507-57042

सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।